https://www.studiestoday.com

अरिपन

कक्षा– X

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

INDIAN ARMY

Arms you FOR LIFE AND CAREER AS AN OFFICER

Visit us at www.joinindianarmy.nic.in

or call us (011) 26173215, 26175473, 26172861

Ser NO	Course	Vacancies Per Course	Age	Qualification	Appln to be received by	Training Academy	Duration of Training
1.	NDA	300	16½ - 19 Yrs	10+2 for Army 10+2 (PCM) for AF, Navy	10 Nov & 10 Apr (by UPSC)	NDA Pune	3 Yrs + 1 yr at IMA
2.	10+2 (TES) Tech Entry Scheme	85	16½ - 19½ Yrs	10+2 (PCM) (aggregate 70% and above)	30 Jun & 31 Oct	IMA Dehradun	5 Yrs
3.	IMA(DE)	250	19 - 24 Yrs	Graduation	May & Oct (by UPSC)	IMA Dehradun	1½ Yrs
4.	SSC (NT) (Men)	175	19 - 25 Yrs	Graduation	May & Oct (by UPSC)	OTA Chennai	49 Weeks
5.	SSC (NT) (Women) (including Non- tech Specialists and JAG entry)	As notified	19 - 25 Yrs for Graduates 21-27 Yrs for Post Graduate/ Specialists/ JAG	Graduation/ Post Graduation /Degree with Diploma/ BA LLB	Feb/Mar & Jul/ Aug (by UPSC)	OTA Chennai	49 Weeks
6.	NCC (SPL) (Men)	50	19 - 25 Yrs	Graduate 50% marks & NCC 'C' Certificate (min B Grade)	Oct/ Nov & Apr/ May	OTA Chennai	49 Weeks
	NCC (SPL) (Women)	As notified					
7.	JAG (Men)	As notified	21 - 27 Yrs	Graduate with LLB/ LLM with 55% marks	Apr / May	OTA Chennai	49 Weeks
8.	UES	60	19-25 Yrs (FY)18-24 Yrs (PFY)	BE/B Tech	31 Jul	IMA Dehradun	One Year
9.	TGC (Engineers)	As notified	20-27 Yrs	BE/ B Tech	Apr/ May & Oct/ Nov	IMA Dehradun	One Year
10.	TGC (AEC)	As notified	23-27 Yrs	MA/ M Sc. in 1st or 2nd Div	Apr/ May & Oct/ Nov	IMA Dehradun	One Year
11.	SSC (T) (Men)	50	20-27 Yrs	Engg Degree	Apr/ May & Oct/ Nov	OTA Chennai	49 Weeks
12.	SSC (T) (Women)	As notified	20-27 Yrs	Engg Degree	Feb/ Mar & Jul/ Aug	OTA Chennai	49 Weeks

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

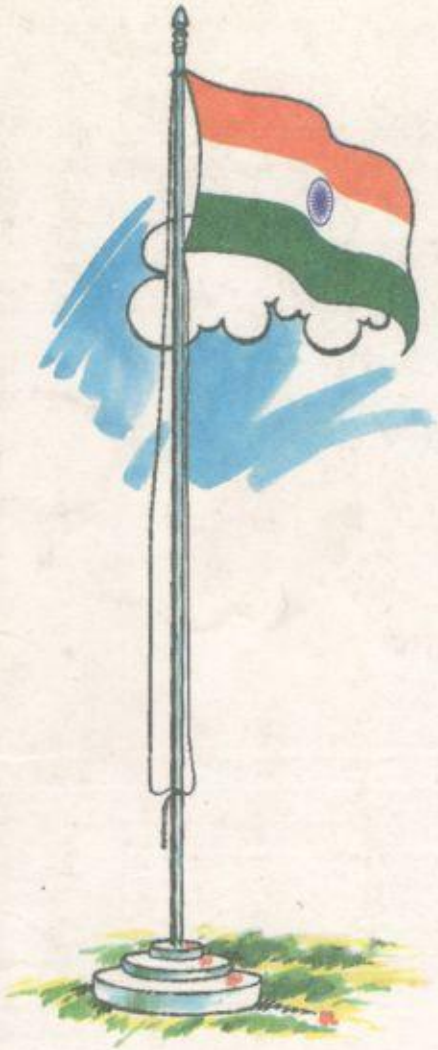

राष्ट्र-गान

जन-गण-मन-अधिनायक जय हे,
भारत - भाग्य - विधाता।
पंजाब सिंध गुजरात मराठा,
द्राविड़ - उत्कल - बंग,
विंध्य - हिमाचल - यमुना-गंगा,
उच्छल - जलधि - तरंग।
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष मागे
गाहे तव जय गाथा।
जन-गण-मंगलदायक जय हे,
भारत - भाग्य - विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय जय हे।

बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, बुद्ध मार्ग,पटना –1
BIHAR STATE TEXTBOOK PUBLISHING CORPORATION LTD. BUDH NARG, PATNA–1

आवरण मुद्रण : एच० एल० प्रिन्टर्स, जी० एम० रोड, पटना–4

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

वन्दे मातरम्

सुजलां सुफलां मलयजशीतलाम्
शस्य-श्यामलां मातरम्।
वन्दे मातरम्॥
शुभ्र-ज्योत्स्ना-पुलकित-यामिनीम्
फुल्ल-कुसुमित-द्रुमदल-शोभिनीम्
सुहासिनीं, सुमधुरभाषिणीम्
सुखदां, वरदां, मातरम्।
वन्दे मातरम्॥

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

अरिपन

दशम कक्षाक मैथिली भाषाक पाठ्य-पुस्तक

(एस० सी० ई० आर० टी०, बिहार, पटना द्वारा विकसित)

बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पटना

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

विषय-सूची

गद्य-खण्ड

1.	रामलोचनशरण – मिथिलाक सांस्कृतिक सीमा	3 – 9
2.	भोलालाल दास – राष्ट्रभाषा ओ मातृभाषा	10 – 14
3.	जयकान्त मिश्र – जवाहर : जेहन देखलहुँ जेहन पओलहुँ	15 – 25
4.	लिली रे – चन्द्रमुखी	26 – 35
5.	राज मोहन झा – भोजन	36 – 43
6.	दिनेश्वर लाल 'आनन्द' – पर्यावरण	44 – 50
7.	भाग्यनारायण झा– भारतीय संविधान निर्माता डॉ. बी. आर. अंबेदकर	51 – 58
8.	उमाकान्त – क्रैक	59 – 66
9.	रत्नेश्वर मिश्र– भारतीय स्वतंत्रता संग्राम एवं संविधानक रूपरेखा	67 – 76
10.	महेन्द्र मलंगिया – लेभराह अन्हारमे एक टा इजोत	77 – 97
11.	अशोक – बाबाक आत्मीयता	98 – 104
12.	विमारानी – भरि छीपा भात	105 – 110

पद्य-खण्ड

1.	विद्यापति – शिवगीत	113 – 118
2.	चन्दा झा – समय–साल	119 – 123
3.	काशीकान्त मिश्र 'मधुप'– भावि भरदुतिया विधान हे	124 – 128
4.	वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' – हऽ आब भेल वर्षा	129 – 133
5.	चन्द्रभानु सिंह – एड्सक कालनाग	134 – 137
6.	दीनानाथ पाठक 'बन्धु' – कर्मवीर	138 – 142
7.	रवीन्द्रनाथ ठाकुर – जय जवान : जय किसान	143 – 146
8.	विद्यानाथ झा 'विदित' – वन्दना	147 – 151
9.	उदयचन्द्र झा 'विनोद' – बच्चा	152 – 156
10.	बुद्धिनाथ मिश्र – रौदी अछि	157 – 161
11.	सुकान्त सोम – हाथ	162 – 166
12.	तारानन्द वियोगी – माँ	167 – 170

वाग्विलास-खण्ड

1.	प्रेमचन्द – बच्चा (हिन्दी कथा) अनुवाद – आशुतोष झा	173 – 180
2.	मनोजदास – तेसर जीव (उड़िया कथा) अनुवाद – उपेन्द्र दोषी	181 – 184

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

प्राक्कथन

मानव संसाधन विकास विभाग, बिहार सरकारक निर्णयानुसार अप्रील, 2009 सँ प्रथम चरणमे राज्यक कक्षा IX हेतु नवीन पाठ्यक्रमकेँ लागू कएल गेल अछि । एही क्रममे शैक्षिक सत्र 2010 कऽ लेल वर्ग I, III, VI एवं X कऽ सभ भाषायी आओर गैर भाषायी पुस्तकक पाठ्यक्रम लागू कएल जा रहल अछि। एहि नव पाठ्यक्रमक आलोकमे एन० सी० ई० आर० टी०, नई दिल्ली द्वारा विकसित वर्ग X कऽ गणित एवं विज्ञान तथा एस० सी० ई० आर० टी०, बिहार, पटना द्वारा विकसित वर्ग I, III, VI तथा X कऽ सभ पुस्तक बिहार राज्य पाठ्य-पुस्तक प्रकाशन निगम द्वारा आवरण चित्रण कऽ मुद्रित कएल जा रहल अछि ।

बिहार राज्यमे विद्यालयीय शिक्षाक गुणवत्तापूर्ण शिक्षाक लेल माननीय मुख्यमंत्री, बिहार, श्री नीतीश कुमार; मानव संसाधन विकास मंत्री, श्री हरिनारायण सिंह तथा मानव संसाधन विकास विभागक प्रधान सचिव, श्री अंजनी कुमार सिंहक मार्गदर्शनक प्रति हम हृदयसँ कृतज्ञ छी ।

एन० सी० ई० आर० टी०, नई दिल्ली तथा एस० सी० ई० आर० टी०, बिहार पटनाक निदेशकक हम आभारी छी, जे अपन सहयोग प्रदान कएल ।

श्री बसंत कुमार, शैक्षिक निबंधक, बिहार राज्य पाठ्य-पुस्तक प्रकाशन निगम लिमिटेडक सफल प्रयास एवं सहयोगक आभारी छी, जे दल-भावनाक अनुरूप कार्यकेँ संपादन कएलन्हि ।

बिहार राज्य पाठ्य-पुस्तक प्रकाशन निगम छात्र, अभिभावक, शिक्षक, शिक्षाविदक टिप्पणी एवं सुझावक स्वागत करत जाहिसँ बिहार राज्यक देशक शिक्षा जगतमे उच्चतम स्थान दिआबमे हमर प्रयास सहायक सिद्ध भऽ सकए ।

16/12/09

आशुतोष भा० व० से०
प्रबंध निदेशक
बिहार राज्य पाठ्य-पुस्तक प्रकाशन निगम लि०

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

विषयावतरण

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद् , बिहार द्वारा बिहारक विद्यालयीय शिक्षा हेतु निर्धारित नवीन पाठ्यक्रमक (2009–2011) जे शिक्षाशास्त्रीय आधार प्रस्तुत कयल गेल अछि तकरे अनुपालनकथिक प्रस्तुत पोथी । ई पोथी मैथिलीक दशम कक्षाक शिक्षार्थीकेँ ध्यानमे राखि तैयार भेल अछि।

नवीन पाठ्यक्रममे शिक्षाक अवधारणा बदलि गेल अछि। पहिने पाठ्यक्रम शिक्षक-केन्द्रित होइत छल, आब शिक्षार्थी-केन्द्रित होइत अछि। पहिने ज्ञानी बनाओल जाइत छल, आब ओ स्वतः ज्ञानी बनैत अछि। कहबाक माने ई जे पाठ्यग्रन्थ शिक्षार्थीक बुझबाक आ सोचबाक क्षमताक विकासक माध्यम होइत अछि। जँ शिक्षाक प्रति आकर्षण तेजीसँ बढ़ि रहल अछि तँ आवश्यक अछि जे शिक्षार्थीकेँ अंचल-विशेषक सांस्कृतिक आ सामाजिक-आर्थिक वातावरणमे समानताक भावना विकसित कयल जाय। रूढ़िमूलकता नहि, सहिष्णुता आ उदारताक पाठ पढ़बाक अवसर उपलब्ध कराओल जाय। तेँ पाठ्यग्रन्थ शिक्षार्थीक ज्ञानक सीमा नहि बनय, ज्ञानक विस्तारक बाट देखाबय, तकर प्रयोजन अछि।

प्रस्तुत पाठ्यग्रन्थ एही दृष्टिकोणसँ तैयार कयल गेल अछि। किशोरावस्थामे जतेक ज्ञान रहैत छैक, ताहिसँ बेसी ज्ञानक जिज्ञासा होइत छैक। विभिन्न प्रकारक व्यक्ति, वस्तु आ विषयकेँ जनबाक उत्कण्ठा एहि आयुक शिक्षार्थीक सामान्य प्रवृत्ति अछि। एहि गुणक विकास आ विस्तारकेँ ध्यानमे रखैत प्रस्तुत पाठ्यग्रन्थमे विभिन्न प्रकारक रचना देल गेल अछि।

एतदर्थ पोथी तीन खण्डमे अछि। पहिल खण्डमे गद्य अछि। एहिमे भाषा आ संस्कृति पर निबन्ध अछि। जवाहरलाल नेहरू, अम्बेदकर तथा यात्री– नागार्जुनक परिचय जानकारी अछि। चन्द्रमुखी, भोजन, क्रैक आ भरिछीपा भात–ई चारू कथा चारिटा परिवेशक आ ओहिमे मनुष्यक क्रिया-प्रतिक्रिया रेखांकित अछि। भारतीय स्वतंत्रता-संग्राम आ अपन देशक संविधानक विस्तृत ज्ञान प्राप्त करबाक लेल एकटा आधार–आलेख सेहो अछि। पर्यावरणक प्रति साकांक्ष रहबाक संकेत शिक्षार्थीकेँ एहि पोथीक माध्यमसँ भेटि सकैत अछि। एकटा छोटछीन नाट्य–रचना शिक्षालयक प्रचार-प्रसारमे सामान्य लोक सहभागिताकेँ देखार करैत अछि।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

विषयावतरण

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद् , बिहार द्वारा बिहारक विद्यालयीय शिक्षा हेतु निर्धारित नवीन पाठ्यक्रमक (2009–2011) जे शिक्षाशास्त्रीय आधार प्रस्तुत कयल गेल अछि तकरे अनुपालनकथिक प्रस्तुत पोथी । ई पोथी मैथिलीक दशम कक्षाक शिक्षार्थीकेँ ध्यानमे राखि तैयार भेल अछि।

नवीन पाठ्यक्रममे शिक्षाक अवधारणा बदलि गेल अछि। पहिने पाठ्यक्रम शिक्षक-केन्द्रित होइत छल, आब शिक्षार्थी-केन्द्रित होइत अछि। पहिने ज्ञानी बनाओल जाइत छल, आब ओ स्वतः ज्ञानी बनैत अछि। कहबाक माने ई जे पाठ्यग्रन्थ शिक्षार्थीक बुझबाक आ सोचबाक क्षमताक विकासक माध्यम होइत अछि। जँ शिक्षाक प्रति आकर्षण तेजीसँ बढ़ि रहल अछि तँ आवश्यक अछि जे शिक्षार्थीकेँ अंचल-विशेषक सांस्कृतिक आ सामाजिक-आर्थिक वातावरणमे समानताक भावना विकसित कयल जाय। रूढ़िमूलकता नहि, सहिष्णुता आ उदारताक पाठ पढ़बाक अवसर उपलब्ध कराओल जाय। तेँ पाठ्यग्रन्थ शिक्षार्थीक ज्ञानक सीमा नहि बनय, ज्ञानक विस्तारक बाट देखाबय, तकर प्रयोजन अछि।

प्रस्तुत पाठ्यग्रन्थ एही दृष्टिकोणसँ तैयार कयल गेल अछि। किशोरावस्थामे जतेक ज्ञान रहैत छैक, ताहिसँ बेसी ज्ञानक जिज्ञासा होइत छैक। विभिन्न प्रकारक व्यक्ति, वस्तु आ विषयकेँ जनबाक उत्कण्ठा एहि आयुक शिक्षार्थीक सामान्य प्रवृत्ति अछि। एहि गुणक विकास आ विस्तारकेँ ध्यानमे रखैत प्रस्तुत पाठ्यग्रन्थमे विभिन्न प्रकारक रचना देल गेल अछि।

एतदर्थ पोथी तीन खण्डमे अछि। पहिल खण्डमे गद्य अछि। एहिमे भाषा आ संस्कृति पर निबन्ध अछि। जवाहरलाल नेहरू, अम्बेदकर तथा यात्री– नागार्जुनक परिचय जानकारी अछि। चन्द्रमुखी, भोजन, क्रैक आ भरिछीपा भात–ई चारू कथा चारिटा परिवेशक आ ओहिमे मनुष्यक क्रिया-प्रतिक्रिया रेखांकित अछि। भारतीय स्वतंत्रता-संग्राम आ अपन देशक संविधानक विस्तृत ज्ञान प्राप्त करबाक लेल एकटा आधार–आलेख सेहो अछि। पर्यावरणक प्रति साकांक्ष रहबाक संकेत शिक्षार्थीकेँ एहि पोथीक माध्यमसँ भेटि सकैत अछि। एकटा छोटछीन नाट्य–रचना शिक्षालयक प्रचार-प्रसारमे सामान्य लोक सहभागिताकेँ देखार करैत अछि।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

प्राक्कथन

मानव संसाधन विकास विभाग, बिहार सरकारक निर्णयानुसार अप्रील, 2009 सँ प्रथम चरणमे राज्यक कक्षा IX हेतु नवीन पाठ्यक्रमकेँ लागू कएल गेल अछि । एही क्रममे शैक्षिक सत्र 2010 कऽ लेल वर्ग I, III, VI एवं X कऽ सभ भाषायी आओर गैर भाषायी पुस्तकक पाठ्यक्रम लागू कएल जा रहल अछि। एहि नव पाठ्यक्रमक आलोकमे एन० सी० ई० आर० टी०, नई दिल्ली द्वारा विकसित वर्ग X कऽ गणित एवं विज्ञान तथा एस० सी० ई० आर० टी०, बिहार, पटना द्वारा विकसित वर्ग I, III, VI तथा X कऽ सभ पुस्तक बिहार राज्य पाठ्य-पुस्तक प्रकाशन निगम द्वारा आवरण चित्रण कऽ मुद्रित कएल जा रहल अछि ।

बिहार राज्यमे विद्यालयीय शिक्षाक गुणवत्तापूर्ण शिक्षाक लेल माननीय मुख्यमंत्री, बिहार, श्री नीतीश कुमार; मानव संसाधन विकास मंत्री, श्री हरिनारायण सिंह तथा मानव संसाधन विकास विभागक प्रधान सचिव, श्री अंजनी कुमार सिंहक मार्गदर्शनक प्रति हम हृदयसँ कृतज्ञ छी ।

एन० सी० ई० आर० टी०, नई दिल्ली तथा एस० सी० ई० आर० टी०, बिहार पटनाक निदेशकक हम आभारी छी, जे अपन सहयोग प्रदान कएल ।

श्री बसंत कुमार, शैक्षिक निबंधक, बिहार राज्य पाठ्य-पुस्तक प्रकाशन निगम लिमिटेडक सफल प्रयास एवं सहयोगक आभारी छी, जे दल-भावनाक अनुरूप कार्यकेँ संपादन कएलन्हि ।

बिहार राज्य पाठ्य-पुस्तक प्रकाशन निगम छात्र, अभिभावक, शिक्षक, शिक्षाविदक टिप्पणी एवं सुझावक स्वागत करत जाहिसँ बिहार राज्यक देशक शिक्षा जगतमे उच्चतम स्थान दिआबमे हमर प्रयास सहायक सिद्ध भऽ सकए ।

16/12/09

आशुतोष भा० व० से०
प्रबंध निदेशक
बिहार राज्य पाठ्य-पुस्तक प्रकाशन निगम लि०

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

विषय-सूची

गद्य-खण्ड

1.	रामलोचनशरण – मिथिलाक सांस्कृतिक सीमा	3 – 9
2.	भोलालाल दास – राष्ट्रभाषा ओ मातृभाषा	10 – 14
3.	जयकान्त मिश्र – जवाहर : जेहन देखलहुँ जेहन पओलहुँ	15 – 25
4.	लिली रे – चन्द्रमुखी	26 – 35
5.	राज मोहन झा – भोजन	36 – 43
6.	दिनेश्वर लाल 'आनन्द' – पर्यावरण	44 – 50
7.	भाग्यनारायण झा– भारतीय संविधान निर्माता डॉ. बी. आर. अंबेदकर	51 – 58
8.	उमाकान्त – क्रैक	59 – 66
9.	रत्नेश्वर मिश्र– भारतीय स्वतंत्रता संग्राम एवं संविधानक रूपरेखा	67 – 76
10.	महेन्द्र मलंगिया – लेभराह अन्हारमे एक टा इजोत	77 – 97
11.	अशोक – बाबाक आत्मीयता	98 – 104
12.	विभारानी – भरि छीपा भात	105 – 110

पद्य-खण्ड

1.	विद्यापति – शिवगीत	113 – 118
2.	चन्दा झा – समय–साल	119 – 123
3.	काशीकान्त मिश्र 'मधुप'– भावि भरदुतिया विधान हे	124 – 128
4.	वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' – हऽ आब भेल वर्षा	129 – 133
5.	चन्द्रभानु सिंह – एड्सक कालनाग	134 – 137
6.	दीनानाथ पाठक 'बन्धु' – कर्मवीर	138 – 142
7.	रवीन्द्रनाथ ठाकुर – जय जवान : जय किसान	143 – 146
8.	विद्यानाथ झा 'विदित' – वन्दना	147 – 151
9.	उदयचन्द्र झा 'विनोद' – बच्चा	152 – 156
10.	बुद्धिनाथ मिश्र – रौदी अछि	157 – 161
11.	सुकान्त सोम – हाथ	162 – 166
12.	तारानन्द वियोगी – माँ	167 – 170

वाग्विलास-खण्ड

1.	प्रेमचन्द – बच्चा (हिन्दी कथा) अनुवाद – आशुतोष झा	173 – 180
2.	मनोजदास – तेसर जीव (उड़िया कथा) अनुवाद – उपेन्द्र दोषी	181 – 184

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

अरिपन

दशम कक्षाक मैथिली भाषाक पाठ्य-पुस्तक

(एस० सी० ई० आर० टी०, बिहार, पटना द्वारा विकसित)

बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पटना

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

गद्य-खण्ड

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

रामलोचनशरण

रामलोचनशरण मिथिलाक गौरव पुरुष छलाह। हिनक जन्म 1891 ई. मे भेल छलनि। हिनक पूर्वज जगदीशपुर (शाहाबाद) मे रहैत छलथिन। 1857 मे जे सिपाही विद्रोह भेल आ बाबू कुँवर सिंहक राज-काज पर ओकर जे प्रभाव पड़ल तकरे परिणाम छल जे रामलोचनशरणक पुरखा सभ मिथिला आबि बसि गेलथिन। मुजफ्फरपुर जिलाक राधाउर गामक निवासी बनि गेलाह। अपन कुशाग्र बुद्धिक कारण प्राथमिकेँ कक्षासँ शिक्षकक प्रियपात्र बनि गेलाह। कालान्तरमे स्कूल शिक्षक बनलाह। दरभंगाक नौर्थ ब्रुक स्कूलमे सेहो अध्यापन कयलनि। हिनक निधन भेलनि 14 मई 1971 ई. कऽ। अध्ययन आ लेखनक प्रवृत्ति हिनका प्रारम्भेसँ छलनि। अपन अध्यवसाय आ दृढ़ इच्छा-शक्तिक बल पर 1916 मे दरभंगामे पुस्तक भंडार नामक संस्था खोललनि । विद्यापति प्रेस खोललनि। बादमे पुस्तक भंडारक शाखा पटनामे सेहो खुजल। एतहु हिमालय प्रेस स्थापित भेल। मैथिलीमे 'मिथिला' आ हिन्दीमे 'बालक' सदृश पत्रिकाक प्रकाशनक श्रेय हिनकेँ छनि। बाल-साहित्यक विकास पर हिनक बेसी ध्यान छलनि। 'व्याकरण चन्द्रोदय' बालोपयोगी नामी पोथी अछि। लगभग एक सय पोथीक लेखन, ओ सम्पादन-प्रकाशन कयलनि । रायसाहबक उपाधि भेटलनि।

प्रस्तुत निबन्ध 'प्रवेशिका मैथिली साहित्य' सँ लेल गेल अछि जकर सम्पादक छथि प्रो. हरिमोहन झा आ प्रो. गंगापति सिंह। ई पुस्तक भंडार, लहेरियासराय (दरभंगा) सँ प्रकाशित अछि। एहि निबन्धमे आचार्य मिथिलाक सीमाक उल्लेख कयने छथि। विभिन्न शास्त्र पुराण ओ विद्वानक मतक उल्लेख करैत एकर भौगोलिक सीमाक निर्धारण कयने छथि। बौद्ध आ जैन धर्मक प्रभावक कारणेँ एकर पश्चिमी सीमा घसकिकेँ कनेक पूब आबि गेल आ पूर्वी सीमा कनेक आगू बढ़ि गेल। विभिन्न कारणेँ मिथिलाक सीमा वृहद् विष्णु पुराण आ एतेक धरि जे जार्ज ग्रियसर्नक समयक मिथिलाक चौहद्दीमे अन्तर आबि गेल अछि। एहि सब तथ्य ओ कारणक विवेचन रोचक ढंगसँ सोदाहरण एहि निबन्धमे प्रस्तुत अछि। आचार्य रामलोचनशरण मैथिली प्रेमी छलाह। मैथिल संस्कृतिक रक्षाक लेल सतत साकांक्ष रहलाह। तकरे प्रमाण अछि प्रस्तुत निबन्ध।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

मिथिलाक सांस्कृतिक सीमा

मिथिला अथवा तिरहुत पुरान जनपद थीक। राजर्षि निमिक पुत्र 'मिथि' ई नगरी बसौने छलाह जे आगू जा कऽ 'मिथिला-जनपद' प्रसिद्ध भेल।

वृहद्विष्णुपुराणमे सीमा-निर्देशक सङ्ग-सङ्ग ई कतबा नाम ओ चाकर अछि सेहो कहल गेल अछि-

कोशीसँ गण्डकी धरि मिथिलाक नमती चौबीस योजन अर्थात् छियानब्बे कोस एवं गङ्गासँ हिमालयक वन-पर्य्यन्त चकराइ सोलह योजन अर्थात् चौंसठि कोस अछि।

'आईने-अकबरीमे' 'तिरहुत सरकार' क सीमा इएह कहल गेल अछि (जेना -

"अज गङ्ग ता सङ्ग अज कोश ता भूस"

मिथिला-भाषा रामायणक रचयिता चन्दा झा सेहो लिखने छथि -

"गङ्गा बहथि जनिक दक्षिण दिश पूर्व कौशिकी धारा।
पश्चिम बहथि गण्डकी उत्तर हिमवत बल-विस्तारा।
कमला, त्रियुगा, अमृता, धेमुड़ा, बागमती, कृतसारा।
मध्य बहथि लक्ष्मणा प्रभृति से मिथिला विद्यागारा।"

सारांश ई, जे मिथिलाक उत्तरमे हिमालय, दक्षिणमे गङ्गा नदी, पूर्वमे कोशी एवं पश्चिममे गण्डकी नदी अछि।

एतबा दूरमे मिथिलाक संस्कृति - भाषा, धार्मिक आचार-विचारक संस्कृति - विद्यमान छल।

'लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इण्डिया' मे डाक्टर ग्रियर्सन मैथिली भाषा प्रचारक दृष्टिसँ मिथिलाक सीमा निदृष्ट कय गेलाह अछि। एहिसँ बोध होइत अछि जे मिथिलाक पश्चिमी सीमा अओर आगू मोतीहारिअहुसँ पूब बढ़ि आयल अछि।

आइ डाक्टर साहेब द्वारा निदृष्टि सीमहुमे अन्तर आबि गेल अछि।

हँ, तँ मिथिलाक संस्कृतिक उन्मूलन पश्चिमसँ किएक भेल एवं पूब किएक घसकि

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

गेल ? ई तँ सर्व्वमान्य अछि जे मिथिलाक संस्कृति वेद-सम्मत छल। मिथिलहिमे विदेह एवं लिच्छवीक दुइ राज्य छल-पूबमे विदेहक ओ पश्चिममे लिच्छवीक । ई दुहू राज्य गणतन्त्र रहय। लिच्छवीक राजधानी 'वैशाली' छल। 'वैशाली' रामायण-कालहुमे अत्यन्त प्रसिद्ध एवं सम्पन्न नगरी छल। आइ-काल्हि ओहि स्थानमे मुजफ्फरपुर जिलाक 'बसाढ़' अछि। एहि 'वैशाली' मे 'जैन' क अन्तिम तीर्थङ्कर महावीर स्वामी उत्पन्न भेल छलाह। भगवान् बुद्धो एहि ठाम प्रचार-कार्य कयलन्हि। ओ वैशालीसँ 'कुशीनगर' जाइत काल अपन महिमासँ 'बाया' नामक नदी प्रगट कयलन्हि। बौद्धलोकनिक प्रथम महती सभा वैशालिअहिमे भेल छल। गण्डकसँ पूब 'लौरिया' मे अशोकक लाट (स्तम्भ) आइयो विद्यमान अछि। एहिसँ नीक जकाँ बुझबामे अबैत अछि जे बौद्ध एवं जैन धर्म मिथिलाक पश्चिमीय भागमे प्रबल भय रहल छल। कहबाक प्रयोजन नहि जे ई दुहू धर्म ब्राह्मण धर्मक विरुद्ध अवैदिक छल। वैदिक संस्कृतिसँ एहि दुहू धर्मक संस्कृतियो अवश्ये भिन्न छल। एहीसँ हमरा विचारेँ बौद्ध एवं जैन संस्कृतिक कारण मिथिलाक संस्कृति ओकर पश्चिम भागमे लुप्तप्राय भय गेल। ई तँ स्पष्टे अछि जे मैथिल दार्शनिक लोकनि बौद्ध एवं जैनक प्रचार-कार्यकेँ अपन केन्द्रमे एको रत्ती नहि होमय देलथीन।

एहि विषय पर हम आनहु दृष्टिसँ विवेचना करय चाहैत छी। हमर तँ विचार अछि जे मिथिला देशीय पञ्चाङ्गक व्यवहार व्यापक रूपसँ जतय धरि होइत अछि ततय धरि मिथिलाक संस्कृति-क्षेत्र कहबाक चाही। किछु प्रवासी मैथिल लोकनि अपन प्रवासहुमे मिथिलाक पञ्चाङ्गसँ काज चलाय लेथि ई भिन्न विषय थीक। हमर अभिप्राय ओही क्षेत्रसँ अछि जतय मिथिलाक पञ्चाङ्ग सर्व-साधारणमे व्यापकरूपसँ प्रचलित अछि।

बेश तँ, चलू, पहिने मिथिलाक पश्चिम भाग पर विचार करी। गण्डकक तँ कथे कोन सम्पूर्ण चम्पारन जिला आइ मिथिलाक संस्कृतिसँ बाहर भऽ गेल अछि। अर्थात् ओतय मिथिला देशीय पञ्चाङ्ग प्रचार कनेको नहि अछि - बनारसी पञ्चाङ्गक प्रचार अछि। आब मुजफ्फरपुर जिलाके देखू। अँगरेजी सरकार जे सीमा तिरहुत-विभागक निश्चित कयने छथि ताहिमे मुजफ्फरपुर, दरभंगा, सारन एवं चम्पारनक जिला अछि। किन्तु ई विभाग ने डाक्टर साहेबकेँ नक्शहिसँ मिलैत अछि आ ने संस्कृतिक विवेचनहिसँ युक्तियुक्त बूझि पड़ैत अछि।

ई तँ पहिनहि कहि आयल छी जे बौद्ध लोकनि मुजफ्फरपुरक पश्चिमी भागमे 'वैशाली' केँ अपन केन्द्र बनौलन्हि जे बाया नदीअहुसँ पूब अछि। आब हम यदि मानचित्र मे -जतए 'बाया' नदी मुजफ्फरपुर जिलामे पैसैत अछि-ओही स्थानकेँ केन्द्र मानि कए

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

बागमतीसँ (जतए ई मुजफ्फपुर जिलाक सीमामे अबैत अछि) हाजीपुर धरि एक चापाकार रेखा मुजफ्फरपुर शहरक पश्चिमीय सीमाकेँ छूबैत खींची तँ स्पष्ट देखि पड़त जे हमर एहि कल्पित रेखाक पश्चिम क्षेत्रमे मिथिला देशीय पञ्चाङ्गक व्यापक प्रचार नहि अछि। एहि रेखाकेँ पूबसँ ई पञ्चाङ्ग चलैत अछि। अतएव सांस्कृतिक दृष्टिसँ मिथिलाक पश्चिमीय सीमा हमर इएह 'कल्पित रेखा' मानल जाए सकैत अछि।

आब पूब दिश आउ। कोशीअहुसँ पूब पूर्णिया जिलाकेँ पार करैत दिनाजपुर जिलाक पश्चिमीय भाग धरि इएह पञ्चाङ्ग चलैत अछि। एकरो कारण स्पष्टे अछि। बौद्धक संस्कृति 'बाया' सँ बहराए कए बागमतीक आगू नहि बढ़ए पौलक। कारण, मैथिल दार्शनिक लोकनि हुनक गतिकेँ अवरुद्ध कए देलन्हि। एहिसँ बौद्ध-संस्कृति दोसरहि बाटेँ बंगालमे प्रविष्टि भेल अर्थात् पटनासँ बहराए कए गङ्गाक दक्षिण मुँगेर होइत देवघरक पश्चिमसँ मयूराक्षीक पश्चिम तटसँ बंगालमे चल गेल अछि, गङ्गासँ दक्षिण एवं कोशीक पूबक ओ क्षेत्र, जतए मिथिलाक पञ्चाङ्ग प्रचलित अछि, मिथिलाक उपनिवेश थीक। एहि उपनिवेशमे सम्पूर्ण पूर्णिया जिला दिनाजपुरक किछु अंश एवं सन्थालपरगन्नाक बहुत पैघ भाग सम्मिलित भय जाइत अछि। एकर कारण अओर अछि। प्राचीने कालसँ बंगाली छात्रक सम्पर्क मिथिलासँ रहल अछि। अतएव ओम्हर मिथिलाक संस्कृति बहुत आगू धरि बढ़ि गेल अछि। एहि प्रकारेँ मिथिला पश्चिमसँ जतेक गमाए देलक अछि, पूबमे ओतेक पाबियो लेलक अछि।

ग्रियर्सन साहेब अपन नक्शामे पुरुलियाकेँ मैथिली-बङ्गला मिश्रित एवं चायबासाकेँ ओड़िया मिश्रित देखौलन्हि अछि। परन्तु ई नक्शा ओहि समयक थीक जखन बिहारक भाग्य बंगालक संगेँ निर्णीत होइत छल। ओहि समयमे पुरुलियामे बंगाली लोकनिक आबरजात होमए लागल एवं फलस्वरूप ओतएक अवशिष्ट मैथिल-संस्कृति लुप्त-प्राय भय गेल । हँ ओतहुका मैथिल लोकनिक घरसँ एम्हर मिथिलाक जे संसर्ग रहल अछि ओही कारणेँ मैथिली भाषा अपन विकृत रूपमे ओतए आइयो विद्यमान अछि। नहि तँ निष्प्राण तँ ओ कहिया ने भय गेल।

आई काल-चक्रक परिवर्त्तन भय गेल अछि। संसारक सभ केओ अपन-अपन संस्कृतिक रक्षामे लीन अछि। एहेन परिस्थितिमे मिथिलहुकेँ चुप रहब उचित नहि। ई काज केवल मिथिलहिक नहि थीक। वर्त्तमान सरकार सभक संस्कृति-रक्षाक प्रयत्न कय रहल अछि। आशा अछि, एहि सुयोगमे आनक संग-संग मिथिलहुकेँ अपन संस्कृतिक रक्षा करबाक अवसर प्राप्त होएत एवं ओ ओहि कार्यमे सफलता प्राप्त करत।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

शब्दार्थ

जनपद - क्षेत्र
विद्यमान - मौजूद, उपस्थित
उन्मूलन - जड़िसँ नाश
वेद-सम्मत - वेदसँ स्वीकृत, मान्य
महती - विशाल
विवेचन - व्याख्या
पञ्चाङ्ग - पाँच अंगवला, पतड़ा, ज्योतिष संबंधी वार्षिक विवरणिका
प्रवास - परदेशक निवास
युक्तियुक्त - तर्कसंगत
उपनिवेश - दोसर देशसँ आयल लोकक बस्ती, कॉलोनी,
अवशिष्ट - बाँचल
अबरजात - आवाजाही

प्रश्न ओ अभ्यास

1. 1. मिथिलाकेँ के बसौने छलाह ?

2. वृहद् विष्णु पुराणक अनुसार मिथिलाक लम्बाइ चौड़ाइ लिखू।

3. चन्दा झाक अनुसार मिथिलाक चौहद्दी लिखू

4. मिथिलाक सीमाक पश्चिममे परिवर्त्तनक कारणक उल्लेख करू।

5. लेखकक अनुसार मिथिलाक सीमा कतय धरि मानल जा सकैछ?

6. लेखकक अनुसार मिथिलाक पूर्वी सीमा कतय धरि अछि ?

7. ग्रियर्सन साहेबक अनुसार मिथिलाक पूर्वी सीमा कतय धरि अछि ?

2. निम्नलिखितमे सँ सही विकल्प चयन करू -

(क) कोशीसँ गण्डकी धरि मिथिलाक नमती अछि-

(क) बीस योजन (ख) चौबीस योजन

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

(ग) पचास योजन (घ) चालीस योजन

(ख) लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडियाक के लेखक छथि -

(क) जयकान्त मिश्र (ख) राधाकृष्ण चौधरी

(ग) डा० ग्रियर्सन (घ) डा० अब्राहम लिंकन

3. निम्नलिखितकेँ रिक्त स्थानपूर्त्ति करू -

(क) मिथिलाक चौड़ाइ ----- कोस अछि।

(ख) मिथिलहिमे विदेह एवं ------ दू गणराज्य छल।

4. सप्रसंग व्याख्या करू -

(क) संसारक सभ केओ अपन-अपन संस्कृतिक रक्षामे लीन अछि। एहन परिस्थितिमे मिथिलहुकेँ चुप रहब उचित नहि। ई काज केवल मिथिलहिक नहि थीक। वर्त्तमान सरकार सभक संस्कृति रक्षाक यत्न कए रहल अछि। आशा अछि, एहि सुयोगमे आनक संग-संग मिथिलहुकेँ अपन संस्कृतिक रक्षा करबाक अवसर प्राप्त होएत एवं ओ ओहि कार्यमे सफलता प्राप्त करत ।

(ख) प्राचीने कालसँ बंगाली छात्रक सम्पर्क मिथिलासँ रहल अछि। अतएव ओम्हर मिथिलाक संस्कृति बहुत आगू धरि बढ़ि गेल अछि। एहि प्रकारेँ मिथिला पश्चिमसँ जतेक गमाए देलक अछि, पूबमे ओतेक पाबियो लेलक अछि।

5. लघूत्तरीय प्रश्न -

(i) मिथि के छलाह ?

(ii) आईने अकबरीक रचयिता के छलाह ?

(iii) मिथिलाक पश्चिममे कोन नदी अछि ?

(iv) जैनधर्मक प्रवर्त्तक के छलाह ?

गतिविधि-

(i) मिथिलाक सीमांक चित्रांकन करू ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

(ii) मिथिलाक सांस्कृतिक विशेषता पर एक निबन्ध लिखू ।

(ii) मिथिला ओ बंगालक साहित्यिक ओ सांस्कृतिक सम्बन्ध पर अपन विचार प्रकट करू।

निर्देश -

(i) शिक्षकसँ अपेक्षा जे ओ छात्रकेँ मिथिलाक सीमासँ परिचय करावथि।

(ii) रामलोचनशरणक व्यक्तित्वसँ छात्र लोकनिकेँ अवगत करावथि।

(iii) मिथिलाक सांस्कृतिक इतिहाससँ छात्र लोकनिकेँ परिचित करावथि।

---

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

भोलालाल दास

मातृभाषानुरागी भोला लाल दासक जन्म दरभंगा जिलाक कसरौर ग्राममे सन् 1897 ई० मे भेल छलनि। हिनक पिताक नाम चोआलाल आ माताक नाम सकलवती छल। हिनक प्राथमिक शिक्षा मातृक महिषीमे (सहरसा) भेलनि। मैट्रिक परीक्षा प्रथम श्रेणीमे उत्तीर्ण भेलाक बाद ओ टी.एन. बी. कॉलेज, भागलपुरसँ बी. ए. आ इलाहाबाद लॉ कॉलेजसँ एल. एल. बी. कयलनि। सन् 1925 ई० सँ लहेरियासराय (दरभंगामे) ओकालति आरम्भ कयलनि। हिनक निधन 1977 मे भेलनि।

हिनक प्रमुख रचना-व्याकरण प्रबोध, सुबोध व्याकरण, सरल व्याकरण, गद्य कुसुमाञ्जलि (सम्पादन) 'मिथिला' संग सम्पादन भारती (मासिक पत्रिका, सम्पादन) क अतिरिक्त विभिन्न पत्र पत्रिकामे प्रकाशित अनेकानेक निबन्ध अछि।

मातृभाषा मैथिलीक असीम सेवाक लेल हुनका सम्मानित कयल गेलनि जाहिमे उल्लेखनीय अछि- 'मिथिला साहित्य संस्कृति संस्थान' दरभंगासँ विद्यारत्न, 'पटनाक चित्रगुप्त सभा' द्वारा ' मिथिला सरोज' , 'संकल्पलोक ' लहेरियासराय (दरभंगा) द्वारा मिथिला विभूति, बिहार सरकारक राष्ट्रभाषा परिषद् द्वारा ताम्रपत्र ।

प्रस्तुत निबन्धमे लेखक राष्ट्रभाषा ओ मातृभाषाक महत्त्वक वर्णन कयने छथि। मातृभाषाक बुन्दसँ राष्ट्रभाषाक सिन्धुकेँ भरल जाइत अछि। भारत एक विशाल देश अछि जाहिमे भाषा, धर्म, जाति, सम्प्रदाय, वेश-भूषा, खान-पान, रूप-रंग आदिक विभिन्नता अछि। दक्षिण भारतीय तेलगू, तमिल, कन्नड़ ओ मलयालम बजैत अछि तँ उत्तर भारतमे गुजराती, मराठी, बंगाली, उड़िया, मैथिली ओ भोजपुरी बाजल जाइत अछि। तेँ एक एहन सर्वमान्य भाषाक आवश्यकता अछि जे सम्पूर्ण राष्ट्रकेँ एक सूत्रमे बान्हय ताहि लेल राष्ट्रपिता महात्मागांधी द्वारा हिन्दीकेँ प्रस्ताव कयल गेल आ समस्त देशमे एकरा स्वीकृति भेटलैक। मुदा नेनाकेँ त्रिभाषाफर्मूलाक अनुसार प्राथमिक शिक्षा अपन मातृभाषामे प्राप्त करब आवश्यक, जाहिसँ ओकर आन्तरिक प्रतिभाक समुचित विकास भऽ सकय। वस्तुतः मातृभाषा ओ राष्ट्रभाषा एक दोसराक पूरक अछि।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

राष्ट्रभाषा ओ मातृभाषा

इंगलैंड, फ्रांस, जर्मनी आदि छोट-छोट देश छैक तँ ओहि सभक मातृभाषा अंगरेजी, फ्रेंच, जर्मन आदि ओकरा सभक राजभाषा अथवा राष्ट्रभाषा सेहो छैक। ओहि सभ ठाम राष्ट्रभाषा आ मातृभाषाक कोनो भेद वा प्रश्न नहि छैक। मुदा भारतवर्ष एक विशाल राष्ट्र अछि। ई एकटा महादेशे अछि जाहिमे पंजाब, राजस्थान, उत्तरप्रदेश, बिहार, बंगाल, महाराष्ट्र, मद्रास, केरल आदि भिन्न-भिन्न राज्य इंगलैंड आदि देशक तुलनामे अछि। एहि सब राज्यकेँ मिलाय विशाल भारतीय संघक एक पैघ राष्ट्र संगठित भेल अछि। एहिमे केवल भाषेटा नहि, धर्म, सम्प्रदाय, जाति, लिपि इत्यादिहुक भिन्नता छैक। भाषो सबमे दक्षिण भारतक तेलगू, मलयालम, कन्नड़ आ' उत्तर भारतक मराठी, गुजराती, बंगला, मैथिली, हिन्दी आदि बड़ उन्नत आ' प्रशस्त भाषा अछि। तँ प्रश्न उठैछ जे समस्त भारतीय राष्ट्रक भाषा की हो ?

ई तँ निश्चित अछि जे संसारक प्रत्येक स्वतंत्र राष्ट्रकेँ अपन-अपन स्वतंत्र राष्ट्रभाषा छैक। भारतो राष्ट्रकेँ एकटा कोनो राष्ट्रभाषा अवश्य चाही जकरा द्वारा उत्तरसँ दक्षिण एवं पूर्वसँ पश्चिम धरिक सब राज्य परस्पर बाजब-भूकब, लिखा-पढ़ी आ' राजकाज चलाए सकथि। ओना तँ एहि सब राज्यक प्रत्येक मातृभाषा भारतीय राष्ट्रक भाषा थिक मुदा कोनो एक भाषाकेँ यावत् समस्त राष्ट्र सम्पूर्ण राष्ट्रक हेतु भारतीय राष्ट्रभाषा स्वीकार नहि करत तावत् ने अपने काज एकतापूर्वक चलत आ' ने संसारक आने देशसँ समस्त भारतीय राष्ट्रक सार्वजनिक रूपेँ आदान-प्रदान भऽ सकत। विशेषत: शिक्षा क्षेत्रमे भारतीयताक भावना नहि आबि सकत।

1947 ई० पर्यन्त भारतवर्ष पराधीन छल। अंगरेज एकर अधिपति छलाह। ओ अपना अंगरेजी भाषाकेँ भारतक राजभाषा बनौलनि आ शिक्षोक माध्यम मुख्यत: अंगरेजिएकेँ रखलनि। मुदा स्वतंत्रताक आन्दोलन-क्रममे नेता लोकनि सात समुद्र पारक एहि विदेशी भाषाकेँ ने राजभाषा, ने राष्ट्रभाषा, ने लोक शिक्षाक माध्यमक लेल उपयुक्त बुझलनि। महात्मा गांधी एतुक्के कोनो भाषाकेँ राष्ट्रभाषा बनेबाक आवश्यकता बुझलनि । यद्यपि हुनक अपन मातृभाषा गुजराती छलनि आ' गुजरातीकेँ अपन लिपि तथा साहित्य छैक तथापि जखन ओ राष्ट्रीय स्वतंत्रताक आन्दोलनमे काश्मीरसँ कन्याकुमारी धरि आ' अटकसँ कटक धरिक प्राय: सब स्थानक भ्रमण करय लगलाह तँ स्पष्ट देखलनि जे हिन्दीए एकटा एहन भाषा अछि जकरा द्वारा

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

ओ अपन विचारक प्रचार लोकमे अधिक ठाम कऽ सकै छलाह। शिक्षाक पद्धतियोमे हुनका केवल किरानी वा सरकारी अफसरक सेना तैयार करबाक नहि छलनि, प्रत्युत सब क्षेत्रमे वास्तविक राष्ट्रीयताक भावना उत्पन्न करबाक छलनि तेँ राष्ट्रपति डा० जाकिर हुसेनक अध्यक्षतामे एक समितिक निर्माण करौलन्हि आ तकरा द्वारा भाषाक विषयमे त्रिभाषा सिद्धान्तक योजना स्वीकृत भेल। एकरे नाम पड़ल वर्द्धा योजना।

त्रिभाषा सिद्धान्तक अर्थ अछि मातृभाषा, राष्ट्रभाषा आ विश्व भाषाक अनिवार्यता एवं एहि तीनूक सामंजस्य वा क्षेत्र निर्णय। प्रत्येक राज्य अपना-अपना मातृभाषामे अपन-अपन खास सरकारी काज वा शिक्षाक विकास करौ मुदा समस्त राष्ट्रक काज वा भिन्न-भिन्न राज्यक पारस्परिक काज एक राष्ट्रभाषा हिन्दीक द्वारा हो। तदर्थ शिक्षापद्धतिमे अंगरेजीक स्थान हिन्दीकेँ देल जाए। एकर अतिरिक्त अन्तरराष्ट्रीय काजक हेतु अर्थात् संसारक भिन्न-भिन्न राष्ट्रसँ अबरजात वा सम्बन्ध सरोकार रखबाक लेल अंगरेजी वा आने कोनो व्यापक भाषा नवीन वा प्राचीन सेहो विद्यार्थीकेँ अपना-अपना रुचि तथा आवश्यकताक अनुसार पढ़बाक सुविधा हो। अंगरेजी राष्ट्रभाषा जनु रहौ।

जखन 1947 ई० मे देश स्वतंत्र भेल आ तदर्थ सभक सम्मतिसँ संविधान बनल तँ ई लिखि देल गेल जे हिन्दी क्रमशः अँगरेजीक स्थान लै लियै आ' 1965 ई० सँ एकमात्र हिन्दिये समस्त भारतीय संघक राष्ट्रभाषा भऽ जायत। मुदा ताहिसँ पूर्वहि कतोक संशोधन संविधानमे भेल जाहिसँ हिन्दीकेँ ओ स्वीकृत स्थान नहि भेटलैक अछि। सब मातृभाषाकेँ आब राष्ट्रभाषा कहल जाइछ।

त्रिभाषा सिद्धान्त एतबा स्पष्ट कयने अछि आ' एहिसँ उत्तम कोनो समाधानो नहि देखि पड़ैछ जे निम्नवर्गसँ किछु दूर ऊपर धरि शिक्षाक माध्यम विद्यार्थी वर्गक मातृभाषा हो यदि एहिमे किछु साहित्य पौल जाए आ' साहित्य-सर्जनाक शक्तियो वर्त्तमान रहैक।

शब्दार्थ

अधिपति - मालिक

परिवर्धित - विकसित

किंचित - थोड़

प्रशस्त - ख्यात

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

त्रिभाषा - तीन भाषा

दुरन्त - कठिन

निधि - खजाना

समस्त - सम्पूर्ण

प्रश्न ओ अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. निम्नलिखितमे सँ सही विकल्पक चुनाव करू :

(i) अनेकतामे एकता कोन देशमे अछि -

(क) फ्रांस (ख) बंगला देश

(ग) भारत (घ) चीन

(ii) भारत स्वतंत्र भेल -

(क) 1954 (ख) 1949

(ग) 1960 (घ) 1947

2. निम्नलिखित रिक्त स्थानक पूर्त्ति करू :

(क) मैथिली मिथिलामे लोकक ..... भाषा अछि।

(ख) सरकार बुझैत अछि जे हिन्दी मैथिलीक भाषा आ .....मात्रक अन्तर अछि।

3. निम्नलिखित प्रश्नमे शुद्ध-अशुद्धकेँ देखाउ :

(क) राष्ट्रपति डा० जाकिर हुसेनक अध्यक्षतामे एक समितिक निर्माण कयल गेल आ तकरा द्वारा भाषाक विषयमे त्रिभाषा सिद्धान्तक योजना स्वीकृत भेल। एकरे नाम पड़ल वर्द्धा योजना।

(ख) गांधीजीक मातृभाषा हिन्दी छलनि।

4. सप्रसंग व्याख्या करू :

(क) ओना तँ एहि सब राज्यक प्रत्येक मातृभाषा भारतीय राष्ट्रक भाषा थिक मुदा कोनो एक भाषाकेँ यावत् समस्त राष्ट्र सम्पूर्ण राष्ट्रक हेतु भारतीय राष्ट्रभाषा स्वीकार नहि करत तावत् ने अपने काज एकतापूर्वक चलत आ' ने संसारक आने

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

देशसँ समस्त भारतीय राष्ट्रक सार्वजनिक रूपेँ आदान-प्रदान भऽ सकत। विशेषत: शिक्षा क्षेत्रमे भारतीयताक भावना नहि आबि सकत।

(ख) त्रिभाषा सिद्धान्त एतबा स्पष्ट कयने अछि आ' एहिसँ उत्तम कोनो समाधानो नहि देखि पड़ैछ जे निम्नवर्गसँ किछु दूर ऊपर धरि शिक्षाक माध्यम विद्यार्थी वर्गक मातृभाषा हो, यदि एहिमे किछु साहित्य पौल जाए आ' साहित्य सर्जनाक शक्तियो वर्त्तमान रहैक।

5. लघूत्तरीय प्रश्न :

(i) तेलगू, मलयालम ओ कन्नर कोन-कोन राज्यक लोकक मातृभाषा अछि।

(i) वर्द्धा योजना की थिक ?

6. दीर्घोत्तरीय प्रश्न :

(i) मातृभाषाक सम्बन्धमे महात्मा गाँधीक विचार स्पष्ट करू।

(ii) त्रिभाषा सिद्धान्तक अर्थ स्पष्ट करू।

(iii) हिन्दीक समस्या पर लेखकक विचार स्पष्ट करू।

(iv) मैथिलीक भविष्य पर लेखकक विचार स्पष्ट करू।

गतिविधि :

(i) (क) निम्नलिखित शब्दसँ विशेषण बनाउ:

अन्तर, जाति, राष्ट्र, शिक्षा, सिद्धान्त, विकास, परस्पर, भारत, भाषा, साहित्य।

(ii) छात्र लोकनि भारतक विभिन्न राज्यक मातृभाषाक ज्ञान प्राप्त करथि।

निर्देश :

(i) शिक्षक छात्रकेँ मातृभाषाक महत्त्व बताबथि।

(ii) छात्रकेँ भोलालाल दासक मैथिली सेवाक विभिन्न आयामसँ परिचित कराबथि।

---

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

जयकान्त मिश्र

डॉ. जयकान्त मिश्रक जन्म मधुबनी जिलाक गजहारा ग्राममे 20 नवम्बर 1922 ई. मे भेल। हिनक पितामह म. म. जयदेव मिश्र एवं पिता म. म. उमेश मिश्र छलथिन। 1943 ई. मे ओ प्रयाग विश्वविद्यालयसँ अंग्रेजीमे एम. ए. कऽ 1944 ई. मे ओहि विश्वविद्यालयमे अंग्रेजीक व्याख्याता पद पर नियुक्त भेलाह, जतयसँ ओ विश्वविद्यालय प्राचार्य एवं अंग्रेजीक विभागाध्यक्ष पदसँ सेवा निवृत भेलाह।

'ए हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर' शोध-प्रबन्ध पर हिनका पी-एच. डी. क उपाधि प्रदान कयल गेल। तदुपरान्त साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली द्वारा हिनका भाषा सम्मान भेटल।

मैथिली आन्दोलनक अग्रणी डॉ. जयकान्त मिश्रक मौलिक कृति अछि- ए हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर (दू भाग), वृहत् मैथिली शब्द कोष (दू खण्ड), तिरहुता ककहरा, मैथिलीमे प्राथमिक शिक्षा, ओ ए इन्ट्रोडक्शन टू फॉक लिटरेचर (दू खण्ड)। हिनक द्वारा सम्पादित कृतिक नाम अछि - विद्यापतिक गोरक्ष विजय, किरतनिया नाटक, ज्योतिरीश्वरकृत मैथिली धूर्त्तसमागम, लाल कविक गौरी स्वयंवर, नन्दीपतिक श्रीकृष्ण केलिमाला, शिवदत्तक गौरीपरिणय आदि।

मिथिला, मिथिलावासी, मैथिलीक जीवन भरि उत्थानक आकांक्षी डॉ. जयकान्त मिश्रक निधन 3 फरवरी 2009 कऽ भऽ गेलनि। मैथिली भाषा आन्दोलनक इतिहासमे हिनक स्थान सर्वोपरि अछि। प्राथमिक शिक्षामे मैथिलीकेँ स्थान दिअयबाक विन्दु हो अथवा साहित्य अकादेमीमे मैथिलीक स्वीकृतिक प्रश्न - जयकान्त मिश्रक योगदानक उल्लेख अपरिहार्य अछि। मैथिलीक सेनानी, मैथिली साहित्यकेँ अखिल भारतीय परिचिति देनिहार जयकान्त मिश्र मिथिला-मैथिलीक अविस्मरणीय अंग छथि। ओ आइयो प्रेरणास्रोत छथि, सभ दिन रहताह। हिनक भूमिका साहित्य अकादेमीक प्रतिनिधि रूपमे महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रस्तुत निबन्ध 'भाखा' पत्रिकासँ लेल गेल अछि। एहि निबन्धमे लेखक पं. जवाहर लाल नेहरूक महत्ता ओ विद्वत्ताक उल्लेख कयने छथि। एं० नेहरू पूजनीय छलाह अपन गुण वैशिष्ट्यक कारणेँ । हिनक चरित्रमे उदारता एवं शालीनता भरल छल। साहित्य अकादेमीमे मैथिलीक समावेशक प्रसंग लेखककेँ अनेक बेर पं. नेहरूसँ भेट करबाक अवसर भेटलनि आ प्रत्येक बेर हिनक सदाशयता ओ व्यवहार देखि ई आश्चर्य चकित भेलाह।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

जवाहर : जेहन देखलहुँ जेहन पओलहुँ

आब हमहूँ बूढ़ भेल जाइत छी। बहुतो अनुभव भेल, बहुतो व्यक्तिकेँ देखल, बहुत व्यक्तिक सम्बन्धमे सुनल। ताहि सभमे सभसँ अधिक प्रभाव ओ प्रेरणा देनिहार व्यक्तित्व, जनिकासँ मिथिला ओ मैथिलीक हेतु कार्य करबाक क्रममे सम्पर्क भेल, पाओल जवाहर लाल नेहरूमे।

ओना प्रयागमे हमहूँ रहैत छलहुँ, प्रयागेमे ओहो रहैत छलाह। नेनहिसँ हुनकर कीर्त्ति सुनैत-देखैत छलहुँ। सभसँ पहिने जे हुनका देखल से मोन पड़ैत अछि। इलाहाबाद यूनिवर्सिटीक लार्ज लेक्चर थियेटरमे एकटा छात्र यूनियनक तत्त्वावधानमे कोनो विषयक परिसंवाद गोष्ठीमे। इतिहासक प्रसिद्ध विद्वान् डाक्टर ईश्वरी प्रसाद बाजिकेँ हटल रहथि, तखनहि ओ मंच पर कुदिएकेँ ठाढ़ भेलाह । डॉ. ईश्वरी प्रसादक उक्तिकेँ जे ओ झाड़ि कए प्रतिवाद कएलथिन्ह से हमरा आइयो ओहिना स्मरण होइत अछि - "ई सभ पुरानपंथी विचार थिकनि- एतेक आगू संसार चल गेल अछि - तथापि प्रोफेसर लोकनि आधुनिकता एवं प्रौढ़ताकेँ नहि पबैत छथि। धिक्कार छनि जे ओ सभ आइओ कालिह एहने विचार पोसने छथि ..... इत्यादि।" विषय की छलैक, से सभ नहि स्मरण अछि मुदा हुनक तेजी ओ मुहफट वाणी नहि बिसरैत अछि। भाषण ओ अंग्रेजीएमे देने छलाह। दोसर बेर ओ इलाहाबाद विश्वविद्यालयक प्रायः सत्तरिम वर्षक उत्सव समारोहमे तथा ओकर हीरक वा स्वर्ण जयंतीक अवसर पर विशेष रूपेँ मोन पड़ैत छथि- ओहुँ अंग्रेजीएमे बजलाह। हमरा हुनक वाणी संगीतमय कोनो कविक वाणी सन बुझाएल- गद्यमे काव्यक सृष्टि करैत ओ प्राचीन भारतक उठैत ओ चिकरैत नवीन युगमे पदार्पणक कथा कहि रहल छलाह- हुनका वाणीमे आवेश छल, किछु संगीत छल,किछु युग के ललकारबाक एवं नवयुवककेँ आह्वान करबाक कछमछी छल।

ई सभ तँ जे छल से छल। 1942 क आन्दोलनक समय हुनक जहल जाइत काल देशक नामसँ छोटछीन सन्देश हमरा अत्यधिक प्रभावित कएलक- Freedom is in peril. Defend it with all thy might. अर्थात् "देशक स्वतंत्रता आइ संकटमे अछि। जतेक शक्ति हो से लगाए ओकरा बचबैत जाउ।" हुनक हस्तलेखक ई फोटो अखबारसभमे छपल हम देखने रही।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

1961 मे इलाहाबादक अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति द्वारा दसटा दुर्लभ प्राचीन मैथिली पोथी प्रकाशित कएल गेल छल। तकरा सभक विमोचन समारोह एकटा बेस पैघ मैथिली पुस्तक प्रदर्शनीमे 15 दिसम्बर 1961 कैँ अल्पसंख्यक भाषा सबहिक आयुक्त इलाहाबाद हाइकोर्टक अवकाश प्राप्त मुख्य न्यायाधीश बी. मल्लिक महानुभाव कएने छलाह तथा ओहि अवसरपर मुख्य अतिथि कविवर श्री यात्री छलाह।

एहि आयोजनक क्रममे पंडित जवाहर लाल नेहरू इलाहाबाद आएल रहथि। तैँ समिति ई निर्णय कएलक जे किएक ने हुनका ई पुस्तक सभ दए, मैथिलीक समस्यासँ, विशेष कए साहित्य अकादेमीसँ सम्बन्धित वार्तालाप कएल जाए। पंडितजी साहित्य अकादेमीक अध्यक्ष छलाह तैँ एहि कार्यक उपादेयता बुझल गेल। 21 दिसम्बर 1961 कैँ हुनकासँ भेंट करबाक हेतु हम (ओहि समितिक अध्यक्ष रही) एवं कुमार वैद्यनाथ चौधरी (जे समितिक सचिव छलाह) आनन्द भवनमे पंडितजीसँ परामर्श करबाक हेतु आनो पोथीसभ सहित अंग्रेजीमे हमर मैथिली साहित्यक इतिहास 2 भाग लय) गेलहुँ। ओतए इलाहाबादक बहुतो गण्यमान्य लोक छलाह। मल्लिक साहेब सेहो ओहिठाम छलाह- ओ बाजि उठलाह- देखू, ई मैथिलीबलासभ थिकाह । ताबतेमे आइयो ओहिना मोन पड़ैत अछि, पंडितजी उपरका महलपर पहुँचल छलाह, आर 3-4 मिन्टहिक भीतर नीचा कक्षमे झटसँ आबि गेलाह- दिल्लीसँ आएल रहथि तकर कोनो थाकनि नहि देखाएल। चूड़ीदार पएजामा-अचकन-गुलाबक फूल सभ अनामति। प्रयाग, ओ अपन घर, प्राय: प्रधानमंत्री जकाँ मात्र नहि अबैत छलाह, प्रयागक निवासी थिकाह, एतुका अपन इष्ट मित्र-अड़ोस-पड़ोसक वर्गसँ कोना प्रेम ओ सहृदयतासँ, स्नेहपूर्वक भेंट कएलनि से देखि-देखि बड़ प्रभावित भेलहुँ। एकटा तीर्थ पुरोहित (पण्डा) भुट्टे सन छलाह तकरोसँ अपेक्षा छलनि-से आश्चर्य लागल, कारण लोक हुनका धार्मिक नहि कहनि, मुदा ओकरासँ आशीर्वाद फल-फूल नारिकेरि लेलथिन। प्राय: 20-22 गोटे ओहिठाम रहथि। सभसँ कुशल पुछैत घूमि-घूमि गप्प करैत छलाह। तैखन हमहूँ सभ आगाँ बढ़ि पोथी सभ जे अनने रही, देलिअनि। ओ देखलनि, उनटा-पुनटाकैँ पढ़लनि आर बजलाह (हिन्दीएमे) जे नीक लगैछ। अवकाश भेहला पर एकरा सभकैँ पढ़ब। ई कहि पोथीसभ राखए लेल ककरो दए देलथिन । ताबत चारूकात लोकसभमे ओ घूमि-घामि दू- चारि शब्द बजैत चलैत-फिरैत रहलाह। तखन हम सभ पुन: हुनकासँ गप्प करए लगलहुँ - हम कहलिअनि जे मैथिलीक सम्बन्धमे नाना प्रकारक भ्रान्ति पसरल छैक तथा ओकर प्रगतिमे बाधा राखल जाइत अछि। चोट्टे पंडितजी बजलाह जे "भाषा और साहित्य के बारे में विवाद की क्या बात है ? किसी को मैथिली या राजस्थानी से विवाद क्यों हो सकता है ?"

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

बस एतबे ओहि दिन हुनक भावना बुझल। स्थानीय पत्रसभमे ई समाचार दए देल ओ आशा भेल जे आब कोनो युक्तिसँ साहित्य अकादेमीक मैथिलीक हेतु विचार-विमर्श करी तखने हिनकासँ बेसी लाभ भए सकैछ।

जनवरी-फरवरी 1962 कँ हम एक -दूटा पत्र साहित्य अकादेमीकेँ मैथिलीक मान्यता देबाक हेतु देल। तकर उत्तर साहित्य अकादेमीक सचिव कृष्णा कृपलानी 3 मई 1962 कँ पत्र संख्या एस० ए० -14 /1391 द्वारा देलनि जाहिमे ओ लिखलनि जे हिन्दीक अंग मानि साहित्य अकादेमी मैथिलीओक कार्यक्रम रखने अछि - ओकरा कोनो कम आदरणीय नहि मानैत अछि।

बस एही पत्रक संन्दर्भ दए हम पंडितजीकेँ पत्र देबए लगलहुँ । हमर कहब भेल जे अपने कहने रही - "किसी भाषा और साहित्य के बारे में झगड़े की बात क्या हो सकती है?" मुदा कृपलानी मैथिलीकेँ हिन्दीक अंग मानीएकेँ साहित्य अकादेमीमे स्थान देने छथि। हम कहलिअनि जे एही प्रकारेँ मैथिलीक सम्बन्धमे झगड़ा-विवाद बाधक होइत अछि। मैथिली लेखक जे पोथी वा कविता मैथिलीक बुझि लिखैत छथि, तकरा हिन्दीक वा अन्य कोनो भाषा बनएबाक अधिकार ककरो कोना भए सकैत छैक? मैथिली भाषी वा मैथिलीक लेखक यदि अपन साहित्य ओ भाषाकेँ हिन्दीक अंग नहि मानैत अछि, आओर ओकरा पृथक् अपन भाषा ओ साहित्य मानैत अछि, तखन ओकरे कथनकेँ मानबाक चाही। हम उदाहरण देने रहिअनि जे भारतवासी भारतीय थिकाह अथवा ब्रिटिश साम्राज्यक अंग थिकाह से कहबाक अधिकार भारतवासिएकेँ छैक, ने कि ब्रिटेनक निवासीकेँ।

पंडितजी पत्र देलनि जे हुनका हमर तर्क सुन्दर ओ समीचीन बुझाइत छनि (ओ interesting शब्दँ ई भाव व्यक्त कएने छलाह) तथा हुनका जे हम पत्र देने छिअनि तकरा ओ साहित्य अकादेमीक उपाध्यक्ष डा. राधाकृष्णनकेँ समुचित विचार कए उत्तर देबाक हेतु पठाए देने छथि। ओतएसँ जे पत्रसभ उत्तरमे आयल तकर पुनः दू-तीन बेर हम प्रत्युत्तर देलहुँ। पश्चात् चीनी आक्रमणक कारणेँ देशक क्षुब्ध वातावरणमे हम तटस्थ भए चुप बैसि गेलहुँ।

अग्रिम वर्ष अर्थात् फरवरी 26, 1963 कँ एकटा पत्र हम साहित्य अकादेमीक सचिवकेँ बहुत तामस ओ क्षोभसँ देबाक नेआर कएल- से पत्र आइओ हमरा लग सुरक्षित राखल अछि। ओ पठाओल नहि गेल। कारण, ताबे हमरा पत्र भेटल जे हम साहित्य अकादेमीक साधारण सभाक सदस्य निर्वाचित भए गेलहुँ अछि आ ओकर अधिवेशन 31 मार्च 1963 कँ होएत। हम धन्यवाद दैत अपन स्वीकृति 6 मार्च 1963 कँ पठाओल आओर संगहि मैथिलीक सम्बन्धमे एकटा विधिवत् प्रस्ताव पठाए देल।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

कृपलानीजी लिखलनि जे एतद् सम्बन्धी कोनो प्रचार पत्र ओ नहि बँटताह वा लोककेँ देथिन ओ हमरा स्वयं करए पड़त। हँ, प्रस्ताव कार्यसूचीपर राखल जाएत। हम 4 पृष्ठक छोट-छीन निवेदन मिथिलारक्षक उदाहरणसभ दैत तैयार कए लए गेलहुँ। संगहि एकटा विस्तृत, 'द केस ऑफ मैथिली बीफोर द साहित्य अकादेमी' नामक प्रतिवेदन अंग्रेजीमे तैआर कएल एवं तकरा सेहो 31 मार्चक अधिवेशनमे पढ़बाक हेतु लए गेलहुँ।

ओहि दिनुक सभटा दृश्य ओ घटनाक्रम आइओ मोन अछि। ठीक चारि बजे बैसारी छलैक । सभ सदस्य पंडितजीक बाट तकैत बैसल छलाह। लगेभग 80 गोटे छलाह - उमाशंकर बाजपेयी (गुजराती) , डा. श्री नगेन्द्र (हिन्दी) डा. श्री रामकुमार वर्मा (हिन्दी), राघवन् (संस्कृत), "संधांशु" जी (बिहार), हरेकृष्ण महताब (उड़िया), मुल्कराज आनन्द (चण्डीगढ़) आदि। हम सभकेँ एकटा कए छोटका प्रचार पत्र अपनहिसँ देने रहिअनि, मैथिली लिपिक छापल वस्तुसभ तथा टाइप कएल छोटछीन "निवेदन"। सुधांशुजीकेँ हम कहलिअनि जे ई काज हमरेटा नहि अपनहुक थिक, ओ हमरा मैथिलीअहिमे कहलनि - "हँ, अपने आगाँ बढ़ूँ, शुभं भूयात्।" ताबेमे विज्ञान भवनक ओहि कक्षमे टाँगल देवाल घड़ी ठीक 4 बजे टनटन घंटी बजओलक आ ताही संग पंडितजी प्रवेश कएलनि। पंडितजीक अबैत देरी सभ ठाढ़ भए हुनक स्वागत कएलक। सभाक कार्यवाही खटाखट आरम्भ भेल। कृपलानी प्रत्येक कार्यसूचीक विषयसभक सम्बन्धमे टाइप कएल विवरण संक्षेपमे पढ़ैत गेलाह ओ तकरा लोक एकदम निश्शब्द अनुमोदन करैत गेल। हमर प्रस्ताव प्रायः अन्तिम दसम संख्या पर रहए। से जखन अएलैक तँ पंडितजी किछु मुसकुराइत बजलाह -"एहिमे सिन्धीक संग मैथिलीकेँ जोड़ल छैक से की इहे विदेशमे चल गेल भाषा छैक ? हम उत्तर देल जे सँविधानक अष्टम अनुसूचीमे जाहि भाषाक गणना नहि छैक ताहि भाषामे सिन्धी ओ मैथिली दुहू छैक जे साहित्य अकादेमीक नियमावलीक अनुसार ओहो स्वीकृत पएबाक समान अधिकारी भए सकैछ, तेँ सिन्धीक संग मैथिलीक प्रश्न जोड़ल गेल अछि।

ताहिपर पंडितजी किछु कहबाक उपक्रम कएलनि। ताबे पी. ई. एन. मे हमर परिचित मित्र गुजराती कवि उमाशंकर जोशी (जे पछाति साहित्य अकादेमीक अध्यक्ष भेलाह) ठाढ़ भए निवेदन कएलथिन जे प्रस्ताव कएनिहार (श्री जयकान्त बाबू) स्वयं आएल छथि। हुनका प्रस्ताव रखबाक अवसर देल जाइक। एहिपर पंडितजी हमरा दिस तकलनि। हम तँ तैआरे बैसल रही। उठि कए अपन विस्तृत वक्तव्य जे अंग्रेजीमे छल बाँचए लगलहुँ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

वक्तव्य हमर पछाति छपल ओ आइओ उपलब्ध अछि। ताहिमे हम पहिने पंडितजीकेँ "आनन्द भवन" मे जे भेंट भेल छल तकर विवरण दैत स्मरण देआओल जे "अपने कहने रही मैथिली भाषा ओ साहित्यक सम्बन्धमे झगड़ा- विवादकेँ कोनो स्थान नहि छैक। ताही आधारपर हम अपने लग निवेदन कएल जे मैथिलीकेँ साहित्य अकादेमीमे स्थान भेटैक; जाहिसँ मैथिली उन्नति करए। अपने आश्वासन देलहुँ जे एहि सम्बन्धमे समुचित विचार करबाक हेतु कार्यालयकेँ आदेश देने छी। एम्हर चीनी आक्रमणक कारण हम किछु शिथिल भए गेल रही। मुदा अकादेमीक सदस्यता हमरा भेटल तेँ आब पुनः सचिवसँ अनुमति लए ई प्रस्ताव सभक विचारार्थ राखल अछि।

तकरा पश्चात् हम क्रमशः अपन समस्त वक्तव्य पढ़ए लगलहुँ। लगभग 45 मिनट हमर भाषण भेल। पंडितजी ध्यानसँ सभटा सुनलनि। ओहि बीच हमर मित्रलोकनि विशेषतः डा. राघवन (मद्रास विश्वविद्यालयक संस्कृत प्रोफेसर) जनिकासँ 1948 मे दरभंगा प्राच्य विद्या सम्मेलनमे खूब परिचय भेल रहए, पत्राचारो रहए) हमर कोट पकड़ि घीचए लगलाह- बैस जाउ, बहुत अधिक बजलहुँ, पंडितजी एतेक भाषण नहि बर्दाश्त करताह, अहाँक पक्ष दुरि भए जाएत, ओ खिसिआए जेताह फुसफुसाए कहैत रहलाह। हम से सभ नहि सुनि अपन वक्तव्य पूरा-पूरा देल। पंडितजी तमसाएल एकदम नहि छलाह। लोकक कहब भेलैक जे एतेक काल हुनका ककरो सुनैत रहबाक स्वभाव नहि छनि। ई हमरे सौभाग्य भेल जे ओ एतेक काल हमरा सुनैत रहलाह। आन्ध्र प्रदेशक एकटा विद्वान् पछाति एहि भाषणक विवरण डा. सुनीति कुमार चटर्जीकेँ देलथिन जे ओ हमरा लीखि पठओलनि। ताहिसँ बुझब जे हमरा भाषणसँ पंडितजी सद्यः कतेक प्रभावित भेल रहथि।

हमर प्रस्तावक अनुमोदन डा. श्री रामकुमार वर्मा (इलाहाबाद विश्वविद्यालयमे हिन्दीक प्रोफेसर ओ अध्यक्ष) कएलनि। हम सदस्य सभसँ भेंट कएने रही। विभूति भूषण मुखोपाध्याय (बंगला), मामा बालेकर (मराठी) आदि हमरा पक्षमे छलाह। तखन पंडितजी स्पष्ट ओ दृढ़ स्वरमे बजलाह - "मानलहुँ जे मैथिलीकेँ स्वतन्त्र ओ विशिष्ट भाषा ओ साहित्य परम्परा छैक। प्रश्न उठैत अछि जे तथापि ओकर संरक्षण ओ पोषण होअए अथवा नहि।"

एहिपर तखन अनेक विचार-विमर्श, तर्क-वितर्क होमए लागल। उड़िसाक नेता डा. हरेकृष्ण महताब बजलाह जे मैथिलीक प्रति देशमे न्याय होएबाक चाही। श्री मुल्कराज आनन्द (चण्डीगढ़) प्रस्ताव कएल जे एकटा राष्ट्रीय मैथिली कमीशन बहाल कएल जाए जे मैथिलीक

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

मान्यताकेँ जाँच करए। मिथिलाक नेता सुधांशुजी प्रस्तावित कएलनि जे एकटा छोट-छीन पुरस्कार मैथिलीओ पोथीपर देबाक औचित्य छैक। हम एहि प्रस्तावक विरोध कएलहुँ आर बजलहुँ जे मैथिली लेखककेँ ककरोसँ छोट पुरस्कार भेटलासँ नीक कोनो पुरस्कार भेटबे नहि करए - भेटए तँ अन्य भारतीय भाषा सभक समान पुरस्कार भेटए अन्यथा कोनो नहि भेटओ, से बरू नीक। हिन्दीक प्रतिनिधि ई भय देखओलनि जे देशमे आरो भाषा सभ एहि प्रकारेँ मैथिलीक समस्या उजागर कएलापर उभरत तथा तकर फल ई होएत जे एखन, जखन राष्ट्रपर चीनी संकट आएल छैक राष्ट्रमे विघटनशील तत्त्व सभ जागि उठत, तेँ ई ठीक नहि होएत।

अन्तमे नेहरूजी बजलाह जे आब ई विचार कार्यकारिणीपर छोड़ल जाए। जे उचित होएत; विचार कएल जाएत। ओहि दिन एतबे भेल। मुदा पश्चात् डा. श्री नगेन्द्र (दिल्ली विश्वविद्यालयक हिन्दी विद्वान्) हमरा चेतओलनि जे मिश्रजी अहाँ राष्ट्रविरोधी चक्रचालिमे फँसि राष्ट्रक बड़ पैघ अहित करबाक प्रयत्न कए रहल छी। अस्तु।

हमरा एकरा पश्चात् मोन पड़ल जे एक वा दू वर्ष पूर्व आर. आर. दिवाकर महाशय (केन्द्रीय मंत्री) रेडियोमे मैथिलीक कार्यक्रम करबाक आग्रह कएलापर लिखने छलाह जे की मैथिली एकटा 'ग्रन्थस्थ' भाषा थिक? हम ताही आधार पर निश्चय कएल जे दिल्ली मध्य एकटा विराट मैथिली पुस्तक प्रदर्शनीक आयोजन करी। ताहिसँ पढ़ल-लिखल सर्वसाधारणकेँ मैथिलीक पक्षक सम्यक् परिचय होएतैक। हम एहि उद्देश्यसँ प्रोफेसर हुमायूँ कबीरसँ, जे भारत सरकारक तखन सांस्कृतिक मन्त्री छलाह, भेंट कएल जे ओ ओहि प्रदर्शनीक उद्घाटन करथि। ओ कहलनि जे हुनकासँ नीक पंडितजी एहि कार्यक हेतु उपयुक्त होएताह- कारण सभ हुनके मुँह तकैत छथि-ओ जँ प्रभावित होएताह तँ मैथिलीकेँ सभ लाभ भेटत।

हम एहि बातकेँ बुझल । नेहरूक सहानुभूति ओ संवेदनशीलतासँ परिचिते रही। हुनकर उदार ओ वैज्ञानिक दृष्टिकोणपर आस्था भए गेल छल। तेँ हुनका पत्र देलिअनि। ओ तुरन्त उत्तर देलनि। बहुत विनम्र ओ संतुलित, सहानुभूतिपूर्ण ओ विशुद्ध साहित्यकारक दृष्टिकोणयुक्त उत्तर देलनि। ओ उद्घाटन करब (तकर चर्चो नहि कए लिखलनि जे यदि प्रदर्शनीक समय ओ भारतवर्षमे रहताह तँ अवश्य प्रदर्शनीमे सम्मिलित होएताह। हम अप्रैलसँ पुस्तकादि संग्रह करए लगलहुँ - पूर्वहुँ मैथिली पुस्तक प्रदर्शनी करबाक अनुभव छल। प्रदर्शनीक संगे-संग मैथिली साहित्यक विशदता, विविधाताक आइ-आइ धरिक अक्षुण्णताक प्रदर्शन करबाक आयोजन करए लगलहुँ। हमर सहयोगीसभ - अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति (प्रयाग) क कार्यकर्त्तासभ

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

-उमाकान्त तिवारी, राघवाचार्य शास्त्री, कुमार वैद्यनाथ चौधरी, कुमार श्री जयानन्द सिंह (बनैली डेओढ़ी), प्रोफेसर आदित्य गोपाल झा, श्री चन्द्रकान्त मिश्र आदि कार्य करए लगलाह। हमर अनुज श्री रमाकान्त बाबू ओ विजयकान्त बाबू अपना-अपना सरकारी विभागक सहयोगक संग लागि गेलाह। दूटा पैघ बंगला ठीक भेल, साउथ एक्स्टेन्शनमे। "आजाद भवन" इन्द्रप्रस्थ स्टेटमे चारिटा पैघ-पैघ हॉल भाड़ापर लेल गेल। अन्तमे पं. जवाहर लालकेँ पत्र देल जे आयोजन पूर्ण भऽ गेल अछि, ओ अपना कार्यक्रमक आधारपर कहिआ प्रदर्शनी हो से निर्णय करथु। किछुए दिनुक प्रतीक्षा कएलापर ओ दिसम्बर 9 तारीखकेँ 7 बजे साँझखन प्रदर्शनीक उद्घाटन करबाक समय निर्धारित कएलनि। हमरा कखनो अन्धकारमे नहि रखलनि, आ ने खुशामद करबओलनि ई सौजन्य आन नेतामे नहि देखैत छी।

हम तँ मैथिलीक यात्रा नेहरूजीकेँ ओ उदारता आदर कएलनि - एखन तकरे कथा कहए बैसल छी। प्रदर्शनीक हेतु ओ मात्र बीस मिनट निर्धारित कएने छलाह - से डेढ़ घंटासँ उपर समय देलनि। ओहि दिन थाकल बेसी लागथि। दू-तीनटा कथा विशेष मोन अछि- पार्लियामेन्टसँ भरि दिनुक थाकल, बूढ़ ओ लम्बा-चौड़ा व्यक्तित्व तइयो कनेको अगुताइ नहि देखओलनि- प्रत्येक कार्यक्रम ध्यान मग्न ओ एकाग्र भए सुनलनि, देखलनि, रुचि लेलनि - आइ तँ जे मैथिलीक प्रोफेसर वा नेता कोनो समारोहमे अबैत छथि तँ भाषण दए पड़ाए जाइत छथि वा जाए लेल छटपटाइत रहैत छथि - ओ तँ सभ देखलोपर टहलैत-बुलैत रहलाह। ओहि दिनुक आनन्द कहलो ने जाइत अछि-मोने-मोन आनन्द लैत छी- 500 सँ उपर मैथिलीभाषी जनसमुदायक बीच ओ सभसँ सर्वसाधारण जकाँ मिलैत-घुमैत जनताक नेता लगैत छलाह। बड़े प्रेम ओ सौहार्द्रसँ सभटा सुनैत, पुछैत, घुमलाह-तीन-चारि विशाल कक्षमे संगे-संग घुमलाह, चारूकात घुरि-घुरि सभ वस्तुकेँ देखैत, उनटओबैत रहलाह। अन्तमे पाग पहिरि फोटो खिचबओलनि। कहलिअनि, किछु प्रदर्शनीक सम्बन्ध अपन विचार लिखि देथु। कहलनि (एहिठाम लिखि दिअ आ कि डेरासँ लीख कए पठा दिअ- थाकल छलाह, वा विचार नापि-तौलिकेँ शब्दक प्रयोग करए चाहैत छलाह-से नहि बुझाएल मुदा डेरासँ पछाति हस्ताक्षर अंग्रेजी हिन्दी दुनूमे (किएक?) कए क' लिखि पठओलनि-ई साधारण बात नहि छल। बहुत सोचलापर हुनक Sincerity मात्र बुझाइत अछि - सत्यनिष्ठा एवं हृदयसँ स्नेह। से पाबि हमर मोनक की दशा भेल से की कहू ?

ओकरा पश्चात् बहुतो नेता ओ बड़का-बड़का लोकसँ सम्पर्क भेल। मुदा ओ स्नेह, ओ संवेदनशीलता, ओ विचार, ओ आत्मीयता, विषयकेँ ओ तर्ककेँ सुनबाक- बुझबाक उत्सुकता

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

अनकामे नहि भेटल। आब तँ लोक अपने पत्रक उत्तरो नहि दैत छथि – अपन प्राइवेट सेक्रेटरीसँ मात्र पत्रक पहुँचनामा पठाए देल तँ हमर अहोभाग्य! विषय बुझब, धैर्यसँ तर्क सुनब- ई तँ बुझाइछ, लोकमे छैके नहि। जे केओ किछु सुनितहुँ छथि से बहुधा नाटक करैत छथि। उपरका मोनसँ सुनैत छथि, काजो कए दैत छथि, मुदा ओ Sincerity, ओ भितरसँ बुझबाक चेष्टा नहि करैत छथि।

ओ कहलनि; जनगणनामे कम मैथिली भाषी संख्या लिखैत अछि तँ तकर परवाहि नहि करू, मात्र 2 लाख संख्यक आइसलेण्डक भाषा-भाषी छथि, मुदा ओहूमे नीक पोथीपर नोबेल पुरस्कार भेटलैक अछि। दोसर, सरकार मानए तकर चिन्ता नहि कए, देखी जे विद्वान् मानथि, विश्वविद्यालय मानए, लेखक मानथि- से जँ मैथिलीकेँ मानैत छथि, तँ सरकारकेँ झक मारि कए (यदि ओ जनताक सरकार अछि तँ) मैथिलीकेँ मानए पड़तैक, आर जँ एतेक पैघ क्षेत्रमे मैथिली प्रचलित अछि, जे हम सभ कहैत छी, तँ ओकर सरकारी काजमे, राजकाजमे, कोर्ट-कचहरीमे सेहो उपयोग करबाक स्वीकृति देबहि पड़तैक।

तँ कहैत छी-जमाहिरलाल वस्तुत: 'जमाहिर' छलाह, 'लालो' छलाह, ओ हीरा छलाह; हुनका जेहन देखलिअनि, जेहन पओलिअनि, तकर तुलना नहि भए सकैछ आ प्राय: एहि जन्ममे ओ देखबामे आब नहि आओत। मैथिली आन्दोलनमे ओ एहि सरलतासँ घुलि-मिलि संग देलनि तकर हमरा कोनो आशा नहि छल।

शब्दार्थ

प्रतिवाद	–	विरोध
उपादेयता	–	उपयोगिता
समीचीन	–	उचित
क्षुब्ध	–	दु:खी
क्षोभ	–	दु:ख
उपक्रम	–	प्रयास
प्राच्य	–	पूरब

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

प्रश्न ओ अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नक उचित विकल्पक चुनाव करू :

(i) इलाहाबादक अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति द्वारा दसटा दुर्लभ प्राचीन मैथिली पोथी सभ प्रकाशित कयल गेल छल –

(क) 1965 मे (ख) 1961 मे

(ग) 1962 मे (घ) 1964 मे

(ii) इतिहास प्रसिद्ध विद्वान् छलाह –

(क) डा० महेश्वरी प्रसाद (ख) डा० ईश्वरी प्रसाद

(ग) डा० भैरवी प्रसाद (घ) डा० रामेश्वरी प्रसाद

2. निम्नलिखित रिक्त स्थानक पूर्त्ति करू :

(क) किछुए दिनुक प्रतीक्षा कयला पर ओ दिसम्बर ..... तारीख कैं सात बजे साँझखन प्रदर्शनीक उद्घाटन करबाक समय निर्धारित कयलनि।

(ख) उड़िसाक नेता डा० हरेकृष्ण ..... बजलाह।

3. निम्नलिखितमे शुद्ध-अशुद्ध फराक करू :

(क) श्री मुल्कराज आनन्द (चण्डीगढ़) प्रस्ताव कएल जे एकटा राष्ट्रीय मैथिली कमीशन बहाल कएल जाए जे मैथिलीक मान्यताकैं जाँच करए।

(ख) प्रदर्शनीकहेतु मात्र दस मिनटक समय निर्धारित कएने छलाह।

4. निम्नलिखित लघूत्तरीय प्रश्नक उत्तर लिखू :

(i) लेखक किनकासँ विशेष प्रभावित भेल छलाह ?

(ii) साहित्य अकादेमीमे मैथिलीक प्रवेशक विषयमे लेखक किनकासँ भेंट कयलनि।

(iii) 1962 मे साहित्य अकादेमीक सचिव के छलाह ?

(iv) ओहि समयकैं साहित्य अकादेमीक उपाध्यक्ष के छलाह?

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

(v) लेखक साहित्य अकादेमीक कोन सभाक सदस्य निर्वाचित भेलाह?

5. निम्नलिखित दीर्घोत्तरीय प्रश्नक-उत्तर लिखू :

(i) साहित्य अकादेमीमे मैथिलीक प्रवेशक विषयमे लेखकक प्रयासक वर्णन करू।

(ii) पं० जवाहर लाल नेहरूक भाषा प्रेमक वर्णन करू।

(iii) मैथिलीक पक्षमे दोसर भाषाक विद्वान द्वारा प्रकट कयल गेल विचारक उल्लेख करू।

(iv) मैथिली कोना साहित्य अकादेमीमे प्रवेशक योग्यता रखैत अछि।

6. गतिविधि -

(i) साहित्य अकादेमीक विषय मे जानकारी प्राप्त करथि।

(ii) साहित्य अकादेमीसँ पाँच पुरस्कृत पोथीक नाम लिखू।

(iii) नेहरूक जीवनवृत्तक संकलन करू।

7. निर्देश -

(i) शिक्षक छात्रसँ भाषाक महत्त्व पर भाषण प्रतियोगिताक आयोजन कराबथि।

(ii) साहित्य अकादेमीक सम्बन्धमे शिक्षक छात्रकेँ जानकारी देथि।

(iii) शिक्षक छात्रकेँ नेहरूक उदार चरित्रक उल्लेख करथि।

---

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

लिली रे

मैथिली कथा साहित्यक सशक्त हस्ताक्षर लिली रेक जन्म रामनगर (पूर्णिया) मे 26 जनवरी 1933 ई. मे भेल छलनि। हिनक 'रंगीन परदा' मैथिली कथा साहित्यमे चर्चित अछि। मरीचिका (दू खण्ड), पटाक्षेप, उपसंहार आदि हिनक प्रसिद्ध उपन्यास अछि। हिनक कथाक कथ्य ओ शैली अन्यसँ भिन्न अछि। हिनक प्रत्येक कथामे विचाराभिव्यक्ति स्पष्ट रहैत छनि। मरीचिका उपन्यास पर हिनका साहित्य अकादेमी पुरस्कार भेटल अछि। हिनका प्रबोध साहित्य सम्मान सेहो भेटल छनि। ई दार्जिलिंगमे रहैत छथि।

चन्द्रमुखी कथामे मायक त्याग ओ ममताक एक कारुणिक चित्र प्रस्तुत कयल गेल अछि। भारतमे संतानक लेल माय ममताक मञ्जूषा, वात्सल्यक वाटिका ओ स्नेहक सुख-सदन मानल गेल अछि। ओ अपन संतानक लेल कोनो त्याग करबाक लेल तैयार रहैत अछि।

सम्पूर्ण कथामे लेखिका अत्यन्त मार्मिक ढंगसँ संतान-स्नेहक चित्र उपस्थित कयने छथि।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

चन्द्रमुखी

अट्टा-पट्टा चन्द्रमुखी दाइकेँ पाँचटा बेटा।

मुदा चन्द्रमुखी दाइकेँ पाँच टा बेटा नहि भऽ सकलनि। प्रथम सन्तानक जन्मसँ तीन मास पूर्वहि देहान्त भऽ गेलनि। चन्द्रमुखी दाइ पछाड़ खा खसली। लोक सम्हारलकनि। बुझौलकनि -अहाँ कि मात्र अपना देहे छी ? क्यो आर अछि अहाँक संग, तकरा किएक बिसरै छी ? उठू, मोनेकेँ काबूमे आनू।

चन्द्रमुखी दाइ उठि बैसली । ताही क्षण बुझि पड़लनि जे पेटमे क्यो कुदकि रहल होनि। पीड़ारहित, गुदगुदवैत। चन्द्रमुखी दाइ ममत्वसँ भरि उठली । पेट पर हाथ हँसोथि, मोनहिमोन बजली -'खेलाउ'।

बेटाक पहिल क्रन्दन जखन चन्द्रमुखी दाइक कानमे पड़लनि जेना ओ क्रन्दन नहि भऽ सूचनाक हुकार छल -'हम आबि गेलहुँ।

चन्द्रमुखी दाइमे हठात् दुनियाँक बल आबि गेलनि। पड़लि रहलासँ काज नहि चलतनि। नान्हिटा कोंढ़ी टुकरामे लटपटायल पड़ल छल ककरा भरोस पर? चन्द्रमुखी दाइकेँ ओकरा विकसित करबाक छलनि। जेहेन परिचर्या, तेहेन सुन्दर फल।

"फूल। हमर फूल। हमर रक्तसँ सीचल, हमर दूधमे बोरल।"

क्यो कहलकनि -"हे बदामक दालि जुनि खाउ। बच्चाकेँ वायु करतैक।"

चन्द्रमुखी दाइ बदामक दालि खायब छोड़ि देलनि।

"हे बच्चा गोंगियाइत अछि। प्राय: दाँत उठैत छैक।"

"कनिक कऽ दालिक पानि चटा देल करियौ। दाँत बहरयबामे सुभीता हेतैक। बिन छौंकल दालि।"

चन्द्रमुखी दाइ नित्य छौंकबाक पहिनहि बेटाकेँ दालिक पानि चटायब नहि बिसरथि। बोलारय देथिन -"हमर एतनीटा फूल, फूल औ फूल । लियऽ चाटू। दाँत बहरायत तखन ने दालि चीखब।"

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

फूल जोरसँ किलकारी देथि। चन्द्रमुखी नेहाल भऽ जाथि।

"भौजी। किताबमे लिखल छैक जे नित्य माछ खयबाक चाही। माछ खयलासँ बुद्धि बढ़ैत छैक।

चन्द्रमुखी दाइ माङिकऽ-चाङिकऽ जेना होनि तेना एकटा पोठी सुतारिये लेथि अपन फल लेल।

"छोट जन, हम अहाँक कमीज पैंट नित्य साबुनसँ खीचि देल करब, लोहा सेहो कऽ देब। अहाँ हमर बच्चाकेँ दू अच्छर पढ़ा देब ?"-चन्द्रमुखी गामक सम्पर्कक एक किशोर देयौरसँ कड़ार करौलनि।

टोल, पड़ोस, दुरस्थ सम्बन्धिक वर्ग, सब दिस ताक लगौने रहथि चन्द्रमुखी । जखन जकरा कतऽ कोनो कार्य-प्रयोजनक भीड़ होइ जा कऽ खटि आबथि। जे पारिश्रमिक भेटनि ताहिसँ फूल लेल माछ-भातक जोगार करथि।

"हे, बेटा अहाँक तेज अछि। एकरा आगू पढ़बियहु।"

चन्द्रमुखी दाइ राति भरि जागि चरखा काटऽ लगली।

कम-सँ-कम बीस रुपया मास तऽ चाहबे करी।

स्वराजी हवामे चन्द्रमुखी दाइक मोन धुक-धुक करनि। प्रति बेर फूलकेँ कहथिन -"बच्चा, अहाँ ओहि सबसँ एकदम फराक रहब। अपन विधवा मायकेँ मोन पाड़ब। हमरा आर क्यो नहि अछि।"

फूल आश्वासन देथिन। चन्द्रमुखी दाइ कृतकृत्य भऽ जाथि। भड़ारमे जे किछु रहनि, आनि कऽ दऽ देथिन।

"बच्चा ई कनिये घी रखने छी, अहाँ लेल। माछ खाइ छी किने सब दिन ?"

"हँ, आ तोँ ? किछु खाइ-पिबै छँ कि सभटा हमरे दऽ दैत छँ ?"

"दुर, बिन खयने क्यो रहैत अछि ?"

मुदा चन्द्रमुखी रहैत छली। आइ एकादशी, काल्हि चतुर्दशी, परसू निराहार। आ पारण लै तुलसीक पात भेलनि पर्याप्त। विधवाकेँ एतबे बहुत। अनेरे फाजिल खर्च।

अदौरी जकाँ खोंटि-खोंटि कऽ खर्च करथि चन्द्रमुखी दाइ। एखन बहुत खर्च बाँकी छलनि। बेटाकेँ ओकील बनयबाक छलनि।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

ओकालति पास करैत देरी बेटा खर्च लेब बन्द कऽ देलकनि। किछु दिन बाद प्रति मास पाँच टाका पठबऽ लगलनि। आरो किछु दिन बाद दस टाका।

मुदा चन्द्रमुखी दाइ अपन खर्च नहि बढ़ौलनि। ओ दू कट्ठा जमीन किनलनि। आमक बाड़ी बनौती। कम-सँ-कम एकटा पक्का घर बनबऽ चाहैत छलीह। अतिचारक बाद बेटाक विवाह करौती। पुतहु माटिक घरमे पयर रोपतनि ? नहि, बेटा-पुतहुक कोठली पक्काक रहतनि। अपने रहती कच्चामे । फूल कतबो आपत्ति करथू।

फूलक वश चलनि तँ एखने चन्द्रमुखीकेँ मधुबनी लऽ जाथि। मुदा चन्द्रमुखी राजी नहि भेलि। बजली - "गाम घर बिलटि जायत ?

"कोन एहेन खजाना छैक जे बिलटि जायत।"

"जतबे अछि। जखन दू गोटे भऽ जायब तखन पार बान्हि कऽ एक गोटे गाम तऽ एक गोटे मधुबनी।"

एक छन लेल फूल लजा गेला। बजला- "जेहन विचार होउ, ओतऽ हमरा हरदम मोन पड़ैत छैँ।

"हम मोन पड़ै छी ?"

"तऽ आर के मोन पड़त ? के अछि हमर अपन ? जहियासँ ज्ञान भेल, तोरा खटितहि देखलियहु। दिनकेँ दिन नहि रातिकेँ राति नहि बुझि खटैत। एकटा भनसिया किएक ने राखि लैत छैँ ? मात्र दू टाका मास तऽ लगतौ। ककरा लेल एतेक बचबैत छैँ ?"

"नहि, से नहि। एकटा पेट लेल कतबा काज ? आ सेहो नहि रहत तँ समय कोना कटत ?"

"तैँ तऽ कहैत छियौ चल हमरा संग। ओतऽ सिनेमा देखबैँ। कीर्तन सुनबैँ । सुन, दरभंगा चलबैँ ?"

- "आब सब किछु अतिचारक प्रात।"

- "जेहेन विचार" - फूल फेर लजा गेला ।

फूलक गेलाक बाद कतेक दिन धरि हुनकर गपशप कानमे घुसिआइत रहनि। चन्द्रमुखी गदगद भऽ भाषथि -"ककरा छैक हमरासन बेटा ? लाखमे एक अछि। कतेक ममता छैक हमरा लेल। नहि, हम मधुबनी नहि रहब। दू-चारि दिन पाहुन -पड़क जेकाँ रहब। बेटा-पुतहुकेँ स्वच्छन्द छोड़ि देबैक। ओकरा सभ नव वयस। इएह तऽ वयस थिकैक खयबा-खेलयबाक।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

ओहिमे बूढ़ लोकक मुड़ियारी देब महा अनुचित। हम एतऽ अपन गाछी देखब। पोता-पोती आम खाइ लेल आओत। एकटा महीस कीनि लेब। जेना सिंहबाड़सँ महन्त मिसर के अठमा दिन पर भार अबैत छलनि - दही, माछ, मधुर, केरा। धन्न सासुर नहि तऽ की छलनि महन्त मिसरकेँ? आब तँ सुनै छियै एतहु सड़क बनतैक। पाँच वर्षमे कहाँ दन रिक्सा चलऽ लगतैक। तखन यदि चाहब तऽ सब दिन माछ, दूध, दही, तरकारी एतऽ सँ पठा सकबनि। यदि अपन घरसँ बहरयतनि तऽ पाइ खर्च कऽ किएक किनता फूल ?"

चन्द्रमुखी रुपैया जमा करऽ लगली। अपना ऊपर जेहो खर्च रहनि , तकरो घटा लेलनि। कतेक दिन चूड़ा भिजा, नोन -अचारक संग खा लेथि।

जाहि दिन फूल गाम आबथि, चन्द्रमुखी खूब मोन लगा कऽ भानस करथि। विधवा छली, तैयो अपनहिसँ माछ रान्हथि। तोड़ी - आमिलक झोर दऽ कऽ। फूलकेँ बड़ पसिन्न छलनि।

माछक झोरमे भात सानि कऽ हाथ बारि लेलनि फूल।

"की भेल ?"

"दर्द। पेटमे।"

"ओहू बेर दर्द दऽ कहने रही। जमाइनक अर्क लेबो कयलहुँ ?"

"लेलहुँ तऽ, मुदा किछु भेल नहि।"

"थम्हू, हम नेबोक खदकी बना कऽ दैत छी ।"

चन्द्रमुखी हबर-हबर नेबोक खदकी बना कऽ देलथिन। फूलकेँ किछु आराम बूझि पड़लानि। ओ हाथ धो घरमे पड़ि रहला। चन्द्रमुखी पंखा हौंकऽ लगली। फूलकेँ नीन भऽ गेलनि। चन्द्रमुखी लक्ष कयलनि फूल दुबरा गेल छला। आँखिक तऽरमे स्याह पड़ि गेल छलनि। बड़ खटनी पड़ैत छनि। एतेक खटबाक कोन प्रयोजन ? थोड़बहि कमाउथ, खाउथ, मौज उड़ावथु।

चन्द्रमुखीकेँ नहि चाहियानि पाइ। जकरा फूल सन बेटा रहतैक, तकरा कथीक अभाव ?

"बच्चा अहाँ हमरा अधे पठाउ।" - विदा हेबाक बेर चन्द्रमुखी बजली।

"किएक ?"

"खर्चे नहि अछि तऽ बेशी किएक लिअउ ?"

"खर्चा तऽ हमरो नहि अछि।"

"नहि बच्चा। अहाँकेँ हमरे सप्पत थिक। खयबा-पिउबामे कोताही जुनि करू।"

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

"तोरा के कहलकौ जे हम खयबामे कोताही करैत छी ?"

"क्यो कहलक नहि मुदा ...."

"पेट जे दुखायल ?"

चन्द्रमुखी मूड़ी डोला स्वीकार कयलनि।

"से तऽ आइ दू माससँ भऽ रहल अछि। खाइ छी तैयो, नहि खाइ छी तैयो ''

"दू मास ? बच्चा, अहाँ एक बेर दरभंगा जा कऽ शीतल बाबूसँ देखा आउ। जे पाइ लागत हम देब।"

फूलकेँ हँसी लागि गेलनि। बजला - "बड़ पाइ छौक तोरा ?"

"हँसी नहि, सत्ते कहै छी । अहाँ छोड़ि हमरा अछिये की ?"

"आब तों कानऽ जुनि लाग। देखा लेब। मुदा डाक्टर जे कहत से जनले अछि। .... बुढ़ियाक फूसि।"

चन्द्रमुखीकेँ सेहो हँसी लागि गेलनि। छहछह आँखिये हँसैत बजली - "भगवती करथु सैह बहराय।"

मुदा भगवती नहि कयलखिन। फूलक लघीमे रक्त बहराय लगलनि। डाक्टरक संदेह छलैक -कैंसर।

चन्द्रमुखी एहि डाक्टरसँ ओहि डाक्टर लग दौड़ऽ लगली। आमक बाड़ी सूद भरना पर दऽ पटना गेली। फेर जाँच। चन्द्रमुखीकेँ विश्वास छलनि जे डाक्टर कहत -पहिला बेरक जाँचमे गलती भऽ गेल रहैक। नीकेँ भऽ जयता। आपरेशनक आवश्यकता नहि।

मुदा डाक्टर से कहियो नहि कहलकनि। आपरेशनक बात कहलकनि -"ई हमरालोकनिक साध्यसँ बाहर अछि। अधिकसँ अधिक तीन मास खेपि जयता। एकमात्र भगवानक भरोस।"

ईश्वर सर्वशक्तिमान छथि । चन्द्रमुखी दाइकेँ मोन पड़लनि -जाहि समय विधवा भेल छली, घरक गोसाउनि लग कल जोड़ि प्रार्थना कयने छली - हमर जीवन निदग्ग राखब।

पहाड़ सन जीवन काटि गेली चन्द्रमुखी अछि जल जका। क्यो आङ्गुर तक नहि उठा सकल।

सब सराहि रहल छनि कोना? खाली भगवतीक कृपा। नहि तऽ ओ कोन जोगरक छली?

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

चन्द्रमुखी फूलकेँ गाम लऽ अनलथिन। कविराजी चिकित्सा करबऽ लगली। गोसाउनिक घरमे सम्पुट पाठ। फूलक सिरमा लग बैसि अपनहु 'रोगान शेषान्' केर जप करैत रहथि।

चन्द्रमुखी जप करैत छली, जखन फूलक प्राण छुटलनि। चन्द्रमुखी हतबुद्धि भेल देखऽ लगली। अपलक।

लोक सब अन्त्येष्टिक ओरिआनमे लागि गेल। क्यो आबि कऽ पुछलकनि-''घरमे नव धोती अछि ?''

चन्द्रमुखी आँचरसँ चाभी खोलि कऽ दऽ देलथिन। चुपहि मुहेँ। तिलांजलि देबऽ गेली। चुपहि मुहेँ। लोक सब सेहो स्तब्ध अदृष्टक क्रूर परिहास पर।

सहसा ककरो ध्यान पर चढ़लैक जे चन्द्रमुखी एकदम गुम्म भऽ गेल छली।

"तखनसँ एकहु आखर मुँहसँ नहि बहरायल छनि।"

"पल सेहो नहि खसलनि अछि।"

"कहुना हुनका कनयबाक चाही ।"

"एह, कनैत-कनैत नोर सुखा गेलनि बेचारीक।"

"मुदा एना गुम्म भऽ जायब नीक लक्षण नहि थिक।"

"की कहियनु, किछु फुरितहि ने अछि।"

"कोनो-ने-कोनो उपायसँ .....।"

"कोनो बच्चाकेँ सिखा दियौ ?"

सब चन्द्रमुखीकेँ सोर पाड़ऽ लगलनि-

"बाबी!"

"काकी।"

"भौजी।"

"बौआसिन।"

सब चन्द्रमुखीकेँ बजयबा पर तुलि गेल। देह झकझोरि कऽ सोर पाड़ऽ लगलनि।

"एना चुप किएक छी ?"

"होशमे आउ ।"

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

"भगवतीकेँ इएह मंजूर छलनि।"

"हे, गीताक श्लोक सुनू .....।"

"भगवद्भजनमे लागि जाउ।"

"की ? बजैत किएक नहि छी ?

"किछु तऽ बाजू।"

"बाजू।"

"बाजू ने !"

सब आरो जोरसँ झकझोरऽ लगलनि चन्द्रमुखीकेँ।

चन्द्रमुखी बजली - "हमरा भूख लागल अछि। घरमे जे भेटय, आनि दियऽ। हम खाऽ कऽ सूति रहब। आब कथी लेल उपास आ ककरा लेल जगरना।"

शब्दार्थ

हठात् - एकाएक

बिलटि - नष्ट भऽ जाय

अछिंजल - पूजा हेतु पवित्र जल

निदग्ग - दाग रहित

प्रश्न ओ अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नक सही विकल्प चयन करू :

(i) चन्द्रमुखी दाइक पुत्र अछि -

(क) रामू (ख) देबू

(ग) फूल (घ) गुलाब

(ii) माछ खयलासँ बढ़ैत अछि -

(क) बुद्धि (ख) लम्बाइ

(ग) सुन्दरता (घ) संस्कार

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

2. निम्नलिखित रिक्त स्थानक पूर्त्ति करू -

(i) फूल ओकालति पास कयलाक बाद मायकेँ प्रतिमास ..... टाका पठबऽ लगलनि।

(ii) फूल चन्द्रमुखीकेँ ..... शहर लऽ जाय चाहैत।

3. निम्नलिखित वाक्यकेँ आगू शुद्ध-अशुद्ध लिखू-

(i) चन्द्रमुखी दाइ दू कट्ठा जमीन किनलनि।

(ii) चन्द्रमुखी दाइ अपन खर्च बढ़ा लेलनि।

4. लघूत्तरीय प्रश्न -

(i) चन्द्रमुखी कथाक रचयिता के छथि ?

(ii) मरीचिका पर कोन पुरस्कार लेखिकाकेँ भेटलनि।

(iii) चन्द्रमुखीक बालकक नाम की छल ?

(iv) फूलकेँ कोन बीमारी भेलैक ?

(v) फूल केहन पुत्र छल ?

5. दीर्घोत्तरीय प्रश्न -

(i) चन्द्रमुखी कथाक सारांश लिखू।

(ii) चन्द्रमुखी कथाक मूल विचार लिखू ।

(iii) अपन संतान लेल चन्द्रमुखी कोन-कोन कष्ट उठबैत रहलीह।

(iv) चन्द्रमुखी कथाक अहाँकेँ केहन लगैत अछि ?

(v) चन्द्रमुखीक चरित्र-चित्रण करू।

6. निम्नलिखित गद्य खण्डक सप्रसंग व्याख्या करू -

" ककरा छैक हमरा सन बेटा ? लाखमे एक अछि।
कतेक ममता छैक हमरा लेल। नहि, हम मधुबनी नहि रहब।
दू-चारि दिन पाहुन -पड़क जेकाँ रहब। बेटा पुतोहुकेँ
स्वच्छन्द छोड़ि देबैक। ओकरा सभक नव वयस।
इएह तँ वयस थिकैक खयबा-खेलयबाक। ओहिमे

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

बूढ़ लोकक मुड़ियारी देव महा अनर्थ।"

7. निम्नलिखित शब्दमे प्रत्यय -उपसर्ग फराक करू -

निराहार, संतान, ममत्व, अतिचार, व्याकरण, महानता, बुढ़ापा

गतिविधि-

(i) छात्र माय-बेटाक चित्र बनाय एक दोसरक स्नेहकेँ देखाबथि।

(ii) बालकक जीवन निर्माणमे मायक भूमिकाक उल्लेख करू।

(iii) शहरी ओ ग्रामीण माताक गति-विधिक लेखा-जोखा प्रस्तुत करू।

निर्देश -

(i) शिक्षक छात्र लोकनिक बीच एक आदर्श भारतीय मायक चित्रण करथि।

(ii) माय-बेटाक पवित्र सम्बन्ध पर छात्र लोकनिक विचारक संकलन करू।

(iii) शिक्षक छात्रलोकनिसँ किछु एहन गीत गबाबथि जाहिमे मायक त्यागक वर्णन हो।

---

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

राज मोहन झा

राज मोहन झाक जन्म 27 अगस्त 1934 मे वैशाली जिलाक बाजितपुर गाममे भेल छलनि। मैथिली कथा साहित्यक विकासमे राज मोहन झाक योगदान उल्लेखनीय अछि। हिनका ई प्रतिभा पितामह जनार्दन झा 'जनसीदन' एवं पिता हरिमोहन झासँ प्राप्त भेल छनि। कौलिक संस्कारक प्रभाव हिनक रचना पर पड़ल अछि। मनोविज्ञानमे एम. ए. कयलाक बाद ई बिहार सरकारक श्रम एवं नियोजन विभागमे पदाधिकारी छलाह, जाहि पदसँ ओ 1994 मे सेवानिवृत भेलाह।

हिनक कथाक वस्तु एवं शैली अन्य कथाकारसँ भिन्न अछि। हिनक पहिल कथा 1957 मे 'पल्लव' पत्रिकामे छपल छनि। हिनक पहिल कथा संग्रह 'एक आदि : एक अन्त' 1965 मे, दोसर कथा संग्रह 'झूठ-साँच', 1972 मे तथा तेसर कथा संग्रह 'एकटा तेसर' 1984 मे छपलनि, हिनक निबन्ध संग्रह 'गलतीनामा', मनहि विद्यापति, टिप्पणीत्यादि आदि बेस चर्चित छनि। आइ काल्हि परसू (1993), अनुलग्न (1996), अभियुक्त विस्थापित निष्कासन इत्यादि -इत्यादि (2003) छपल छनि। 1982 सँ साहित्यिक पत्रिका 'आरम्भक' सम्पादन तथा प्रकाशन केलनि अछि।

हिनका 1986 मे 'वैदेही' पुरस्कार ओ 1996 मे 'आइ काल्हि परसू ' कथा संग्रह पर साहित्य अकादेमी पुरस्कार भेटल छनि। 2009 क प्रबोध साहित्य सम्मानसँ ई सम्मानित भेल छथि।

हिनक कथा मध्यम वर्गक पारिवारिक जीवनक व्यथाकेँ अभिव्यक्ति दैत अछि। निबन्धक आ समीक्षक रूपमे सेहो ई प्रसिद्ध छथि मुदा हिनक कथाकार रूप मुकुट जकाँ शोभित अछि। भोजन कथामे समयक संग बदलैत परिस्थिति, विचार आ रुचिक वर्णन अछि। मनुष्यक नियति कतेक काल-प्रभावित अछि, तकरा ई कथा अत्यन्त मार्मिक ढंगसँ रखैत अछि।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

भोजन

हम भितरका कोठरीमे कल्हुका क्लास लेल नोट तैयार करैत रही, आ ममता ड्राइंग रूममे कापी जाँचि रहल छलि। कने काल बाद ममताकेँ सुनलहुँ रमुआकेँ जोरसँ आदेश दैत- 'खाना भ' गेलौ रे, रमुआ ? भ' गेलौ तँ लगा।'

हमरा छल जे ई आखिरी नोट तैयार क' ली, तहन उठी। जोरसँ बजलहुँ -'हमरा कने ई नोट पूरा क' लेब' दिय'। कोन हड़बड़ी अछि, एखन (घड़ी उठा क' देखलहुँ) साढ़े आठे बाजल अछि।'

'तँ साढ़े आठ अहाँकेँ कम्म बुझाइए ? हमरा भोरे आठे बजे कालेज पहुँचि जयबाक अछि ।'

'हमरो कालिह नौए बजेसँ क्लास अछि।'-हम चिकरलहुँ।

'अहाँकेँ की अछि, अपन आठ बजे उठब। हमरा भोरे उठि सभ किछु करबाक रहैए। नोट पूरा क' लेब अपन खयलाक बाद।'

नहि मानतीह ई। हम किताबकेँ तकियापर उन्टा सुता बाहर अयलहुँ। ममता कापी जाँचिए रहल छलि। कहलिऐ -'वाह, हमरा तँ बन्द करबा देलहुँ, आ अपने पोथा पसारने छी।'

'यैह, जा रमुआ थारी अनैए!' कापीसँ मूड़ी उठौने बिनु ममता बाजलि।

'बेस, हम अहाँकेँ कय बेर कहने छी जे कमसँ कम नौ बाज' दियौ। केओ सभ्य लोक नौ बजेसँ पहिने नइ खाइत अछि।

'तँ नौ तँ बाजिए जायत खाइत-खाइत।' -ममता कापीमे नम्बर चढ़बैत बाजलि।

हम ओकरा आगाँसँ कापी झिकैत कहलिऐ-'नौ बजे माने खा क' उठी नहि , नौ बजे खाय बैसी।'

'अच्छा एक्के बात भेलैं' ममता सोझ होइत बाजलि- 'अहीं जकाँ आठ बजे धरि हमहूँ सूतल नहि रहै छी। हमरा भोरे उठि ...'

'अच्छा एकटा कहू?' -बात कटैत हम कने गंभीर भ' ममताकेँ पुछलिऐ-

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

'भोरे उठि अहाँकेँ की सभ करबाक रहैए, जखन कि सभटा काज तँ रमुआ करैत अछि ?'

'अहा हा! आ रमुआकेँ भोरे भोर के उठबैत छै ?' ममता चहकैत बाजलि-'एक दिन हम छोड़ि दिऐ तँ ई छौंड़ा तँ और नौ बजे उठत। आ, एक बेर उठौलासँ उठि जाइत ई छौंड़ा, तहन कोन बात छलै। एह, फेर जा क' सूति रहत। एकरा तँ दस बेर उठबियौ तहन जा क' तँ एकर आँखि फुजैत अछि! कय दिन तँ हमरा पानि ढार' पड़ल अछि छौंड़ा पर, तेहन ई अछि।'

हमरा कने अमानुषिक जकाँ लागल। कहलिऐ ममताके -'अहाँ बड़ निरदयी छी। ममता तँ बेकारे अहाँक नाम रखलक, जे केओ रखलक से। अच्छा, के रखलक अहाँक नाम सत्ते ?'

'आब छोड़ू, हमरा नइँ मन अछि के रखलक।' ममता अपन कापीक थाक उठबैत बाजलि। रमुआ पानिक जग आ दू टा गिलास आनि क' टेबुलपर राखि गेल। ई एहि बातक पूर्व सूचना छल जे आब ओ थारी आनत। खाय पड़त।

हम ममताकेँ कहलिऐ - 'अच्छा, अहाँकेँ एना नहि लगैत अछि जे, हमर मतलब अछि, भोजन जे हमसभ करै छी नित दिन, से नहि लगैत अछि जे एकटा यांत्रिक प्रक्रियाक अन्तर्गत क' लैत छी ? माने, अपन आन सभ काज जकाँ ? भोजन काज जकाँ नहि करबाक चाही।'

'वाह, भोजनो तँ एकटा काजे भेलै। काज तँ भेबे केलै ।'

'तेना नहि । हमर मतलब 'भोजन करब' क्रियासँ नहि छल। 'भर्ब' तँ भेबे कैलै। 'वर्क' नहि होयबाक चाही ई। एकरा 'टास्क' बुझि क' नहि कयल जयबाक चाही ।' - हम बुझौलिऐ।

'अच्छा ई सभ फिलॉसॉफी अपन राखू अपनहि लग। अहाँक हिसाबेँ जँ चल' लागी हम तँ भ' गेल! कोनो काजे नहि हो।'

रमुआ थारी राखि गेल। हम एकटा उड़ैत दृष्टि थारीक वृत्तमे दौड़ौलहुँ । बाटीकेँ अपना और लग घुसकबैत हम ममताकेँ पूछलिऐ-'अच्छा, कालिह्यो तँ भरिसक यैह आलू-परोड़ आ रामतरोइक भुजिया बनौने रहय! नहि ?'

ममता रोटीक टुकड़ा तोड़ि दालिमे डुबबैत बाजलि -'तँ और की बनाओत ? आइ-कालिह गनि-गुथि क' यैह तँ तीन-चारिटा तरकारी भेटै छै- भाँटा, करैल आ कि यैह परोड़ आ

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

रामतरोइ। परोड़ खाइत - खाइत मुदा हमरो मन भरि गेल अछि सत्ते।'

'खाली सैह नहि ने। हमरा तँ लगैत अछि, परोड़क बदला मानि लिय' जे करैले बनबय ई, तैयो हमरा नहि लगै अछि जे स्वादमे कोनो विशेष अन्तर पड़' वला अछि। असलमे बनयबाक एकर जे पद्धति कहू वा प्रक्रिया छैक, से एक्के छै। तँ चाहे परोड़ बनबओ वा करैल, स्वाद एके रंग होइ छै करीब-करीब। किछु हमसभ खाइतो तेना छी, जाहिमे स्वादक प्राय: बहुत स्थानो नहि रहै छै। .... नहि ?'

ममता पानिक घाँट ल' क' बाजलि - आब जे बनबैत अछि बेचारा, बना तँ लैत अछि। हमरा ओते समयो नहि रहैए जे किछु देखाइयो देबै।'

हम मन पार' लगलहुँ जे ममताक हाथक भोजन पछिला बेर हम कहिया कयने रही। नहि मन पड़ल। मन भेल जे ममतेसँ पुछि लिऐक। मुदा तुरंत डर भेल जे एहि बातक ओ आन अभिप्राय ल' लेत।

'आब की सोच' लगलहुँ अहाँ ?' ममता मुँहमे कौर लैत पुछलक।

'नहि, सोचब की ? सोचैत रही जे ई सभ टा निघँटयबाक अछि ।' - हम आगाँक थारी-बाटी दिस इंगित करैत कहलिएक।

'हे, खा लिय' जल्दी । ओकरो छुट्टी हेतइ !' -हमरा देरीसँ चिबबैत देखि ममता टोकलक।

रमुआ दूधक कटोरा ल' क' आयल तँ ममता ओकरा पापड़ सेदि क' आन' कहलकै।

'अच्छा, एना नहि भ' सकैत अछि कहियो जे ..... हम कहैत रही एक दिन जँ एना करी .....'

'कोना करी ?' -ममता टोकि क' हमरा दिस ताक' लागलि।

'असलमे हमर एकटा बहुत दिनसँ इच्छा अछि। इच्छा ई अछि जे एक दिन अहाँ हमरापर जबर्दस्ती नहि करी खाय लेल। हमर जखन मन होयत, माने हमरा जखन खूब भूख लागल, रातिमे एक वा दू बजे, अथवा जखन, तखन खाइत जाइ!' हम प्रस्ताव रखलहुँ।

'हँ आ रमुआ बैसल रहत ता धरि ?' - ममता आँखिमे प्रश्न ल' क' तकलक।

'मानि लिय' ओ अपन खा क' सूति रहत।' हम आँखिमे प्रश्न ल' क' तकलिऐक।

'नहि, हम नहि जागल रहब ता धरि। हमहूँ खा क' सूति रहब। अहाँ लेल परसि क'

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

राखि देत, अहाँ अपन उठि क' खा लेब जखन मन हो।' - ममता सोझे कन्नी काटि लेलक।

एसगरे खयबाक विकल्प हमर उत्साह ठंढा क' देलक। रमुआ पापड़ सेदि क' ल' अनलक आ हमरसभक गप्प सुन' ठाढ़ भ' गेल। ममता ओकरा कहलकै - 'जो तोहूँ अपन परसि क' ल' ले। खा क' सूत जल्दी, भोरे उठबाक छौ।

हम पापड़ तोड़ि दाँत तर देलहुँ। कुड़कुड़बैत -कुड़कुड़बैत पता नहि हम कोना बहुत दिन पहिलुका देखल गामपरक एकटा दृश्यक आगाँ आबि क' ठाढ़' भ' गेलहुँ। बाबा भोजन पर बैसल छथि, आ मैंयाँ आगाँमे पंखा ल' क' बैसलि छनि। कतेक रास गप्प आ सूचनाक आदान-प्रदान दुनू गोटेकेँ एही मध्य होइन। बाबा बहुत रुचिपूर्वक भोजन करथि। धात्रीक चटनी हुनका दुनू साँझ अनिवार्य छलनि। बाबाकेँ खायल भ' जानि तँ मैंयाँ भूमिपर हाथ रोपैत उठि क' ठाढ़ होथि - 'थम्हू , दही नेने अबैत छी।' हमर बाल-मानस पर ई छवि लगैए बहुत गहीरेँ जा क' अंकित भ' गेल अछि । तँ हमरा आइयो ओहिना मन अछि। एकटा कारण ईहो भ' सकैत अछि जे बाबाक भोजन करबाक ई दृश्य भोजनक प्रति एकटा आकर्षक स्वाद उत्पन्न करैत अछि। ओहि जमानामे लोक होइतो छल भोजनक प्रेमी। मैंयाँ सभ दिन साँझमे बाबासँ पुछनि- 'आइ की तरकारी बनतै रातिमे ?' आ बाबा कहथिन। खाली तरकारिक नामे नहि, कोना बनतै सेहो कहथिन। जेना, भाटेँ साग द' क' , अथवा सजमनि मुरइ द' क'। .....

हमरा मन भेल जे ई बात ममताकेँ कहिऐक। मुदा हमरा लागल जे एकरा ओ सही परिप्रेक्ष्य मे नहि ल' स्त्री जाति पर पुरुषक आधिपत्य-माने एकरा नारी स्वातंत्र्यक प्रश्नसँ जोड़ि क' देखत। तँ बात बदलि क' पुछलिऐ - 'अच्छा, अहाँक अपन दादा मन छथि?'

ममता दूधक कटोरा उठा 'सिप' कर' लागल छलि। ओ कने काल हमर आँखि तकैत रहलि, जेना एहि प्रश्नक तात्पर्य बुझबाक प्रयास क' रहल हो। बाजलि - 'हँ, मन छथि। मुदा एखन हमर दादा अहाँकेँ कत' सँ मन पड़ि गेलाह। अहाँ तँ हुनका नहि देखलियनि। अच्छा, मैंयाँ मन छथि ?'

'किए नहि मन रहतीह ? मुदा अहाँ ई सभ फालतू बात की सोच' लगैत छी थारी आगाँमे राखि क' ?'

हम अप्रतिभ भ' गेलहुँ। नीक नहि लागल ममताक 'फालतू' शब्दक प्रयोग । हम पानि पीबि दूधक कटोरा थारीमे आगाँ रखलहुँ।

ममतासँ किछु कहब व्यर्थ छल। ओ अपन दूधक कटोरा शेष क' लेने छलि आ हमर

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

प्रतीक्षामे बैसल छलि। हम ओकरा उठ' कहलिऐक, मुदा ओ बैसल रहलि। बाजलि जे तखन तँ अहाँ और देरी करब।

कने काल बाद ओ फेर नेहोरा कयलक - 'हे, छुट्टी दियौ ओहू छौंड़ाकेँ। जते जल्दी खयबै, ओकरहु काज होयतै।'

हम बाबाक जमानासँ आगाँ बढ़ि बाबूजीक युगमे आबि गेल रही। बाबा जकाँ ओ सभ दिन कोन तरकारी बनतै, से फरमान तँ नहि जारी करैत रहथिन, मुदा मायसँ पुछथिन जरूर जे आइ की तरकारी बनल अछि ? की तरकारी बनौलीह, से माय अपने निर्णय लेथि। ई भार बाबू जी माय पर छोड़ि देने रहथिन प्राय:। अथवा माय अपनहि ई अधिकार स्वत: ल' लेने रहथि। एक युगमे एतेक प्रगति तँ होबहिक चाही। हम सोचलहुँ, निर्णय जकर ककरो रहैत होइक आ अधिकार चाहे जकर होइक, ई बात छलै जे भोजन एकटा रुचिकर आ आकर्षक वस्तु होइत छलै ताहि दिन। हमरा हँसबाक मन भेल जे आब हमरा सभक युगमे आबि क' ई निर्णयक अधिकार पति आ पत्नीक हाथसँ निकलि नौकरक हाथमे आबि गेल अछि।

हमर ध्यान ममता दिस गेल जे हमर प्रतीक्षामे बैसल छलि। हमरा लागल जे एतीकालसँ हमरापर नजरि गड़ौने ममता हमर मनमे आयल सभटा भाव जेना पढ़बाक प्रयास करैत रहलि अछि। हम कटोरा उठा एके साँसमे बचल सभटा दूध पीबि गेलहुँ।

शब्दार्थ

चहकैत	-	प्रसन्न होइत
अमानुषिक	-	अमानवीय
वृत्त	-	घेरा
धात्री	-	आँवला
परिप्रेक्ष्य	-	परिवेश
आधिपत्य	-	अधिकार

प्रश्न ओ अभ्यास

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न -

निम्नलिखित खाली स्थानक पूर्त्ति करू -

(क) हम कटोरा उठा एके साँसमे बचल सभटा ..... पीबि गेलहुँ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

(ख) हम ..... तोड़ि दाँत तर देलहुँ।

2. निम्नलिखित वाक्यक समक्ष शुद्ध-अशुद्ध लिखू -

(क) रमुआ मालिक छल।

(ख) कथानायकक पत्नी ममता छलीह।

3. निम्नलिखितमे सँ सही विकल्प अपन उत्तर पुस्तिकामे लिखू-

(i) ममता की करैत छलीह ?

(क) नोट तैयार करैत छलीह (ख) कॉपी जाँचि रहल छलीह।

(ग) पुस्तक पढ़ि रहल छलीह (घ) चिट्ठी लिखैत छलीह।

(ii) ममता रमुआकेँ की आनय कहलैक ?

(क) केरा (ख) भात (ग) दही (घ) पापड़

4. लघूत्तरीय प्रश्न -

(i) लेखक क्लास लेल की तैयार करैत छलाह ?

(ii) ममता ड्राइंग रूममे की क', रहल छलि ?

(iii) ममता कॉपी पर की चढ़बैत छलि?

(iv) भोजन आइ कोन क्रियाक अन्तर्गत अबैत अछि ?

(v) कथामे ममता छौंड़ा ककरा कहने अछि ?

5. दीर्घोत्तरीय प्रश्न -

(i) भोजन कथाक सारांश लिखू।

(ii) भोजन कथाक उद्देश्य स्पष्ट करू।

(iii) प्राचीन आ आधुनिक भोजनक प्रसंग लेखकक विचार स्पष्ट करू।

(iv) ममताक चरित्र चित्रण करू।

6. निम्नलिखिते गद्य खण्डक सप्रसंग व्याख्या करू :

(क) अच्छा, अहाँकेँ एना नहि लगैत अछि जे, हमर मतलब अछि, भोजन जे

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

हमसभ करैत छी नित दिन, से नहि लगैत अछि जे एकटा यांत्रिक प्रक्रियाक अन्तर्गत क' लैत छी, माने, अपन आन सभ काज जकाँ ? भोजन काज जकाँ नहि करबाक चाही।

(ख) तेना नहि। हमर मतलब' भोजन करब' क्रियासँ नहि छल। भर्ब तँ भेवै कैले। 'वर्क' नहि होयबाक चाही ई ।

---

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

दीनेश्वर लाल 'आनन्द'

दीनेश्वर लाल 'आनन्द' क जन्म सहरसा जिलाक महिला गाममे भेल छलनि, सितम्बर 1936 ई. मे । हिनक जन्म भेलनि आ एकहन्तरि वर्षक आयुमे मार्च, 2007 ई. मे ई देह त्याग कयलनि।

हिनक सम्पूर्ण जीवन संघर्षमय रहल। बी.ए. , एम. ए. ई स्वतंत्र छात्रक रूपमे कयलनि। तकरा बाद पि.एच. डी. भेलाह। हिनक कर्मठता एवं लगनशीलताक परिणाम छल जे ई बिहार सरकारक संयुक्त सचिवक पदसँ सेवा-निवृत भेलाह। जन-शिक्षा साधन केन्द्र 'दीपायतन' क निदेशक सेहो छलाह।

दीनेश्वर लाल 'आनन्द' मुख्यतः हिन्दीमे लिखलनि। 'बालक' आ 'चुन्नू-मुन्नू' क यशस्वी सम्पादकक रूपमे हिनक ख्याति भेलनि। बाल-साहित्यक लगभग दू दर्जन पोथीक ई रचयिता छथि। एकर अतिरिक्त विद्यापति विषयक ग्रन्थक सम्पादन आ लेखनमे सेहो हिनक रुचि छलनि। विद्यापति-पदावलीक व्याख्यातारूपमे हिनक उल्लेखनीय योगदान अछि।

डॉ. आनन्द पर्यावरण विशेषज्ञक रूपमे सेहो जानल जाइत छथि। 'वन' नामक हिनक पद्य-रचना बालोपयोगी साहित्यमे बेस चर्चित अछि। प्रस्तुत निबन्धमे पर्यावरणक स्थिति आ समस्या तथा ओकर सुधारक उपाय एवं आवश्यकताक प्रसंग हिनक कथ्य विचारणीय अछि।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

पर्यावरण

मनुष्य हो वा पशु, गाछ-वृक्ष हो वा घास-पात- सभमे जीवन होइत छैक, जीवनी शक्ति होइत छैक। एहि जीवनी-शक्तिक सुरक्षाक हेतु एक प्रकारक वातावरणक आवश्यकता होइत छैक । ओकरे पर्यावरण कहल जाइत छैक।

पर्यावरणक महत्त्व अनादि कालसँ अछि। वेदमे कामना कयल गेल अछि -मधुवाता ऋतायते ..... मधुब्रन्ति सिन्धवः ..... वनस्पतिर्मधुवान .....। बसात, पानि तथा वनस्पति-प्रकृतिक ई तीनू वस्तु प्रत्येक जीव लेल जरूरी अछि। ई तीनू पर्यावरणक अंग थिक। तीनूक स्वच्छता प्रत्येक प्राणीक अस्तित्व-रक्षाक अनिवार्य आधार थिक।

प्रत्येक जीव-जन्तु लेल सभसँ आवश्यक वस्तु अछि वायु। वायु बिना केओ जीवित नहि रहि सकैत अछि। तँ वायुक स्वच्छता पर ध्यान देब परमावश्यक। हमर पुरखालोकनि एहि बात पर विशेष ध्यान दैत छलाह। वातावरणकेँ स्वच्छ रखबाक हेतु घर-घरमे होम करबाक परिपाटी छल। होममे ओहने वस्तु सभ जराओल जाइत छलैक जाहिसँ वातावरण शुद्ध होइत छल। किन्तु, पहिने लोकक संख्या कम छल। कल-कारखाना आ स्कूटर-कारसँ वायुमंडल प्रदूषित नहि होइत छल। आजुक युगमे वायुमंडलकेँ प्रदूषणमुक्त राखब जतबे आवश्यक अछि ततबे कठिन।

हमसभ जनैत छी जे बसातमे अनेक प्रकारक गैस मिलल अछि। एहिमे प्रमुख अछि आक्सीजन, कार्बनडायआक्साइड तथा नाइट्रोजन । आक्सीजन मनुष्यक हेतु आवश्यक अछि आ कार्बनडायआक्साइड गाछ-वृक्ष लेल। मनुष्य साँस द्वारा वायु अपना भीतर लऽ जाइत अछि। फेफड़ामे जा कऽ वायु देहक लिधुरकेँ साफ करैत अछि। ओकरा विकारमुक्त करैत अछि। विकृत वायु प्रश्वास द्वारा बाहर निकलि जाइत अछि। मुदा, सभ नहि निकैल पबैत अछि। कोनो रूपमे जे रहि जाइत अछि से हमर शरीरतंत्रकेँ प्रभावित करैत अछि आ हम विभिन्न प्रकारक रोगसँ ग्रस्त भऽ जाइत छी। प्रदूषित वायुमे साँस लेलासँ दम फुलऽ लगैत अछि। धूआँ, धूरामे मिश्रित कण, सड़ल-गलल वस्तुक गन्ध आदि हवा -बसातकेँ दूषित करैत अछि। जतऽ-ततऽ मल-मूत्र त्याग करब वायुक प्रदूषणक मुख्य कारण थिक। तेँ एहि सभ बात पर ध्यान देब

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

आवश्यक अछि। पैखाना, मोड़ी आ पानिसँ भरल छोट-मोट खाधि सभकेँ झाँपि कऽ रखलासँ वायु प्रदूषित होयबासँ बचैत अछि। घरमे पैघ-पैघ खिड़की लगायब, सुतैत काल खिड़की सभकेँ खुजल राखब तथा भोरक स्वच्छ वायुमे टहलब स्वास्थ्यक हेतु लाभकारी अछि। पेट्रोल-डीजलसँ चलऽवला वाहनकेँ नियमानुसार धूआँसँ मुक्त राखब नितान्त आवश्यक अछि।

वायुक बाद दोसर सभसँ महत्त्वपूर्ण वस्तु थिक जल। जलकेँ जीवन सेहो कहल जाइत अछि। प्रत्येक जीव-जन्तु आ गाछ -वृक्षकेँ जलक आवश्यकता अछि। पहिने नदीक जल शुद्ध रहैत छल, तेँ नदीमे स्नान करब पवित्र काज मानल जाइत छल। मुदा आब से बात नहि अछि। अनेक-प्रकारक गंदगी नदीक पानिमे मिलैत अछि आ ओकरा दूषित कऽ दैत अछि। कल-कारखानक गदौस बहि कऽ नदीमे खसैत अछि आ नदीक पानिकेँ ओ विषाक्त कऽ दैत अछि। गंगा सन पवित्र ओ विशाल नदीक पानि सेहो प्रदूषित भऽ गेल अछि।

कहबी छैक जे पानि पीबी छानि कऽ आ बात बाजी जानि कऽ। कहबाक तात्पर्य ई जे अशुद्ध जलक उपयोग हानिकारक थिक। जलक महत्त्वकेँ ध्यानमे राखि कऽ हमर सभक पुरखालोकनि पोखरि आ इनार खुनबैत छलाह। पोखरि-इनार खुनायब प्रतिष्ठाक कार्य बुझल जाइत छल। मिथिलामे कतेक राजा तेहन-तेहन पोखरि खुनौने छथि, जाहि कारणेँ हुनकालोकनिक नाम आइ धरि लोक लैत अछि। रजोखरि पोखरि नामी अछि। मिथिलांचल नदीमातृक प्रदेश थिक। तेँ एहिठाम जलाशयक प्रचुरता अछि। एकर उपयोग गामक लोक करैत अछि। किन्तु, आइ-काल्हि गामो घरमे पोखरि-इनारक पानिकेँ उपयोगमे आनब लोक छोड़ने जा रहल अछि। तकर मुख्य कारण एहि सभ जलाशयक दूषित होयब थिक। आब कलक पानि बेसी शुद्ध बूझल जाइत अछि। मुदा, कलक जलकेँ सेहो विभिन्न प्रकारेँ स्वच्छ बना कऽ पीबाक आवश्यकता होइत अछि। तात्पर्य ई जे वायु जकाँ जल सेहो जीव मात्रक लेल आवश्यक अछि आ तेँ जलाशय आ जलागारक स्वच्छता पर ध्यान देब पर्यावरणक निर्मलता हेतु अनिवार्य थिक।

पर्यावरणकेँ स्वच्छ रखबाक लेल सर्वाधिक उपयोगी अछि गाछ-वृक्ष । पहिने लोक गाछ-वृक्ष आ वनक महत्त्व खूब जनैत छल । तेँ घर तथा गामक समीप खूब गाछ लगबैत छल। एक व्यक्तिक लेल दस गाछ लगायब जरूरी बूझल जाइत छल। एक वृक्ष लगा देलासँ दस पुत्र होयबाक, पुण्य होइत छलैक आ एक व्यक्ति लेल दस गाछ लगायब आवश्यक छलैक। एहि प्रकारेँ वृक्षारोपणकेँ धार्मिक भावनाक संग जोड़ि देल गेल छल।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

हम सब जनैत छी जे मनुष्य आक्सीजन लैत अछि आ कार्बनडायआक्साइड छोड़ैत अछि। गाछ-वृक्ष कार्बनडायआक्साइड लैत अछि। आ आक्सीजन छोड़ैत अछि । एहि प्रकारेँ मनुष्य अथवा प्रत्येक जीव-जन्तुकेँ गाछ-वृक्षसँ अन्योनाश्रित सम्बन्ध छैक । यदि, वायुमण्डलमे ऑक्सीजन नहि रहतैक तँ मनुष्यो नहि रहत। आक्सीजनक उपस्थिति गाछ-वृक्षक अस्तित्व पर निर्भर करैत अछि। दुखक बात अछि जे एतेक महत्त्वपूर्ण वस्तुकेँ लोक समाप्त कयने जा रहल अछि।

गाछ-वृक्षक महत्त्व मनुष्यक जीवनमे डेग-डेग पर अछि। चकला-बेलनासँ लऽ कऽ लाठी-भाला धरिमे लकड़ीक उपयोग होइत अछि। केबाड़-खिड़की, चौकी-सन्दूक, खुरपी-हांसू, कोदारि-हर-पालो आदिमे तँ लकड़ीक उपयोग होइते अछि। संगहि संग जारनिक कामे सेहो लकड़ीक उपयोग होइत अछि। जरलाक बादो लकड़ी कोइलाक रूपमे काज अबैत अछि। सिम्मरक लकड़ीसँ दियासलाइक काठी बनैत अछि, तँ देवदारूक लकड़ीसँ पेंन्सिल। जंगल एहि सब उपयोगी वस्तुकेँ उपलब्ध करयबाक, अतिरिक्त सबसँ पैघ काज करैत अछि पर्यावरणकेँ स्वच्छ रखबामे।

गाछ-वृक्ष आ वंनकेँ धार्मिक भावनाक संगहि सांस्कृतिक चेतनाक संग सेहो जोड़ि देल गेल अछि। हजारो साल पहिने लोक जंगलेमे रहैत छल। लोकक संख्या बढ़ैत गेलैक आ लोकक ज्ञानमे वृद्धि होइत गेलैक। लोक गाछ-वृक्षकेँ काटि-काटि गृह निर्माणक काज करऽ लागल। तकरा बाद चासमे सेहो ओकर उपयोग करऽ लागल। जंगलक किछु भाग एहि तरहेँ चास-वासमे परिणत भऽ गेल। जंगली लोक जखन किसान बनल तखन देखलक जे जंगलक प्रभावे वर्षा होइत अछि आ ओहिसँ उपजामे वृद्धि होइत अछि। गाछकेँ ओ सब देवता जकाँ पूजा करऽ लागल। एखनहुँ गाछ-वृक्षक पूजा करब सामान्य बात थिक। एतबे नहि, एहि तरहेँ गाछ-वृक्ष हमर धार्मिक आ सांस्कृतिक जीवनक अंग बनि गेल। ओकर महत्त्वकेँ एहि रूपेँ जीवन चर्याक संग एकात्म कऽ देल गेल जे वृक्षारोपण सहजे होइत रहय।

आजुक लोकक धार्मिक भावनाँ अथवा सांस्कृतिक चेतनामे अवमूल्यन भऽ रहल अछि। तेँ गाछ-वृक्षक महत्त्वकेँ फराकसँ बुझबाक आवश्यकता भऽ गेल अछि। वन-महोत्सव एही अतिरिक्त प्रयासक देन थिक।

एतेक धरि निश्चित जे पर्यावरणकेँ विशुद्ध रखबाक लेल वायु आ जले निर्मलता यदि

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

आवश्यक अछि तँ ताहि लेल सर्वाधिक आवश्यक कार्य अछि वृक्षारोपण। एहिसँ पर्यावरणकेँ स्वच्छ रखबामे सहायता पहुँचैत अछि आ आजुक औद्योगिक विकासक युगमे सेहो मनुष्यक जीवन-यापन सहज-सरल भऽ सकैत अछि। हमर सभक कर्त्तव्य थिक जे पर्यावरणक सुरक्षापर ध्यान दी आ एहि दिशामे होइत प्रयासमे सहायक बनी।

शब्दार्थ

पर्यावरण - परिवेश, परिमंडल

गदौस - गन्दगी

अवमूल्यन - गिरावट , मूल्यमे कम करब

पुरखा - पूर्वज

प्रश्न ओ अभ्यास

1. निम्नलिखितमे सही विकल्प चयन करू -

(i) कोन चीज बिना लोक एक-दू घंटो भरि जीवित नहि रहि सकैत अछि ?

(क) पानि (ख) आगि

(ग) हवा (घ) अन्न

(i) पर्यावरणकेँ स्वच्छ रखबाक लेल सर्वाधिक उपयोगी अछि -

(क) पानि (ख) अन्न

(ग) मनुक्ख (घ) गाछ-वृक्ष

2. रिक्त स्थानक पूर्त्ति करू -

(i) मल-मूत्र यत्र-तत्र त्याग करब वायुक ..... मुख्य कारण थिक?

(ii) गाछ-वृक्ष हमर धार्मिक आ ..... जीवनक अंग बनि गेल।

3. निम्नलिखित वाक्यमे शुद्ध-अशुद्ध चयन करू-

(i) गाछ-वृक्षक लेल हाइड्रोजन गैस आवश्यक अछि।

(ii) वातावरणकेँ स्वच्छ रखबाक हेतु घर-घरमे होम करबाक परिपाटी छल।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

4. वस्तुनिष्ठ प्रश्न -

(i) वायुक बाद दोसर सभसँ महत्त्वपूर्ण वस्तु की थिक ?

(ii) मनुष्यक हेतु कोन गैस आवश्यक अछि ?

(iii) हमरा लोकनि कोन गैस छोड़ैत छी ?

(iv) पर्यावरणक तीन मुख्य अंग कोन-कोन अछि ?

(v) पर्यावरण ककरा कहल जाइछ ?

5. दीर्घोत्तरीय प्रश्न -

(i) पर्यावरण पर एक निबन्ध लिखू।

(ii) वनक उपयोगिता पर अपन विचार प्रस्तुत करू।

(iii) पहिने वृक्षारोपणक कोन उद्देश्य छलैक ?

(iv) नदी ओ पोखरिक महत्त्वक वर्णन करू।

(v) आइ धार्मिक आ सांस्कृतिक चेतनाक अवमूल्यनसँ कोन समस्या उत्पन्न भऽ रहल अछि ?

6. जल, वृक्ष, वन, घर, नदी शब्दक तीन-तीन पर्यायवाची शब्द लिखू।

गतिविधि -

(i) पर्यावरणक रक्षाक विभिन्न उपादानक नाम लिखू।

(ii) वर्षा नहि होयबाक कारणक पता लगाउ।

(iii) पानि पीबी छानि कऽ आ बात बाजी जानि कऽ लोकोक्तिक पर अपन विचार प्रकट करू।

(iv) प्रदूषित पर्यावरणक दृश्यक एक चित्र बनाउ।

(v) जनसंख्या वृद्धि पर्यावरणकेँ कोनतरहेँ प्रदूषित कऽ रहल अछि ?

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

निर्देश -

(i) शिक्षक वर्गमे पर्यावरण पर भाषण प्रतियोगिताक आयोजन करथि।

(ii) शिक्षक वर्गक कोनो छात्रसँ पर्यावरण संबंधी वेदवचनक पाठ कराबथि।

(iii) मिथिलांचलक प्रमुख पोखरि सभक एक सूची शिक्षक वर्गक विद्यार्थी लोकनिसँ बनाबथि।

(iv) शिक्षक छात्र-छात्रा लोकनिसँ मरुभूमिक चित्र बनबाए ओतय वृक्षारोपण कयऽ वर्षाक एक सुन्दर दृश्यक निर्माण कराबथि।

---

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

भाग्यनारायण झा

भाग्यनारायण झा क जन्म दरभंगा जिलाक कारज गाममे भेल छलनि। हुनक जन्मतिथि 12 जनवरी 1941 ई0 अछि। ओ राजनीति शास्त्रमे एम. ए. ओ बी. एल. उत्तीर्ण छथि। पत्रकारिताकेँ ओ अपन जीवन-यापनक आधार बनौलनि। ओ दैनिक 'आर्यावर्त एवं हिन्दुस्तान' क अलावा 'दिनमान' सँ जुड़ल पत्रकार छलाह। आइ काल्हि ओ 'दैनिक जागरण' मे समीक्षक छथि।

हुनक सामाजिक नाटक 'मनोरथ' (1965 ई0), एकांकी संग्रह 'सोनक ममता' (1970 ई0) ओ यात्र वृत्तांत 'परदेश' (2008 ई0) प्रकाशित छनि। 'वैदेही' (दरभंगा) ओ 'मिथिला दर्शन' (कोलकाता) मे बहुत रास मैथिली आलेख सभ प्रकाशित अछि।

पटनाक सामाजिक ओ सांस्कृतिक संस्था 'चेतना समिति' सँ सम्बद्ध भऽ मैथिलीक प्रति समर्पित छथि। झाजी जर्मनी, फ्रांस, केनिया, मारीशस आदि देशसभक यात्रा कयने छथि।

'भारतीय संविधान निर्माता डा0 बी0 रा0 अम्बेदकर' मे हुनक जीवनवृत्त संक्षेपमे देल गेल अछि। अस्पृश्य जातिमे जन्म लेने हुनका ज्ञानार्जनक लेल अनेक तरहक संघर्ष करय पड़लनि। मुदा ओ देश-विदेशमे उच्चतम शिक्षा प्राप्त कयलनि। ओ अस्पृश्य समुदाय लेल 'हरिजन' शब्द के प्रति विरोध कयलनि एवं जातिप्रथाक कटु आलोचना कयलनि। अंतमे ओ बौद्धधर्म स्वीकार कऽ लेलनि । 1952 मे राज्यसभाक सदस्य मनोनीत भेलाह आ मृत्यु पर्यन्त ओहि पद पर रहलाह। आजादीक बाद ओ कांग्रेसनीत सरकारमे कानून मंत्री बनलाह। भारतीय संविधान लिखबाक भार भेटलनि। डा0 अम्बेदकरक व्यक्तित्व बहु आयामी छल।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

भारतीय संविधान निर्माता डॉ० बी० आर० अंबेदकर

भारतीय संविधानक मुख्य निर्माता आ बाबा साहेबक नामसँ विख्यात डॉ. भीमराव रामजी अंबेदकरक जन्म 14 अप्रैल 1891 कँ तत्कालीन सेंट्रल प्रांत (आब मध्य प्रदेश) मे ब्रिटिश सरकार द्वारा स्थापित शहर आ सैनिक छावनी मोहवामे हिन्दू महार जाति परिवारमे भेल छलनि। महार जाति अस्पृश्य बूझल जाइत रहैक। डा. अंबेदकर अपन पिता रामजी मालोजी आ माता भीमा बाई मुबादकरक चौदहम एवं अंतिम संतान रहथि। ओना तँ हुनक परिवारक पृष्ठभूमि आधुनिक महाराष्ट्रक रत्नागिरी जिलामे अंबेदकर शहर रहनि। अंबेदकर वंशज दीर्घ अवधि धरि ब्रिटिश इस्ट इंडिया कम्पनीक सेनामे कार्यरत रहथि। प्रतिभासंपन्न डा. भीमराव अंबेदकरक पिता भारतीय सेनाक मोहवामे सुबेदारक पद धरि कार्यरत रहलाह। डा. अंबेदकरक पिता रामजी सकपाल अपन धीयापूताकँ हिन्दू विषय पढ़बाक लेल प्रोत्साहित कयलनि। सकपाल साहेब धीयापूताकँ सरकारी स्कूलमे पढ़ेबाक प्रयासमे सफलता प्राप्त कयलनि, किएक तँ ओहि समयमे जातिक विरोध सेहो होइत रहैक। रामजी सकपाल जखन 1894 मे अवकाशग्रहण कयलनि तँ हुनक परिवार सतारा चल गेलनि। संयोग एहन जे भीमरावक माताक देहांत भऽ गेलनि। मात्र तीन पुत्र बलराम, आनन्द राव आ भीमराव एवं दू पुत्री - मंजुला आ तुलासामे सँ मात्र भीमराव परीक्षा सभमे सफलता प्राप्त कयलनि। आगू पढ़लनि। हुनक गामक नाम रहनि अंबेद। 'अंबेद' रत्नागिरी जिलामे रहैक। तँ हुनक (भीमराव) पिता सकपाल अपन गामक नाम पर एकटा ब्राह्मण शिक्षकक सलाह पर 'अंबेदकर' रखलनि।

जीवनमे उतार-चढ़ाव प्रकृतिक नियम छैक। ई बात अंबेदकरक संग सेहो घटित होइत अछि। हुनक पिता रामजी सकपाल 1898 मे पुन: विवाह कयलनि। हुनक परिवार तखन बम्बई (आब मुंबई) मे रहय लागल। भीमराव बम्बईक एलीफिंस्टन रोडक समीप सरकारी उच्च विद्यालयमे पहिल अस्पृश्य विद्यार्थी रहथि। 1907 मे भीमराव अपन अद्भुत प्रतिभाक परिचय देलनि आ ओ बम्बई विश्वविद्यालयसँ मैट्रिक परीक्षोत्तीर्ण भेलाह। ओ पहिल अस्पृश्य युवक रहथि जे भारतक कालेजमे दाखिल भेलाह। ओही समयमे हुनक विवाह दपोलीक नौवर्षीय बालिका रामाबाई संग हिन्दू रीति-रिवाजसँ भऽ गेलनि।

हुनक संघर्षमय जीवनमे नव उत्साहक माहौल बनलनि। 1908 मे भीमराव एलफिंस्टन कालेजमे नाम लिखौलनि आ हुनका बड़ौदाक गायकवाड शासकसँ पच्चीस टाकाक छात्रवृत्ति

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

प्रतिमाह भेटय लगलनि। एतबे नहि, बड़ौदाक गायकवाड शासक, सहयाजी राव तृतीय हुनका संयुक्त राष्ट्र अमेरिकामे उच्च शिक्षामे अध्ययन करबाक लेल छात्रवृत्तिक व्यवस्था सेहो कऽ देलखिन। कहलो जाइत छैक जे "जखन नीक दिन अबैत छैक तँ माटि छुलासँ सोन भऽ जाइत छैक आ अधालाह दिनमे सोन छुलो सँ माटि।" ई प्रकृतिक यथार्थताक बोध करबैत अछि।

प्रतिभावान अंबेदकर 1912 मे अर्थशास्त्र आ राजनीतिमे डिग्री हासिल कयलनि। तदुपरांत, बड़ौदा स्टेटमे नौकरी करबाक ओ तैयारी करथि कि ओही वर्षमे हुनक पत्नी यशवंत नामक पुत्रकेँ जन्म देलनि। प्रकृतिक विधान पर ककरो अंकुश नहि। अंबेदकर अपन परिवारकेँ व्यवस्थित कर' चाहैत रहथि आ कि हुनक बीमार पिताक देहावसान 2 फरवरी 1912 केँ भऽ गेलनि। किछु मासक उपरांत, भीमरावक जीवनमे फेर नव अध्याय शुरू भऽ गेलनि । हुनका गायकवाड शासक प्रतिमाह साढ़े एगारह डालरक छात्रवृत्ति अमेरिकाक कोलंबिया विश्वविद्यालयमे पढ़बाक लेल मंजूरी देलनि। न्यूयार्क सिटी (अमेरिका) मे पहुंचला पर ओ राजनीति विज्ञान विभागमे स्नातक अध्ययन कार्यक्रममे दाखिला लेलनि। किछु दिन धरि 'डारमेटरी' मे रहलनि। 'डारमेटरी' भारतीय विद्यार्थी सभ मिलि-जुलिक' चलबैत रहथि। एकर बाद ओ पारसी मित्र नवल भथेनाक संग फराक घरमे रहय लगलाह। हुनका 1916 मे पीएच. डीक उपाधि भेटलनि। 'डाक्टेरेट' डिग्री प्राप्त भेलाक उपरांत, भीमराव लंदन चलि गेलाह आ ओ लंदन स्कूल ऑफ इकोनोमिक्समे लॉ (कानून) पढ़य लगलाह आ अर्थशास्त्र विषयमे डाक्टेरेट हेतु तैयारी करय लगलाह। संयोग एहन जे हुनक छात्रवृत्ति भेटक अवधि समाप्त भऽ रहल छलनि आ ओ अध्ययन बीचमे छोड़ि, प्रथम विश्व युद्ध 1914 क समयमे भारत वापस भऽ गेलाह।

लंदनसँ वापस भेला पर ओ बड़ौदा स्टेटमे सैनिक सचिवक पद पर कार्य करऽ लगलाह। हुनका ओहि पद पर मोन नहि लगलनि। ट्यूशन करय लगलाह। लेखाक कार्य शुरू कयल। एतबे नहि, व्यावसायिक परामर्शक कार्य प्रारंभ कयलनि, किन्तु ओहूमे ओ असफल रहलाह। जीवनक एहि उत्थान-पतनमे, बम्बईक पूर्व गवर्नर लार्ड सिडेहमक मदतिसँ ओ मुंबईक सिडेहम कालेज ऑफ कामर्स एण्ड इकोनोमिक्समे राजनीतिक शास्त्रक प्रोफेसरक पद प्राप्त करयमे कामयाब भेलाह। 1920 मे कोल्हापुर महाराजा आ अपन बचतसँ ओ पुन: इंग्लैंड गेलाह। 1923 मे भीमराव 'टाकाक समस्या' (द प्रोबलेम आफ द रूपी) शोध-निबंध पर लंदन विश्वविद्यालयसँ डी-एस सीक उपाधि प्राप्त कयलाह। लॉ (कानून) पढ़ाई पूरा कयला पर ओ ब्रिटेन (लंदन) मे बैरिस्टरक रूपमे भर्ती भेलाह। लंदनसँ वापस होमक क्रममे ओ जर्मनीमे तीन मास बितौलनि आ ओ बॉन (जर्मनी)

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

• विश्वविद्यालयमे अर्थशास्त्र विषयक विशेष अध्ययन कयलिन। 8 जून 1927 केँ हुनका कोलंबिया विश्वविद्यालयसँ पीएच. डीक उपाधि सेहो प्राप्त भेलनि।

डा. अंबेदकर 1935 मे गवर्नमेंट लॉ कालेजमे प्रिंसिपल नियुक्त भेलाह, जे ओ ओहि पद पर दू वर्ष धरि रहलाह। मुंबईमे ओ एकटा पैघ घर बनौलनि आ व्यक्तिगत पुस्तकालयमे पचास हजारसँ बेसी पुस्तकक संग्रह कयलनि। पीड़ा वेदना हुनका पाछू लगले रहनि। पत्नी रामाबाईक देहावसान ओही वर्षमे भऽ गेलनि। 1936 मे ओ इंडिपेंडेंट (स्वतंत्र) लेवर पार्टीक स्थापना कयनलि, आ ई पार्टी 1937क सेंट्रल लेजीसलेटिव एसेम्बली (केन्द्रीय विधाई विधानसभा) चुनावमे पन्द्रह सीट पर कब्जा जमौलक। ओही वर्षमे ओ जातिक समाप्ति (एनीहिलेशन ऑफ कास्ट) नामक पुस्तकक प्रकाशन करौलनि। ओ अपन पुस्तकमे हिन्दू धार्मिक नेताक आ जातिप्रथाक कटु आलोचना कयलनि। क्रांतिकारी स्वभावक डा. भीमराव अस्पृश्य समुदाय 'हरिजन' नाम पर विरोध प्रकट कयलनि। गांधीजी एहि समुदायक नाम हरिजन रखने छलाह। ओ रक्षा सलाहकार समिति आ वाइसरायक कार्यकारिणी परिषदक सदस्य 'लेवर मिनिस्टर' (श्रममंत्री) क रूपमे रहल छलाह।

ओ 1941 सँ 1945 क बीच कतेको विवादास्पद पुस्तक सभक प्रकाशन करौलनि, जाहिमे पाकिस्तान पर विचार (थाट्स आन पाकिस्तान) सम्मिलित अछि। भीमराव एहि पुस्तकक माध्यमसँ पाकिस्तानमे पृथक मुस्लिम देश बनेबाक मुस्लिम लीगक मांगकेँ जोरदार ढंगसँ आलोचना कयलनि।

15 अगस्त 1947 केँ जखन भारत स्वतंत्र भेल तँ डा. अंबेदकर कांग्रेसनीत सरकारमे प्रथम लॉ (कानून) मंत्रीक कार्यभार ग्रहण कयलनि। 29 अगस्तकेँ डा. अम्बेदकर भारतीय संविधान प्रारूप कमिटीक चेयरमैन नियुक्त भेलाह। हुनका ई भार देल गेलनि जे ओ स्वतंत्र भारतक नव संविधान लिखथि। भारतीय संविधानक प्रारूप तैयार करयमे हुनका अपन सहयोगी लोकनि आ समकालीन पर्यवेक्षक लोकनिक सभक प्रशंसा प्राप्त भेलनि। संविधान सभामे 26 नवम्बर 1949 केँ संविधानक स्वीकृति भेटि गेलैक, मुदा 1951 मे हिन्दु कोड बिल संसदमे स्वीकृत नहि भेलाक कारणेँ ओ मंत्रिमंडलसँ त्याग-पत्र दऽ देलनि।

सिद्धांतवादी डा. अंबेदकर 1952क लोकसभा चुनावमे निर्दलीय प्रत्याशीक रूपमे चुनाव लड़लनि, किन्तु ओ चुनावमे पराजित भऽ गेलाह। तदुपरांत, ओ मार्च 1952 मे राज्यसभाक सदस्य मनोनीत भेलाह जे ओ मृत्युपर्यंत रहलाह।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

चमत्कारिक व्यक्तित्ववला बाबा साहेब सामाजिक रूढ़िवादिताक विरोधमे दलित बौद्ध आंदोलनक शुरुआत कयलनि आ एहि क्रममे ओ 1950 श्रीलंका (तत्कालीन सिलौन) मे आयोजित बौद्ध विद्वान एवं संत सभक सम्मेलनमे सम्मिलित भेलाह। बौद्ध धर्ममे परिवर्तनक एकटा योजना बनौलनि, तकरा लेल ओ 1954 मे दू बेर बर्मा गेलाह। रंगूनमे आयोजित तृतीय विश्व फेलोशिप बौद्ध सम्मेलनमे भाग लेलनि आ ओ 1955 मे भारतीय बौद्ध महासभाक गठन कयलनि, जकरा ओ 14 अक्टूबर 1956 मे भारतीय बौद्ध सोसाइटीमे परिवर्त्तित कयलनि। तत्कालीन समाजमे व्याप्त अस्पृश्यता एवं सामाजिक भेदभावक विरोधमे जनजागरण करबामे हुनक महत्वपूर्ण भूमिका रहलनि।

जाज्वल्यमान नक्षत्र भीमरावक पहिल पत्नीक देहावसानक उपरांत, दोसर विवाह सवितासँ कयलनि। हुनक पत्नीक नाम विवाहसँ पूर्व, शारदा कबीर रहनि, जे जन्मसँ ब्राह्मण छलीह, मुदा ओ बौद्ध धर्म स्वीकार क' लेने रहथि। मधुमेहसँ पीड़ित डा. अंबेदकर जूनसँ अक्टूबर 1954 धरि बिछावन पकड़ने रहलाह आ अंतत: हुनक निधन 6 दिसम्बर 1956 कँ दिल्लीमे भऽ गेलनि आ दाह-संस्कार बौद्ध रीति-रिवाजसँ 7 दिसम्बर 1956 कँ चौपाटी (मुंबई) मे संपन्न भेलनि। अंबेदकर स्मारक हुनक दिल्ली स्थित अलीपुर रोडमे स्थापित कयल गेल आ हुनक जन्म तिथि 14 अप्रैलकँ सार्वजनिक अवकाशक संग अंबेदकर जयंतीक रूपमे मनाओल जाइछ। वरदपुत्र आ कुशाग्र बुद्धिक डा. अंबेदकरकँ 1990 मे मरणोपरांत, भारतक सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारतरत्न' सँ सम्मानित कयल गेल। 'भारतरत्न' सम्मान डा. भीमराव अंबेदकरकँ मुइलाक करीब तैंतीस वर्षक उपरान्त सम्मानपूर्वक देल गेल, जे एकटा इतिहास छैक।

प्रगतिशीलता आ सामाजिक जागरूकताक प्रतीक डा. भीमराव अंबेदकरक विषयमे ई पाँती सटीक अछि :

'लीक-लीक गाड़ी चलय
लीकी चलय कपूत
लीक छाड़ि, तीनू चलय
शायर, सिंह, सपूत'

संघर्षमय जीवनसँ अर्जित उपलब्धि, ख्याति, यश, सम्मान आ प्रतिष्ठा चिर-अवधि धरि

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

चिरस्मरणीय रहैत अछि आ ई कथ्य महान विधिवेत्ता आ 'भारतरत्न' डा. भीमराव अंबेदकर संग घटित होइछ।

बहुआयामी व्यक्तित्वक डा. अंबेदकर स्वतंत्र भारतक शान-मान-आन रहथि। ओना हुनक दैहिक शरीर 6 दिसम्बर 1956 कें पंचतत्वमे भ' गेलनि, मुदा हुनक कीर्ति, पराक्रम, मेधा आ स्थापित मान्यता भारतक जनमानसमे विद्यमान अछि आ युग-युग धरि बनल रहत। तैं तँ कहल जाइछ जे 'यशस्वी स: जीवति।'

शब्दार्थ

अस्पृश्य:	-	अछूत
अंकुश:	-	नियंत्रण
ट्यूशन	-	खानगी पढ़ाई
रूढ़िवादिता	-	परम्परावादी
वरदपुत्र आ कुशाग्र	-	सरस्वतीपुत्र या मेधावी
चिरस्मरणीय	-	बेशी दिन धरि, स्मरणीय
जनमानस	-	जनताक मान

प्रश्न ओ अभ्यास

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न -

(i) 'भारतीय संविधान निर्माता डा. बी. आर. अंबेदकर' क रचयिता छथि।

(क) भाग्यनारायण झा (ख) तारानन्द वियोगी

(ग) अशोक (घ) उमाकान्त

(ii) भाग्यनारायण झाक रचना अछि।

(क) क्रैक

(ख) भारतीय संविधान निर्माता डा. बी. आर. अंबेदकर

(ग) भोजन

(घ) चन्द्रमुखी

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

रिक्त स्थानक पूर्त्ति करू -

(i) जीवनमे उतार-चढ़ाव ..... नियम छैक।

(ii) महार जाति ..... बूझल जाइत रहैक।

(iii) प्रतिभावान अंबेदकर 1912मे अर्थशास्त्र आ ..... मे डिग्री हासिल कयलनि।

शुद्ध-अशुद्धकेँ चिह्नित करू -

(i) अंबेदकर वंशज दीर्घ अवधि धरि ब्रिटिश इस्ट इंडिया कम्पनीक सेनामे कार्यरत रहथि।

(ii) हुनक गामक नाम रहनि अहमदनगर।

(iii) हुनका 1916 ई0 मे पीएच. डी. उपाधि भेटलनि।

(iv) 1952 के लोकसभा चुनावमे ओ विजयी भेलाह।

(v) हुनक निधन 1960मे भऽ गेलनि।

2. लघूत्तरीय प्रश्न -

(i) डॉ. अंबेदकरक जन्म कहिया आ कतऽ भेलनि ?

(ii) भीमरावसँ भीमराव अंबेदकर कोना भेलाह ?

(iii) संयुक्त राष्ट्र अमेरिकामे उच्च शिक्षा अध्ययन हेतु के हुनका छात्रवृतिक व्यवस्था कयने छलाह ?

(iv) पीएच. डीक उपाधि हुनका कहिया भेटलनि ?

(v) डॉ. अंबेदकर संविधान प्रारूप कमिटीक चेयरमैन कहिया नियुक्त कयल गेलाह ?

3. दीर्घोत्तरीय प्रश्न -

(i) डॉ. भीमराव अंबेदकरक जीवनी संक्षेपमे लिखू।

(ii) पठित पाठक आधार पर डॉ. अंबेदकर जीवनीक वर्णन करू।

(iii) डॉ. अंबेदकर प्रतिभाक संबंधमे अपन विचार व्यक्त करू।

(iv) भारतक संविधान निर्माणमे हिनक भूमिकाक वर्णन करू।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

(v) बौद्ध धर्मक प्रति हिनक आस्था केहन छल ? ओकर प्रभाव हिनका पर केहन पड़ल ?

4. निम्न पाँतीक सप्रसंग व्याख्या करू:

(i) 'लीक-लीक गाड़ी चलय
लीकी चलय कपूत
लीक छाड़ि, तीनू चलय
शायर, सिंह, सपूत'

(ii) 'यशस्वी सः जीवति '

गतिविधि-

(i) भारतक सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारतरत्न' सँ सम्मानित अंबेदकरक अतिरिक्त आन सम्मानित लोकनिक सूची बनाउ आ हुनका लोकनिक योगदानक सन्दर्भमे वर्गमे विचार-विमर्श करू।

(ii) छात्र वर्गमे अंबेदकर प्रसंग आन-आन रचनाक वाद-विवाद क्वीज प्रतियोगिता आयोजित करथि।

(iii) छात्र वर्गमे अंबेदकर जीवनसँ सम्बन्धित एकांकीक मंथन करथि।

(iv) छात्र विद्यालयमे अंबेदकर जयंती पर अंबेदकरक विभिन्न आयाम पर सेमिनार आयोजित करथि।

निर्देश-

(i) शिक्षकसँ अपेक्षा जे डॉ. अंबेदकरक संगहि आनो महापुरुषक जीवनक प्रेरक प्रसंगसँ छात्रकेँ परिचित करावथि।

(i) शिक्षक छात्रकेँ डा. अंबेदकर जीवनसँ प्रेरित भऽ जीवनमे सीख लेबाक हेतु अनुप्राणित करथि।

(iii) विद्यालयक समारोहक अवसर पर शिक्षकसँ अपेक्षा जे अंबेदकरक जीवनसँ संबंधित फोटो प्रर्दशनी आयोजित करथि।

---

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

उमाकान्त

उमाकान्त मैथिलीक यशस्वी रचनाकार छथि। हिनक जन्म मधुबनी जिलाक ढंगा (हरिपुर) गाममे 17 जनवरी, 1945 मे भेलनि। मैथिलीमे एम. ए. कयलाक बाद एम. एल. एस. एम. कालेजमे प्राध्यापक भेलाह। सीताक चरित पर पी-एच. डी. कयलनि। ओही कालेजमे मैथिलीक विभागाध्यक्ष पदसँ सेवानिवृत्त भऽ आब पूर्णत: साहित्य-रचनामे दत्तचित्त छथि।

उमाकान्त मैथिली साहित्यमे हास्य -व्यंग्यक रचनाकारक रूपमे प्रशस्त भेलाह। प्रो. हरि मोहन झाक स्मरण करबैत हिनक हास्य -व्यंग्य पुस्तक 'बाबाक विजया' एहि विधाक महत्वपूर्ण कृति अछि। हिनक कथा-संग्रह 'यर्थाथ' तथा नाटक 'सीता' बेस चर्चित भेल अछि। 'अर्पण' नामक वार्षिक स्मारिकाक बीस वर्ष धरि ई सम्पादन कयने छथि। अन्य स्मारिका तथा पत्रिकाक सेहो ई सम्पादन कयलनि अछि। हिनक निबन्ध-संग्रह 'अपन बात' समाचार -पत्रमे प्रकाशित स्तम्भ-लेखनक पुस्तकाकार रूप थिक।

प्रस्तुत कथा -'आरम्भ' पत्रिकासँ लेल गेल अछि। ई एकटा टेम्पो चालकक कथा अछि। ओकर असली नाम जे होइक, लोक ओकरा 'क्रैक' कहैक। ओ अपनहुँ एहि नामकेँ स्वीकारि लेने छल। आचरणसँ सेहो 'क्रैक' नामकेँ सार्थक करैत रहैत छल। एक दिनक घटना अछि जे एकटा नवयुवक ओकर टेम्पो पर आबि बैसि गेलैक। कनेक कालक बाद एकटा महिला सेहो बैसलीह। ओ युवा व्यक्ति अभद्र व्यवहार करय लागल। महिला असहज भऽ गेलीह। टेम्पो चालक क्रैक ओहि नवयुवककेँ मना केलकैक, नहि मानला पर ओकरा संग कठोर व्यवहार कयलक। अपन जान पर खेलि कऽ ओहि युवा छौंड़ाकेँ अन्तत: टेम्पोसँ उतारिये कऽ छोड़लक।

नैतिकता आ कर्त्तव्यबोध मनुष्यक विशेषता थिक। ककरो व्यवसायसँ ओकर व्यक्तित्वकेँ नापल नहि जा सकैत अछि। ई कथा व्यक्तिक मानवीय-चेतनाक एकटा ठोस उदाहरण प्रस्तुत करैत अछि।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

क्रैक

साफे बताह अछि। हरदम दाँत चियारने बतिसी देखबैत रहैए, हँ-हँ-हँ करैत रहैए। झुमैत गीत गबैत चलबैत रहैए टेम्पो। तेहन-तेहन अकट्ठ बात करैत रहैए पसिंजर सभक संग जे सभकेँ हँसा दैए। अनेरो दोसर टेम्पो ड्राइभरकेँ चलितेमे उकठपना क' दैए आ हँस' लगैए, हँसोड़ ड्राइभर तँ हँसि दैए किन्तु पिताह प्रवृत्तिक ड्राइभर तामसे गारि पढ़' लगैत छै। बेसी टेम्पोबला एकरा 'क्रैक' कहैत छै। आब एकर नामे क्रैक भऽ गेल छै। क्रैक तँ अछि मुदा कोनो बातक आमेख-इरखा नै।

टेम्पोचालक अछि, नाम नै बुझल अछि। मानि लिय' जे ओकर नाम क्रैक भेल। सभ जखन क्रैक कहि सम्बोधित करैत छै तँ हमरा-अहाँकेँ क्रैक कहबामे कोन हर्ज?

हमरा प्रसन्नता होइए ओकर टेम्पोपर चढ़लासँ। डेरा आ कालेजक दूरी तीन किलोमीटरसँ उपरे हैत, कम नहि । नितो आबा-जाहीक सहारा वैह अछिं छुट्टीयो दिन कऽ जँ मैथिलीक कोनो बैसार की कवि सम्मेलन अथवा साहित्यिक गोष्ठी भेल, होइए बेसी दरभंगेमे तँ से जेबाक भेल तँ टेम्पो शरणमक् अतिरिक्त दोसर चारा नहि। रिक्शासँ जैब से साधन्स आर्थिक दृष्टिएँ अछि नहि। तखन तँ टेम्पोए सभसँ पैघ साधन। कालेज जेबा-अएबाक क्रममे अधिक काल एक ने एक पीठ क्रैक पकड़ा जाइते अछि। हमरा ओ बड़ नीक लगैए। नीक लगबाक कारण अछि जे ओ निर्विकार -निश्छल अछि। आम पसिन्जर संग ओकर व्यवहार देखि लगैए जेना ओकरा हृदयमे कतौ खोँच-खाँच नहि छै। हमरा सभ जकाँ बहत्तरि हाथक अँतरी नै छै। छै मे छै की त' हरदम बत्तीसी बेपर्द रहैत छै। दुनू ठोर दुनू कात कोसी नहरिक बान्ह जकाँ हँसीक धाराके समेटने। मुहँक तेहेन आकृति छै जे देखिते ठोरपर मुस्की छिड़िया जायत। टेम्पो चलबैत गर्दभ स्वरमे जैह फुरा गेलै सैह गबैत मस्तीमे चलैत रहैए। जहाँ पसिन्जर देखलक, रुकल- आउ 'शर', आउ 'शर' ! कहि क' गाड़ीपर चढ़ा लेलक, विदा भ' गेल। एकटा और खूबी छै ओकरामे। ओ समदर्शी जकाँ मौगी-पुरुखमे भेद नहि करैए, सभकेँ 'शरे' कहैए। पढ़ल-लिखल, मूर्ख, देहाती-शहरी, नेता-प्रणेता, नेनासँ बूढ़ सभकेँ 'शरे' कहैए - आउ 'शर' कत' जेबै ? हँ, बेसी काल ओ एकछाहा मैथिली बजैए आ गीतो बेसी मैथिलीएक गबैत रहैए। हमरा तँ आर

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

बेसी नीक लगैए क्रैक। ओकरामे एकटा और विशेषता छै जे सवारीक मोटा-चोटा, बोरिया, ब्रीफकेश आ कि कोनो भारी समान अपनेसँ उठा क' रखैए टेम्पोपर आ उतर' कालमे उतारियो दैए, मुदा किराया तँ बेसी ककरोसँ एकोटा पाइ नहि लैए। सेवाक मूल्य ल' सकैत छल से नहि लैत अछि।

क्रैक ठीके क्रैक अछि। अर-दर गबैत खूब रेसमे टेम्पो चलबैत रहैए। अगल-बगलमे जाइत बूढ़ा होथि कि बूढ़ी, एकाएक रोकि बाबा परणाम .... दाइ परणाम तेहेन पोजमे कहि चलि दैए जे बिना हँसने नहि रहल जायत। सभ हँसि दैत छै, जकरा कहलक से पित्ते माहूर भऽ गारि पढ़' लगैए। ओकरा जेना मजा अबैत होइक। कोनो-कोनो टेम्पोचालक पसिन्जरकेँ भड़का दैत छै। कहि देलक हे ओइ टेम्पो पर नै चढ़ूँ, क्रैक छै, कतहु एक्सिडेंट करा देत ... सब दिन एक्सिडेंट करिते अछि। नाहकमे माथ-कपार फूटि जैत। मुदा ओ अछि जे कोनो परबाहि नै करैए। ककरोसँ कुन्नह नै रखैए, अपन काज पर डटल रहैए ओहिना हँसैत। कखनो मोन छोट नहि करैए।

ओहि दिन हम पान खा क' कालेजसँ डेरा विदा होयबा पर रही। सड़कक कातमे एकटा टेम्पो ठाढ़ देखलियै। नजरि दौड़ौलहुँ तँ देखैत छी जे एकटा डिब्बामे सँ टेम्पोमे तेल ढारि रहल अछि। तेल ढारल भ' गैले । हम एकटा मित्रक संग गप्पक समापन करबा पर रही। डिब्बा गाड़ीमे राखि हमरा ओ कहैए-'शर' यौ ..... शर, जेबै लहेरियासराय? चेला हाजिर अछि। हम सकारात्मक उत्तर द' बैसबाक लेल जहाँ जाइत छी कि ओ क्रैक हमरा संगीकेँ कहैए हए . ... हए .....शरकेँ फँसा लेलियै। हमर मित्रकेँ बतहाक गप्प सुनि हँसी लागि गेलनि, पानोबला हँस' लागल। हम हँसैत टेम्पोपर बैसि गेलहुँ। क्रैक गाड़ी स्टार्ट क' चलि पड़ल।

अएँ हौ, एत' गाड़ी लगौने छलहए ? हम पूछि देलियै।

तेल साफ भ' गेलै 'शर' । एतहि कातमे लगा देलियै, डिब्बा लेलहुँ, पेट्रोल टंकी गेलहुँ , तेल आनि क' खोराकी द', चला परदेशी। शर .....! बिना खाना-खोराकीकेँ मनुक्ख तँ काज कैए ने सकैए, ई तँ गाड़ी छै, आ कि नै शर ?

आह! छैहे की। पेटे लेल तँ दुनिया हरान अछि।

एतेक गप्प होइते अछि कि सड़कक खाधिमे जरकिंग भेल जे मुँहे भरे खस' लगलहुँ, मुदा बाँचि गेलहुँ। एहन कतौ सड़क होइ। सड़क आ खाधिमे घुट्ठा सोहार नै देखने छलहुँ। गुण्डा -आदंकीक संगति भले आदमी संग जकाँ । लुटि लेलकै बिहारकेँ - हमरा बजा गेल।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

शर ! सरकारेकेँ कतेक दोख देबै ? लाख-करोड़क महल बनौने छै, पानि सड़के पर बहबै छै। हमरा सबहक दिमाग ठीक के करतै ?

हम क्रैकक गप्प सुनि चुप भ' गेलहुँ। कतेक सटीक बात बाजलए।

तावतमे टेम्पो स्टेशन लग आबि गेल। एकटा लफुआ-गुण्डा छौंड़ा छड़पि क' चलितेमे चढ़ि गेलै आ टेम्पोचालकक कातमे बैसि गेलै। करीब दू सय डेग और आगू टेम्पो बढ़ल छल कि एक पूर्णयौवना नायिका हाथ देखोलनि। टेम्पो रोकलक, ओ चढ़ि गेली। तीनसिट्टापर एककात हम दोसरकात ओ महिला। सुरेबगर मुहँक काट-छाँट, गहुमियाँ गोराइ, सोटल पोछल-पाछल बाँहि, बान्हल हाड़-काट, चमचमाइत चकाचक चेहरा, बीस-पचीस वर्षीया नायिका, सिन्दूरक आभा सौन्दर्यक महिमा -गरिमाकेँ शिखरपर पहुँचवैत, बुझाइत छल जे कृष्णक राधा छितितल लावनि सार इएह तँ ने छल हेतीह ?

ई की ? लफुआ-गुण्डा छौंड़ा जे क्रैकक बगलमे बैसल छल, नीचा उतरि ओहि महिलासँ सटि क' बैसि गेल। ओकर चालि-प्रकृति देखिते युवतीक सौन्दर्य पर मेघक कारी-सियाह टिक्कड़ि आबि क' घेरि लेलकै। हँसैत आकृतिपर आदंक सियाह पसरि गेलनि।

हम छनेमे ई की देखि रहल छी? बुझायल जेना युवतीक आँखि अपन रक्षाक याचना क' रहल अछि। टेम्पोचालकक आँखि लाल भ' गेलै। खिसिआइत बाजल- उतरो यहाँ से - उतरते हो या, नहीं उतरेगा तूँ .. ? कहैत रोकि देलक टेम्पो , बन्द क' देलक।

कोनो प्रभाव नहि। अड़ि क', अकड़ि क' बैसल रहल ओ गुण्डवा। महिलाक ठोरपर फिफड़ी पड़ैत, सहमलि सहटि क' ससरली हमरा दिस। ओहि गुण्डबाक प्रवृत्ति देखि हमरो ठंढायल खूनमे सनसनाहटि होब' लागल छल। नारीक रक्षार्थ ओकर आवरूक सुरक्षाक निमित जानोपर आफद झेल' पड़त तँ ताहिमे कोनो हर्ज नहि। इएह तँ पुण्य काज हैत। से सोचि तद्वते अपनाकेँ तैयार क' रहल छलहुँ मोने मोन।

तूँ की चाहैत छएँ? भले आदमीक काज होउक तँ तुरत उतरि जो .... नै तँ आइ जे ने से भ' जेतौ।

वैसाख मासक तप्त किरणसँ त्रसित लोक किएक बहरायत ? अनेरोक सुनसान जकाँ। गर्मीसँ आउल-बाउल मोन, घमायल शरीर ताहि परसँ सूर्यक प्रचण्ड धाहीसँ अकच्छ भेल मोन। तखन ई घटना एकटा विचित्र सन स्थिति उत्पन्न क' देलक।

'' नहीं उतरोगे तुम ..... ? दिखा दें क्या होता है लफुआगर्दी का मजा ..... ?

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

गुण्डबा ओत' सँ उतरि क्रैक चालकक बगलमे बैसि कानमे किछु फुसफुसा क' कहलकै। टेम्पोबला एकेठाम नकारात्मक मूड़ी डोलबैत रहल। ओहिकालमे म्यूजियमक गेटसँ आठ-नौ गोटे बाहर आबि सड़कक कातेमे बतिआय लागल। टेम्पोचालक क्रैकक साहस बढ़लै। तमकि क' बाजल - हम नै जैब, तोँ हमरा गाड़ी परसँ उतरै छएँ की नहि ?

हल्लागुल्ला करोगे तो समझ लेना । टेम्पो सहित तुमको गायब कर देंगे।

तोरा जे करबाक होउक से क' लिहएँ। हम बूझि लेब। अखन तोँ गाड़ीसँ उतरै छएँ की करियौ हल्ला। ..... दौड़े जा हौ लोक सभ।

ओ गुम्हरैत चुप्पी सधने भागल मुदा ओकर चुप्पी आ आँखिक मुद्रा चेतौनी द' क' गेल क्रैककेँ ।

टेम्पोचालक क्रैककेँ बुझेलैक जेना बड़का संकटसँ उबरल होय। गाड़ी फेर स्टार्ट केलक आ चलि देलक - लहेरियासराय दिस। हम ओकर बहादुरीक धान्यवाद देब' लगलहुँ त' ओ हमर प्रशंसाकेँ लोकैत कह' लागल-

शर! हम दोसरक माय-बहिनकेँ अपन माय-बहिन नहि बुझबै तँ कतेक काल टिक सकबै? दोसराक इज्जत ल' क' चलबै त' ओकर रक्षामे प्राणे चलि जेतै नै परबाहि नै।

क्रैकक उतर सुनि ओकर दायित्व आ कर्त्तव्य बोधक आगू हम बौना बनल रहलहुँ। अजस्र स्नेह सागर उमड़ि आयल ओकरा प्रति। ओहि महिलाक सुखायल ठोरक लालिमा फरिच्छ होब' लागल छल। ओहो बजली तँ किछु नै मुदा आभारसँ दबलि लागि रहल छली।

टेम्पो बेँता चौक आयल। महिला उतरली, पाइ देलथिन। क्रैक किन्नहुँ आइ पाइ लेबाक लेल तैयार नहि छल। बहुत हमर आग्रह आ महिलाक डबडबायल आँखि पर विवश भ' किराया लेलक। टेम्पोसँ उतरि जाय तँ लगलि किन्तु पलटि-पलटि ताकथि टेम्पोबाला दिस। हमहूँ दस डेग आगू आबि उतरलहुँ । क्रैक भाव विगलित होइत बाजल -

आब नै चलैब टेम्पो। माथा गड़बड़ा गेलै 'शर'। जाबत शान्ति नहि भेटतै तँ हँसब-बाजब की, दू कौर खाओ ने हेतै 'शर' । एते दिन क्रैक छलहुँ नहि, मुदा आब कहीं भ' ने जाइ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

शब्दार्थ

क्रैक	-	बताह , झोंकाह
बतिसी	-	बतीसा दाँत
उकठपना	-	उपद्रव
आमेख-इरखा	-	अन्यथा भाव , दु:ख वा क्रोधक भाव
साधन्स	-	हिम्मति
निर्विकार	-	निश्छल - निर्मल
खाँच-खाँच	-	शरीरमे भेल दाग
गर्दभ स्वर	-	गदहाक स्वर
समदर्शी	-	सभ पर समान दृष्टि रखनिहार
अर-दर	-	अंटसंट
पित्ते माहुर	-	तामसे विष भेल
ऐक्सिडेन्ट	-	दुर्घटना
खाना - खोराकी	-	भोजन
घुट्ठा सोहार	-	घनिष्ठ सम्बन्ध, हेल-मेल
सुरेबगर	-	सुन्दर
आउल-बाउल	-	तंग-तंग, व्याकुल
फरिच्छ	-	साफ

प्रश्न ओ अभ्यास

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न -

(i) 'क्रैक' शीर्षक कथाक कथाकार छथि -

(क) उमाकान्त (ख) विभारानी

(ग) अशोक (घ) भाग्यनारायण झा

(ii) उमाकान्तक रचना अछि -

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

(क) भोजन (ख) क्रैक

(ग) चन्द्रमुखी (घ) पर्यावरण

2. रिक्त स्थानक पूर्त्ति करू -

(i) मानि लिय' जे ओकर ..... क्रैक भेल।

(ii) अर-दर गबैत खूब रेसमे ..... चलबैत रहैए।

(iii) ..... गाड़ी स्टार्ट क' चलि पड़ल।

3. शुद्ध/अशुद्ध पाँतीकेँ चिह्नित करू -

(i) क्रैक हरदम दाँत चियारने बत्तिसी देखबैत रहैए।

(ii) बेसी काल ओ एकछाहा मैथिली बजैए।

(iii) क्रैक टेम्पो नहि चलबैत अछि।

4. लघूत्तरीय प्रश्न -

(i) टेम्पोचालकक नाम की अछि ?

(ii) टेम्पोचालक 'क्रैक' नामसँ जानल जाइत छथि कियैक ?

(iii) क्रैक बेसी काल कोन भाषा बजैए ?

(iv) क्रैक समदर्शी अछि । कोना ?

(v) क्रैक कोना एकटा महिलाक इज्जति बचओलक ?

5. दीर्घोत्तरीय प्रश्न -

(i) 'क्रैक' कथाक सारांश लिखू।

(ii) क्रैक कथाक कथ्य स्पष्ट करू।

(iii) क्रैकक चरित्र चित्रण करू।

(iv) टेम्पो पर सवार महिलाक सौन्दर्यक वर्णन करू।

(v) पठित पाठक आधार पर क्रैक अपन दायित्व आ कर्त्तव्यक पालन कोना कयल ?

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

6. निम्न पाँतीक सप्रसंग व्याख्या करू :

(i) मुदा ओ अछि जे कोनो परबाहि ने करैए। ककरोसँ कुन्नह नै रखैए, अपन काज पर डटल रहैए, ओहिना हँसैत। कखनो मोन छोट नहि करैए।

(ii) सुरेबगर मुँहक काट-छाँट , गहुमियाँ गोराइ , सोटल पोछल-पाछल बाँहि, बान्हल हाड़-काट, चमचमाइत चकाचक चेहरा , बीस-पचीस वर्षीया नायिका, सिन्दूरक आभा सौन्दर्यक महिमा-गरिमाके ँ शिखर पर पहुँचबैत , बुझाइल छल जे कृष्णक राधा छितितल लावनि सार इएह तँ ने छल हेतीह'?

गतिविधि :

(i) **पाठमे प्रयुक्त निम्न शब्दक अर्थ लिखू :**

परिच्छ, गुम्हरैत, बत्तीसी, पित्ते माहुर, खोराकी

(ii) एहि कथाक सार्थकता पर विचार करू।

(iii) **निम्नलिखित मुहावराक अर्थ स्पष्ट करैत वाक्यमे प्रयोग करू :**

बहत्तरि हाथक अँतरी , पित्ते माहुर, डबडबायल आँखि

निर्देश -

(i) शहरमे आर्थिक दृष्टिएँ टेम्पोए सभसँ पैघ साधन अयबा-जयबा लेल अछि-आन-आन साधनक चर्चासँ शिक्षक छात्रकेँ आवागमनक स्थितिसँ अवगत कराबथि।

(ii) क्रैक जकाँ निर्विकार -निश्चल भावसँ अपन कर्त्तव्य समाजमे सब गोटे करथि। समाज सेवाक भावनाक चर्चा शिक्षक छात्रक बीच करथि।

---

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

रत्नेश्वर मिश्र

'डॉ० रत्नेश्वर मिश्र इतिहासकार पहिने भेलाह, मैथिली साहित्यक रचनाकार बादमे। हिनक जन्म पूर्णिया जिलाक विष्णुपुर गाममे 1 फरवरी, 1945 कँ भेल छनि। ई मैट्रिकुलेशन कयलनि नेतरहाट विद्यालयसँ। एम. ए. आ पी-एच. डी. कयलाक बाद इतिहासक विद्वान प्राध्यापकक रूपमे हिनक ख्याति भेलनि। ल. ना. मि. विश्वविद्यालय, दरभंगामे इतिहासक युनिवर्सिटी प्रोफेसर आ विभागाध्यक्षक पदसँ 2005 ई0 मे सेवा-निवृत भेलाह अछि।

रत्नेश्वर मिश्रकेँ साहित्यसँ अभिरुचि प्रारम्भे सँ छनि। इतिहास आ साहित्य-दुनू क्षेत्रमे हिनक रचनाक पुस्तकाकर प्रकाशन कम छनि, मुदा जतेक छपल छनि से पर्याप्त छनि। इतिहासकारक रूपमे मिथिला आ नेपाल पर हिनक लेखन गहन विमर्शक विषय बनल अछि। साहित्य अकादेमी, नयी दिल्लीसँ प्रकाशित भवभूति, तमिल साहित्यक इतिहास आदि अनुवाद - पोथी बेस प्रशंसित भेल अछि। हालेमे हिनक सुरेन्द्र झा सुमन लिखित मैथिली उपन्यास 'उगनाक दयादवाद' क अंगरेजी अनुवाद प्रकाशित भेल अछि। मैथिलीमे निबन्धकार, समीक्षक आ अनुवादकक रूपमे हिनक प्रसिद्धि छनि।

प्रस्तुत निबन्धमे रत्नेश्वर मिश्रक इतिहासकार आ साहित्यकारक समन्वित रूप ध्येय अछि। स्वतंत्रता संग्रामक इतिहास जानब, अपन देशक संविधानसँ संक्षेपोमे परिचित होयब प्रत्येक छात्रक कर्त्तव्य थिक। सोझ सरल भाषामे आधिकारि विद्वान एही आवश्यकताकेँ बुझि रखलनि अछि।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

भारतीय स्वतंत्रता-संग्राम एवं संविधानक रूपरेखा

स्वतंत्रता मानव जातिक जन्म सिद्ध अधिकार थिक। एकरा प्राप्त करबाक लेल एवं सदा सुरक्षित ओ निरापद रखबाक लेल महान् बलिदान ओ त्यागक आवश्यकता होइत अछि। जे राष्ट्र एहि प्रकारक बलिदान ओ त्याग कऽ सकल सैह स्वतंत्रता प्राप्त कऽ सकल अछि आ अपन स्वतंत्र जीवन बिता रहल अछि।

कालक गतिमे भारत अतीत कालमे अपन अनेक दुर्बलताक कारणे अपन स्वतंत्रता गमा बैसल। किन्तु ताही संग विदेशी सत्ताकेँ उखाड़ि कऽ फेकि देबाक सेहो निरन्तर संघर्ष चलैत रहल। किन्तु ओ संघर्ष संघटित जन संघर्ष नहि बनि सकल।

सामूहिक जनसंघर्षक रूपमे विद्रोहक पहिल ज्वालामुखीक विस्फोट भेल छल 1857 इसवीमे। एकरा सिपाही-विद्रोह कहल जाइछ मुदा ई छल भारतीय स्वतंत्रता संग्रामक आदम्ब इच्छाशक्तिक अभिव्यक्ति। एक मइ 1857 मे मेरठक सैनिक छावनीमे अंगरेज सभक विरुद्ध एक सैनिक मंगल पाण्डे द्वारा दागल गेल बन्दूकक अबाज दिल्लीसँ कलकता धरिक इस्ट इंडिया कम्पनीक सैनिक छावनीकेँ दलमलित कऽ देलक। सर्वत्र भारतीय सैनिक अंगरेजक विरुद्ध स्वतंत्रताक बिगुल बजा देल।

मेरठक एहि सिपाही-विद्रोहक चिनगी दिल्ली पहुँचल। बहादुरशाह द्वितीय अपनाकेँ हिन्दुस्तानक सम्राट् घोषित कऽ देलक। सिपाही सबहक मनोबल बढ़लैक। अन्ततः ओ सब दिल्ली पर अधिकार कऽ लेलक। एकरा बाद तँ एहि विद्रोहक लहरि अनेक स्थानमे पसरि गेल। कुँवर सिंह जगदीशपुरमे, रानी लक्ष्मीबाइ झांसीमे तथा नाना साहब कानपुरमे विद्रोहक नेतृत्व कयलनि। एहिना आनो-आनो स्थानमे विद्रोहाग्निकेँ प्रज्ज्वलित कयल गेल। एक वर्षसँ अधिक धरि ई संघर्ष चलैत रहल, मुदा अन्ततः असफल भऽ गेल। संघर्षक हेतु अपेक्षित योजनाबद्ध कार्य-पद्धति, संगठन-शक्ति तथा नेतृत्व-क्षमताक अभावमे विद्रोह अपन अभीष्ट धरि नहि पहुँच सकल। तइयो विद्रोही सभक साहस एवं इच्छाशक्तिक दृढ़ता प्रशंसनीय छल। विदेशी शासनसँ लड़बाक लेल जनमानसकेँ तैयार करबाक दृष्टिकोणसँ एकर विशेष महत्व अछि। ओना, विदेशी शासक

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

प्रति लोकक मनमे क्षोभ आ घृणा पहिनेसँ छलैक, मुदा ओ मुखर भेल एही विद्रोहक अवसर पर।

1857 क विद्रोह भने असफल भऽ गेल हो, मुदा सम्पूर्ण देशमे राजनीतिक चेतना जगयबामे ओ सफल रहल। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेसक स्थापना जागृत राजनीतिक चेतनाक परिणाम छल। दिसम्बर, 1885 मे किछु राजनीतिक कार्यकर्त्ता सभ एकत्र भेलाह आ एहि राष्ट्रीय संस्थाक न्यों रखलनि। अवकाश-प्राप्त अंग्रेज आइ० सी० एस० अधिकारी ए० ओ० ह्यूम कांग्रेसक स्थापना कयनिहार प्रमुख व्यक्ति छलाह। विदेशी शासक विरुद्ध बढ़ैत जनाक्रोशकेँ जे युवाशक्ति नेतृत्व प्रदान कऽ रहल छल तकरा संगठित कऽ अपना ढंगेँ उपयोग करबाक जे इच्छा ए० ओ० ह्यूमक मनमे रहल होइन, मुदा से भऽ नहि सकलनि। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस राष्ट्रीय एकता आ राष्ट्रवादक भावनाकेँ जगयबामे लागि गेल। कांग्रेसक प्रथम अध्यक्ष डब्ल्यू० सी० बनर्जीक कहब छलनि -"कांग्रेसक उद्देश्य भ्रातृत्व भावसँ भारतीय जनताक मध्य पसरल जाति, वर्ण तथा क्षेत्रीय पूर्वाग्रहकेँ समाप्त करब थिक। देशक लेल काज करयवला लोकमे भ्रातृत्वभाव तथा मैत्री-सम्बन्धकेँ दृढ़ करब सेहो एकर लक्ष्य थिक"। स्पष्ट अछि जे कांग्रेसक तत्कालीन नेता सभक ध्यान जनतामे राजनीतिक चेतना उत्पन्न करबा दिस बेसी छलनि। ओ सभ उपनिवेशवादक विरुद्ध राष्ट्रवादी विचारधाराक विकास पर जोर देब आवश्यक बुझलनि। उनैसम शताब्दीक अंत धरि कांग्रेस एहि पथ पर अग्रसर रहल। सुरेन्द्र नाथ बनर्जी, मदनमोहन मालवीय, बाल गंगाधर तिलक, फिरोजशाह मेहता, गोपालकृष्ण गोखले आदि राष्ट्रवादी नेता सभक प्रयास आ प्रेरणासँ भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस संपूर्ण देशमे एकटा आन्दोलनकारी शक्ति आ मंचक रूपमे प्रतिष्ठत भऽ गेल।

बीसम शताब्दीक प्रारंभ बंग-भंग आ स्वदेशी आन्दोलनसँ भेल। अंग्रेज सरकारक 1905 ई0 मे बंगाल-विभाजनक निर्णय प्रशासनिकसँ बेसी राजनीतिक कारणसँ प्रेरित छल। तेँ एकर तीव्र प्रतिक्रिया भेल। बंगाल-विभाजनक विरोध बंगाले धरि सीमित नहि रहल: संपूर्ण देशमे पसरि गेल। विरोधकेँ प्रभावकारी बनयबाक लेल नेता-लोकनि स्वदेशी आन्दोलनक कार्यक्रम चलौलनि। लोकमान्य तिलक, लाला लाजपत राय, सैयद हैदर रजा, गोपालकृष्ण गोखले, विपिनचन्द्र पाल तथा अरविन्द घोष सदृश नेतागण एहि आन्दोलनक नेतृत्व कऽ रहल छलाह। एहि आन्दोलनक सर्वाधिक महत्वपूर्ण परिणाम ई भेल जे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस स्वराजक मांग करऽ लागल। कांग्रेसक कलकत्ता अधिवेशन (1906 ई0) में दादाभाइ नौरोजी अपन अध्यक्षीय भाषणमे स्पष्ट

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

कहलनि जे कांग्रेसक उद्देश्य अपन सरकार गठित करब थिक।

किन्तु, एहि समय धरि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेसमे दू विचारधाराक संघर्ष शुरू भऽ गेल छल। किछु लोक नरमपंथी छलाह तँ किछु गरमपंथी। गरमपंथी लोकनि व्यापक जनान्दोलनक पक्षधर छलाह। राजनीतिक स्वतन्त्रताक प्राप्ति हुनक लक्ष्य छलनि आ एहि लेल बहिष्कार आन्दोलनकेँ ओ सभ असहयोग आन्दोलनमे परिणत करऽ चाहैत छलाह। किन्तु, नरमपंथी सभ एहि पक्षमे नहि छलाह। अन्य अनेक बिन्दु पर सेहो मतभेद छल। यैह कारण छल जे 1907 मे सूरत अधिवेशनमे कांग्रेसक विभाजन भऽ गेल। राष्ट्रीय आन्दोलन पर एहि विभाजनक प्रतिकूल प्रभाव पड़ल। नेतालोकनि बादमे एहि तथ्यक अनुभव कयलनि, मुदा ताधरि बहुत-किछु घटित भऽ चुकल छल।

महात्मा गांधीक प्रवेशसँ स्वतंत्रता आन्दोलनकेँ एकटा नव दिशा भेटल। कहल जा सकै अछि जे गांधीजी चम्पारण आन्दोलनसँ भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलनमे व्यापक स्तरपर भाग लेब शुरू कयलनि। चम्पारणक किसान पर अंग्रेजक अत्याचार पराकाष्ठा पर पहुँचि गेल छल। राजकुमार शुक्ल गांधीजीकेँ चम्पारण अयबाक लेल बाध्य कऽ देलनि। गांधीजी "तिनकठिया" पद्धतिक विरोधमे काज करब शुरू कऽ देलनि आ अन्ततः चम्पारणसँ अंग्रेज बगान मालिककेँ भगयबामे सफल भेलाह। तकराबाद ओ गुजरातक अहमदाबाद तथा खेड़ामे आन्दोलन कयलनि। हुनक कार्यपद्धति प्रभावी सिद्ध भेल। तँ 1920 ई0 मे कांग्रेस असहयोग आन्दोलनकेँ स्वीकार कऽ लेलक। गांधीजी असहयोग आन्दोलनक मुख्य पुरोधा छलाह। अंग्रेजक संग असहयोग आ विदेशी वस्तुक बहिष्कार-ई कार्यक्रम सम्पूर्ण देशमे चलऽ लागल आ राष्ट्रीय आन्दोलनकेँ एहिसँ वेश बल भेटलैक। एकरा सविनय अवज्ञा आन्दोलनक पूर्वपीठिका सेहो कहल जा सकैत अछि।

स्वतंत्रता संग्राममे क्रांतिकारी युवकक भूमिका उल्लेखनीय अछि। प्रथम विश्वयुद्ध आ रूसी क्रांतिक बाद भारतमे सेहो क्रांतिकारी आन्दोलनक सूत्रपात भेल। रामप्रसाद बिस्मिल अशफाक उल्लाखाँ, शिव वर्मा, जयदेव कपूर, भगत सिंह, सुखदेव, बटुकेश्वर दत्त आ चन्द्रशेखर आजाद सदृश स्वतंत्रता-सेनानी लोकनि क्रांतिकारी कार्यकलापमे विश्वास रखैत छलाह । हिनका सभक बलिदानसँ स्वतंत्रता संग्रामकेँ जे गतिशीलता भेटलैक से स्वराज्यकेँ लग अनबामे सफल भेल।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेसमे सेहो बामपक्षक उदय भेल। समाजवादी विचारधाराक अगुआ

5B

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

बनलाह जवाहरलाल नेहरू तथा सुभाषचन्द्र बोस। हिनका सभकेँ अनेक बिन्दु पर गांधीजीसँ वैचारिक मतभेद रहनि, तथापि 1936 ई0 आ 1937 ई0 मे जवाहरलाल नेहरू तथा 1938 ई0 आ 1939 ई0 मे सुभाषचन्द्र बोसक कांग्रेस-अध्यक्ष बनब साम्राजवादी विचारधाराक प्रभुत्वक प्रमाण थिक। नेहरू अपन कार्यकारिणी समितिमे आचार्य नरेन्द्र देव, जयप्रकाश नारायण तथा अच्युत पटवर्धन सन समाजवादीकेँ रखलनि। बादमे नेहरू आ सुभाषचन्द्र बोसमे सेहो वैचारिक मतभेद भऽ गेल आ बोस स्वतंत्रता संग्रामकेँ क्रान्तिकारी मोड़ देबाक लेल अग्रसर भऽ गेलाह।

द्वितीय विश्वयुद्धक संग भारतीय स्वतंत्रता गतिमे तीव्रता आबि गेल। 1942 ई0 मे "अंग्रेज, भारत छोड़ू" क नारा देल गेल आ अन्ततः अंग्रेजकेँ भारत छोड़हि पड़लैक। भारत स्वतन्त्र भेल आ अपन संविधानक अनुसार शासन-तंत्रक शुभारंभ करबाक अवसर भारतवासीकेँ भेटलनि।

पन्द्रह अगस्त 1947 केँ भारत स्वतंत्र भेल। स्वतंत्र भारतक संविधान बनयबाक लेल संविधान सभाक गठन कयल गेल । ई सभा अत्यन्त व्यापक ओ सम्पूर्ण संविधानक निर्माण कयलक। एहि संविधानक अनुसार 26 जनवरी 1950 केँ भारतीय गणतंत्रक स्थापना भेल।

26 जनवरी 1950 सँ लागू भारतीय संविधान विश्वक प्रायः सर्वाधिक मानवीय आ उदात्त संविधान अछि। वस्तुतः एहि संविधानक निर्मातागण सतर्क रहथि जे भारत सन विशाल आ विविधातापूर्ण देशक संविधान एहन होमक चाही जे तात्कालिक समस्यासभक समाधान मात्र नहि, अपितु स्थायी दिशा निर्देश प्रस्तुत करबामे समर्थ होइक। राष्ट्रीय सांस्कृतिक धरोहरि आ विभिन्न देशक अनुभवक सन्तुलित समन्वय कयलेसँ एहन संविधानक निर्माण संभव छल। 395 अनुच्छेद आ 10 अनुसूची वाला लगभग 22 खंडमे विभक्त 400 पृष्ठक भारतीय संविधान एहने अछि।

एक दिस भारतीय संविधान ब्रिटिश कालमे भारतीय शासन लेल पारित विभिन्न अधिनियमक ऋणी अछि तँ दोसर दिस ब्रिटेन, अमेरिका, फ्रांस, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया, आयरलैंड आदि देशक संविधानक कतिपय विशिष्ट तथ्यकेँ एहिमे स्थान देल गेलैक। संविधान सभामे प्रारूप-समितिक अध्यक्ष डॉ0 भीमराव अम्बेदकर स्पष्टतः स्वीकार कयलनि जे," अपन नवीन संविधानमे जँ कोनो नव बात भऽ सकैत अछि तँ यैह जे ओहिसँ पहिने प्रचलित संविधान सभक त्रुटिक मार्जन कऽ देल जाय अथवा तकरा देशक आवश्यकताक अनुरूप बना लेल जाय।" चारूकात उपलब्ध नीक बातक समायोजनसँ जे विशाल संविधान बनल ताहिमे ब्रिटिश संसदीय

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

सर्वोच्चता, अमेरिकी संघात्मक व्यवस्था आ स्वतन्त्र आ निष्पक्ष न्यायालय एवं न्यायिक पुनर्निरीक्षणक सिद्धान्त , कनाडाक आदर्शपर संघ आ राज्यक बीच शक्तिक विभाजन, ऑस्ट्रेलियाक देखादेखी संघ आ राज्य दुनूक अधिकार क्षेत्र वाला समवर्त्ती सूची तथा आयरलैंडक अनुसरण करैत राज्य नीतिक निर्देशक सिद्धान्तक व्यवस्था कयल गेल।

निर्मित, लिखित आ सर्वाधिक व्यापक भारतीय संविधान वयस्क मताधिकार तथा एकल नागरिकतायुक्त लोकप्रिय प्रभुसत्ताक सिद्धान्त पर आधारित एक सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न लोकतान्त्रिक समाजवादी धर्मनिरपेक्ष गणराज्यक स्थापना करैत अछि, जाहिमे अल्पसंख्यक तथा पिछड़ल वर्ग सहित सभक लेल मौलिक अधिकार आ सामाजिक समानताक सिद्धान्तक आधारपर एक कल्याणकारी राज्यक स्थापनाक आदर्श प्रस्तुत कयल गेल अछि। भारतीय संविधानक एहि समस्त विशिष्टताक उल्लेख अन्तिम रूपसँ स्वीकृत संविधानक प्रस्तावनामे भेल अछि।

भारतीय संविधान सभा द्वारा निर्मित संविधानक विशिष्टतासभक उल्लेख एकर प्रस्तावनामे भेल अछि। वर्त्तमान भारतीय राजनीतिक तथा सामाजिक परिवेशमे प्रस्तावनामे उल्लिखित सामाजिक न्याय, मौलिक अधिकार तथा धर्मनिरपेक्षताक सिद्धान्त विशेष व्याख्याक अपेक्षा रखैत अछि। प्रस्तावनामे नागरिक लेल सामाजिक मात्र नहि अपितु आर्थिक आ राजनीतिक न्यायक बात सेहो कहल गेल अछि। लोकतान्त्रिक व्यवस्थाक संचालन लेल स्वतन्त्रता आ समानता तँ सर्वत्र मान्य रहल अछि, किन्तु भारतीय संविधानमे न्याय पर विशेष जोड़ देल गेल। सामाजिक न्यायसँ अभिप्रेत छल जे मनुष्य-मनुष्यमे जाति, वर्ग, अथवा आन कोनो आधार पर भेद नहि कयल जाय आ प्रत्येक नागरिककेँ उन्नतिक समुचित अवसर उपलब्ध होइक ई राज्यक दायित्व मानल गेल जे ओ दुर्बल वर्गक शोषण रोकय एकर विकास लेल विशेष यत्न तहिना करय हिनक आर्थिक न्यायसँ अभिप्रेत छल उत्पादनक आ न्यायोचित विभाजन आ राजनीतिक न्यायसँ तात्पर्य छल सब नागरिककेँ समान नागरिक आ राजनीतिक अधिकारक प्राप्ति ।

प्रस्तावनामे जाहि दोसर बात पर बल देल गेल से छल नागरिकक विभिन्न प्रकारक स्वतन्त्रता जकरा नागरिकक मौलिक अधिकार कहल गेल। विचार अभिव्यक्ति भाषण स्वनिर्माण आदि महत्त्वपूर्ण नागरिक स्वतन्त्रता अछि तँ मतदानमे भागलेब, प्रतिनिधि चुनाव नवीन निर्वाचनमे प्रत्याशी होयब, सार्वजनिक पद पर नियुक्ति लेल अभ्यर्थी होयब सरकारी नीतिक आलोचना करब आदि राजनीतिक स्वतन्त्रता कहल जाय सकैत अछि। एहि प्रकारक स्वतंत्रताकेँ संविधानमे मौलिक अधिकारक रूपमे परिगणित कयल गेल आ तकर संख्या 7 निर्धारित कयल गेल मुदा बादमे

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

सम्पत्तिक अधिकारकेँ एहि सूचीसँ हँटाय देलाक कारणे मौलिक अधिकारक संख्या 6 रहि गेल। एहि अधिकार सभक क्रियान्वयनक व्यवस्था तऽ संविधानमे कएले गेलैक अछि, विभिन्न परिस्थितिमे एकरापर प्रतिबन्ध लगयबाक व्यवस्था सेहो कयल गेल छैक। बियालिसम संवैधानिक संशोधन द्वारा अधिकार संग नागरिकक 10 मूल कर्त्तव्य सेहो सूची जोड़ि देल गेल छैक।

प्रस्तावनामे बियालिसम संवैधानिक संशोधन द्वारा एक अन्य महत्त्वपूर्ण वृद्धि धर्मनिरपेक्ष शब्दक कयल गेल छैक। ओना संविधानमे आरंभेसँ साम्प्रदायिक प्रतिनिधि समाप्त कऽ वयस्क मताधिकारक आधार पर संयुक्त प्रतिनिधित्वक पद्धति अपनाओल गेल। वस्तुत: ब्रिटिश शासनकालमे 1909 केर अधिनियम द्वारा साम्प्रदायिक प्रतिनिधित्वक पद्धति आरंभ कयल गेल छल जकर दुष्परिणाम स्वरूप भारतक विभाजन भेल।

उपर्युक्त सभ प्रावधानक माध्यमसँ वस्तुत: भारतीय संविधान एक लोककल्याणकारी राज्यक स्थापनाक प्रयास कयलक जाहिमे अल्पसंख्ययकक धार्मिक, भाषागत आ सांस्कृतिक हितक रक्षा कयल जा सकय तथा पिछड़ज जाति आ जनजातिक नागरिककेँ राजकीय सेवा, विधान सभा, संसद आदिमे विशेष संरक्षण देल जाइक। संविधानमे दलितोद्धार लेल अनेक अन्य महत्त्वपूर्ण व्यवस्था अछि, जेना संविधानक सतरहम अनुच्छेदमे कहल गेल जे "अस्पृश्यताक अन्त कयल जाइत अछि आ कोनो रूपमे तकर आचरणक निषेध कयल जाइत अछि-एहन आचरण दंडनीय होयत", एही क्रममे नियोजित आर्थिक विकासक अवधारणाक प्रावधान कऽ भारतीय संविधान 'समाजवादी समाजक' स्थापनाक नीतिकेँ स्वीकार कयलक। संविधान सभामे प्रस्तावनाक प्रारूप पर विचार होयबाक काल भारतकेँ 'समाजवादी गणराज्य' कहबाक प्रस्ताव कयल गेल छलैक, मुदा तखन ई कहि एकरा अस्वीकार कऽ देल गेलैक जे आर्थिक विकासक नीति मुक्त छोड़ल जयबाक चाही, कहबाक तात्पर्य ई जे भारतीय संविधान आन देशक संविधान सभ जकाँ अपन नागरिक लेल मात्र राजनीतिक कानूनी समानतेटा पर नहि सामाजिक समानता पर सेहो बल दैत अछि।

शब्दार्थ

निरापद - निर्विघ्न

अदम्य - जकरा दबाओल नहि जा सकय

मुखर - स्पष्ट; वाचाल

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

पराकाष्ठा - अन्तिम सीमा

सर्वाधिक - सभसँ वेशी

मार्जन - शुद्धिकरण

अभिप्रेत - तात्पर्य

प्रावधान - व्यवस्था

अस्पृश्यता - छुआछूत

दुष्परिणाम - अधलाह परिणाम

प्रश्न ओ अभ्यास

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न -

(i) सिपाही विद्रोह कहिया भेल छल ?

(क) 1944 (ख) 1856

(ग) 1857 (घ) 1861

(ii) बंग-भंग आन्दोलन कहिया भेल ?

(क) 1905 (ख) 1906

(ग) 1907 (घ) 1908

2. रिक्त स्थानक पूर्त्ति करू :

(i) अवकाशप्राप्त अंग्रेज आइ0 सी0 एस0 अधिकारी ..... कांग्रेसक स्थापना कयनिहार प्रमुख व्यक्ति छलाह।

(ii) भारत छोड़ो आन्दोलन ..... ई0 मे भेल।

3. निम्नलिखित वाक्यकेँ शुद्ध / अशुद्ध निर्दिष्ट करू -

(क) कांग्रेसक कलकत्ता अधिवेशनक अध्यक्ष छलाह पं जवाहर लाल नेहरू।

(ख) भारतीय संविधानमे 395 अनुच्छेद अछि।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

4. लघूत्तरीय प्रश्न -

(i) भारतीय कांग्रेसक स्थापना कहिया भेल ?

(ii) भारत कहिया स्वतंत्र भेल ?

(iii) संविधान सभामे प्रारूप समितिक अध्यक्षके छलाह ?

(iv) भारतक संविधान लिखित अछि वा अलिखित ?

(v) कोन सैनिक मेरठक सैनिक छावनीमे विद्रोह कयने छलाह ?

5. दीर्घोत्तरीय प्रश्न -

(i) भारतीय स्वतन्त्रता संग्रामपर एक छोट निबन्ध लिखू।

(ii) भारतक संविधानक विशेषताक वर्णन संक्षेपमे करू।

(iii) स्वतन्त्रता आन्दोलनमे गांधीक योगदानक उल्लेख करू।

(iv) गरमदल आ नरम दलक की तात्पर्य अछि?

(v) भारत छोड़ो आन्दोलनक वर्णन करू।

6. निम्नलिखित संज्ञासँ विशेषण बनाउ -

अधिकार, राष्ट्र , समूह , घोषणा , शासन

गतिविधि -

(i) एक स्वतंत्रता सेनानीक जीवनवृत्तक वर्णन करू।

(ii) महात्मा गांधीक आन्दोलन संबंधी गतिविधिक संकलन करू।

(iii) मौलिक अधिकारक आवश्यकता पर अपन विचार प्रकट करू।

7. स्वतन्त्र एवं परतन्त्रमे अन्तर स्पष्ट करू।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

निर्देश –

(i) गरमदल एवं नरमदल वर्गमे तैयार कराय शिक्षक छात्र लोकनिक बीच वार्त्तालाप कराबथि।

(ii) स्वतन्त्रता आन्दोलनमे भाग लेनिहार महापुरुषक एक सूची बनाउ।

(iii) स्वतन्त्रता आन्दोलनमे प्रेरणादायक कविताक पाठ शिक्षक छात्र लोकनिक द्वारा कराबथि।

(iv) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेसक संस्थापक ए० ओ० ह्यूमक जीवनी शिक्षक छात्र लोकनिकेँ सुनाबथि।

---

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

महेन्द्र मलंगिया

महेन्द्र मलंगिया मैथिली नाट्य साहित्यक एक सशक्त हस्ताक्षर छथि। हिनक जन्म मलंगिया (मधुबनी) मे 20 जनवरी 1946 ई0 मे भेल अछि। मैथिल समाजक विभिन्न समस्या पर लिखल हिनक नाटककेँ अभूतपूर्व मंचीय सफलता भेटल। हिनक 'ओकर आँगनक बारहमासा', जुआएल कनकनी, गाम नै सुतेयै, काठक लोक, ओरिजनलकाम, राजा सलहेस, कमलाकातक राम-लक्ष्मण असीता, लक्ष्मण रेखा खण्डित, एक कमल नोर मे, पूष जार की माघ जार, खिच्चड़ि आदि प्रसिद्ध अछि।

हिनक अनेकानेक एकांकी, नुक्कर नाटक ओ रेडियो नाटक लोक प्रिय भेल अछि। मैथिली नाटक ओ एकांकीकेँ राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त करौनिहार मलंगियाजी एक सफल सम्पादक छथि।

अनेकानेक संस्थासँ सम्बद्ध मलंगियाजी प्रबोध साहित्य सम्मान, यात्री चेतना पुरस्कार, चेतना समिति सम्मानक संगहि अनेक प्रतिष्ठित साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्थासँ सम्मानित भेल छथि।

प्रस्तुत एकांकीमे गाम-घरक ज्वलन्त समस्या पर विचार कयल गेल अछि। ग्रामीण लोकनि सरकारी सुविधा पर निर्भर करैत छथि। स्कूल भवनक अभावमे धीयापूताक पढ़ाइ सुचारू ढंगसँ नहि होइत अछि। मास्टर साहेब ग्रामीण लोकनिकेँ लाख अनुनय विनय करैत छथि विद्यालय भवन बनेबाक हेतु, मुदा हुनका सफलता नहि भेटैत छनि। एक गोटे अपन दरबज्जा पर नेना सभकेँ पढ़ेबाक किछु दिन लेल अनुमति तँ देलनि, मुदा ओ बादमे पाछू हटि गेलाह। लेभराह अन्हारमे एकटा इजोत भेल। इएह एहि एकांकीक कथ्य अछि।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

लेभराह अन्हारमे एक टा इजोत

पात्र :

मास्टर, किछु छात्र तथा किछु ग्रामीण।

(मंच; अंग्रेजीक VI अक्षरमे बाँटल। ओहिपर निम्नांकित दृश्य बनाओल-

(बीचवला भागमे दृश्य एक : एकटा गाछ।)

ओकर नीचाँ साफ-सुथरा। गाछक जड़िसँ किछु हँटिक' एकटा बाँहिवला कुर्सीक राखल। गाछ तथा कुर्सीसँ ओङठाओल क्रमशः एकटा छत्ता, छड़ी। कुर्सीक कातमे राखल तीनटा रजिस्टर। तीन पाँतीमे छोट-छोट बोरासभ ओछायल। पहिल पाँतीक बोराक अग्रिम भागपर किताब तथा कापी। एम्हर दुनू पाँतीक बोराक अग्रिम भाग पर सिलेट, कापी तथा किताब।

एक कातक भागमे दृश्य दू : एकटा छोट-छीन दलान। ओहिमे एकटा चौकी तथा आर्मबेंच। दलानेक एक कोनमे किछु घास-पात। चौकीपर आछाओन तथा गेरूआ मोड़ल राखल।

दोसरा कातक भागमे दृश्य तीन : एकटा घरक बाहरी दुआरि जे चाहक दोकानक रूपमे व्यवहार कयल जाइछ। कोइलाक चूल्हिपर दूटा चाहक केटली तथा दूधक सस्पेन चढ़ल। एक्केटा तख्ताक एकटा मचान बनाओल। ओहिपर सात आठ टा शीशाक छोटका गिलास, चीनीक डिब्बा, चाहक डिब्बा तथा चाहक छन्नी राखल। एकटा टेबुलपर दुटा बोइयाममे बिस्कुट तथा पानक सरमजाम सभ राखल। दुआरिक निच्चाँमे दूटा बेंच तथा दूटा पुरान कुर्सी राखल।

पात्रक प्रथम स्थिति पहिल दृश्यपर : मास्टर साहेब कुर्सीपर आ छात्र सभ बोरापर बैसल अछि। किछु छात्रक आगूमे किताब, कापी आ सिलेट छैक।

(प्रकाशक स्थिति : मात्र दृश्य एक आलोकित होइछ, दृश्य दू आ तीन पर अन्हार)

पर्दा हँटैत अछि

मास्टर – (निचला रजिस्टर उठा क') ..... आब वर्ग तीनक विद्यार्थी सभ हाजरी बजै जाइ जो।

(पछिला पाँतीक छात्र सभ किछु साकांक्ष भ' जाइछ, मुदा बिचला आ

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

अगिला पाँतीक छात्र सभ कचबच करैत अछि ।. छड़ीसँ कुर्सीक पौआ ठोकैत हल्ला बन्न कर, नहि तँ पिटबौक।)

(सभ छात्र शान्त भ' जाइछ। रजिस्टर उघारिक' हाजरी लैत) रौल नम्बर एक।

छात्रएक – मास्टर साहेब! ओ नहि आयल।

मास्टर – (रौल नम्बर एक कलम रोपिक') किऐक ?

छात्रएक – ओकर बाबू कहलकैक जे आइ नहि जो।

मास्टर – से किऐक ?

छात्रएक – मेघ लागल छैक। ओहिठाम गीदड़ बनबाक काज नहि छैक।

मास्टर – एखन कहाँ वर्षा होइत छैक जे ?

छात्र दू – (दृश्य दू दिस आङुरसँ संकेत करैत) हे मास्सहेब ! रजबाक दलान दिस देखियौ, केहन जोर मेघ उठलै - ए।

(सभ छात्र ओम्हरे तकैत अछि आ अपन-अपन किताब सम्हार' लगैछ।)

मास्टर – तोँ सभ हल्ला ..... रे, किताब किऐक सम्हारैत छेँ ?

छात्र तीन – मास्टरसाहेब ! वर्षामे भीजि जायब।

मास्टर – वर्षा जखन औतेक तखन । एखन की थिकैक ?

छात्र तीन – मास्साहेब ! ओहू दिन इऐह कहलिऐ आ हमसभ भीजि गेलहुँ।

मास्टर – बच्चामे सहल रहतौक तँ बढ़िया होयतौक।

(छात्रसभ एक दोसराक मुँह ताक' लगैछ। मास्टर साहेब पुनः हाजरी लैत छथि। छात्रसभ उठि-उठिक' उपस्थित श्रीमान् करैत अछि।)

रौल नम्मर पाँच।

छात्र दू – मास्साहेब ! ओ आब एहि स्कूलमे नहि पढ़त।

मास्टर – एहीमे नहि पढ़त तँ कत' पढ़त ?

छात्र दू – मधुबनी । ..... ओ कहलकै जे एहिठाम इसकूल-तिसकूल छैक नहियेँ। बरिसातमे बड़ बाधा होइत छैक।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

छात्र तीन – हँ, मास्साहेब ! ओकर बाबू सभ दिन काजपर जाइत छैक। ओकरो लेने जयतैक आ लेने औतैक।

मास्टर – हूँ; हमर एहि गाममे जमीन अछि जे हम स्कूल बना दियौनि।

(छात्रसभक पुनः कचबची बढ़ि जाइत छैक। मास्टर साहेब छड़ीसँ कुर्सीकेँ बजबैत छथि।)

हल्ला शान्त ! ..... हल्ला शान्त !!

(सभ छात्र चुप भ' जाइत अछि। हाजरी लैत) रौल नम्मर सात .....रौल नम्मर सात।

छात्र चारि – मास्साहेब ! ओहो भरिसक नहि पढ़त। ओकर माय कहैत छलैक जे गामक स्कूलमे पढ़ाई तढ़ाई होइत छैक नहियेँ आ ..... बेसी छुटिये रहैत छैक।

मास्टर – (किंचित क्रोधसँ निच्चाँमे रजिस्टरकेँ पटकैत) स्कूलक कारणेँ पढ़ाई नहि होइत छैक तँ हम की करियौक ?..... कपार फोड़िक' मरि जाउ ?

(छात्र मास्टर साहेबक मुँह ताक' लगैछ)

छात्र पाँच – मास्साहेब ! स्कूलक घर कहिया बनतैक ?

मास्टर जहिया घोड़ा पाउज करतैक।

छात्र पाँच – घोड़ा कहिया पाउज करतैक ?

मास्टर – जहिया स्कूल लेँ क्यो जमीन देतैक।

(छात्र एक आ दू किछु गप्प करैत देखल जाइछ। आवेशक तनाव मुँहपर आनिक') रे, गप्पे करबाक छौक त' एहिठाम किऐक अयलेँ अछि ?

छात्र एक – (छात्र दूकेँ संकेत क') ई कहैत छैक जे घोड़ा पाजु नहि करैत छैक।

छात्र दू – मास्साहेक! अहाँ काल्हि कहलिऐक नहि जे .....

मास्टर – हँ हँ, ठीके कहलिऐक । घोड़ा पाजु नहि करैत छैक।

छात्र तीन – मास्साहेब ! अहाँ हमरासभकेँ ठकैत छी। स्कूल नहि बनतै।

मास्टर – आशा तँ हमरो नहि अछि, मुदा .....

(मास्टर साहेब उठि क' छात्रक चारू भाग टहलि जाइत छथि। पुनः

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

अगिला पाँतीक छात्रक आगूमे ठाढ़ भ' जाइत छथि । अगिला पाँतीक छात्र सभसँ) तोँ सभ कल्हुके सिखौलहाकेँ दोहरा क' लिख। तखन आगू देखा देबौक। (दोसर पाँतीक छात्रसँ) तोँ सभ अभ्यास बीसक हिसाब बना।

(दुनू पाँतीक छात्रसभ अपन कार्यमे लागि जाइत अछि। मास्टर साहेब आबिक' कुर्सीपर बैसि जाइत छथि)

वर्ग तीनक विद्यार्थी सभ लिखना लबै जाइ जो (छात्र एक उठिक' तेसर पाँतीक छात्रसभसँ लिखनाक कापी असूल करैत अछि)

मास्टर – किऐक रे ?

छात्र चारि – मास्साहेब ! हम लिखने छलहुँ । गामेपर बिसरि, गेलहुँ।

मास्टर – हँ, सभदिन तोहर एहने-एहने बहन्ना होइत छौक । ..... एम्हर अबै।

(छात्र चारि डरसँ सर्द भेल मास्टर साहेब लग जाइत अछि) (छड़ी देखाक') ई छड़ी देखैत छही ?..... दोसर दिनसँ एहन बहन्ना बनयबेँ तँ बड़ पिटान पिटबौ । जो ।

(छात्र चारि मुस्कुराक' पुनः यथावत् बैसि जाइत अछि)

ई बढ़लापर बड़ पैघ नेता होयतैक।

छात्र तीन – मास्साहेब ! जे ठकैत छैक से नेता होइत छैक ?

मास्टर – हूँ।

(छात्र दू सभ कापी असूलिक' मास्टर साहेबक हाथमे द' दैत अछि आ अपने कातमे ठाढ़ भ' जाइत अछि। मास्टर साहेब ऊपर-झापर पढ़िक' दस्तखत कर' लगैत छथि।)।

छात्र चारि – (छात्र तीन दिस संकेत क')। मास्साहेब ! ई हमरा गारि पढ़ै ए।)

मास्टर – (अपनाकेँ कार्यमे व्यस्त रखैत) की रे दारोगा साहेब ! गारि बजैत छेँ हड्डी तोड़ि देबौक।

छात्र तीन – नहि मास्साहेब ! ई झुट्ठे कहै-ए।

मास्टर – (पूर्ववत् स्थितिमे अपनाकेँ रखैत) की रे ओकील साहेब ! ओकालति करबा

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

छौक ?

छात्र पाँच – (छात्र छौ दिस संकेत क' क') मास्साहेब! ई कहै-ए, हिसाब नहि बनायब।

छात्र छौ – नहि मास्साहेब ! हम बनबैत छी।

मास्टर – नहि, यदि मेहनतिसँ डर लगैत होउक तँ पठा दियौक कोनो हाइस्कूल वा कालेजमे। फाँकी अपन दैत रहि हँ।

छात्र तीन – मास्साहेब !.....

मास्टर – (अकछिक' डाँटल स्वरमे) फेर मास्साहेब-मास्साहेब तखनसँ करैत अछि! आब क्यो मास्टरसाहेब करबँ तँ पिटबौ। चुप-चाप अपन काज कर।

– (कापी सही क' क' दैत छथि । छात्र दू सभकँ बाँटि दैत अछि)

वर्ग तीनक विद्यार्थीसभ एम्हर अबैत जाइ जो ।

– (पछिला पाँतीक छात्रसभ आबिक' मास्टर साहेबकँ घेरि लैत अछि। मास्टर साहेब संकेतसँ सभ छात्रकँ मुँहपरसँ हँटि जाय कहैत छथि । सभ छात्र आगूसँ हँटिक' दुनू कात ठाढ़ भ' जाइत अछि। पोथी उनटाक') शान्तिनिकेतन पढ़बाक छौक ?

एक छात्र – जी

मास्टर – (पोथीक कोनो निर्दिष्ट पन्ना उनटाक') शान्तिनिकेतनक माने होइत छैक शान्तिक घर। ई बंगालक बोलपुरमे छैक । ..... एहि विज्ञानक युगमे ई अपना ढंगक प्रथम स्कूल थिक। ..... एहि स्कूलमे विद्यार्थीसभ गाछपर आ गाछ तर बैसिक' पढ़ैत अछि। .....एकर स्थापना विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर कयलनि। ..... बुझलही ?

सभ छात्र – जी !

– (सभ छात्र अपन-अपन स्थानपर जाक' बैसि जाइत अछि। मास्टर साहेब उठिक' अगिला पाँतीक छात्रसभक सिलेटपर किछु-किछु लिखैत छथि । बीच-बीचमे 'एहिना क' लिख' बजैत छथि ।)

छात्र एक – (छात्र दू दिस संकेत क') मास्साहेब ! ई हमरा कहै-ए तोहर बाप रवीन्द्रनाथ छथुन।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

छात्र दू – नहि मास्साहेब ! पहिने इऐह हमरा कहलक।

(मास्टर साहेब उठिक' दुनू छात्र लग जाइत छथि)

मास्टर – की रे ?

छात्र एक – मास्साहेब ! ई हमरा .....।

छात्र दू – (छात्र एकक बात लोकैत) नहि मास्साहेब ! पहिने इऐह हमरा.....।

मास्टर – (छात्र दूक बात लोकैत) हम सब बुझैत छिऐक, तोहरसभक बाप रवीन्द्रनाथ छथुन।

(दुनू छात्र मास्टर साहेबक मुँह ताक' लगैछ)

मुँह की तकै' छँ ? जहिना रवीन्द्रनाथ ठाकुर शान्ति-निकेतनक स्थापना कयलनि, तहिना तोरोसभक बाप एहि स्कूलकेँ शान्तिनिकेतनक रूपमे राख' चाहै छथुन।

छात्र तीन – मास्साहेब ! हमरा पोथीपर फूही पड़लै' ऐ

(छात्र तीनक पोथी कात-करौटक छात्रसभ देख' लगैछ। मास्टर साहेब मेघ दिस तकैत छथि।)

छात्र चारि – मास्साहेब ! हमरो कापीपर पड़लै-ऐ।

(सभ छात्र हड़बड़ा जाइत अछि आ अपन-अपन पोथी सम्हार' लगैछ। कचबची बहुत बढ़ि जाइत अछि।)

मास्टर – रे ..... एना .....।

छात्र पाँच – (दृश्य दू दिस संकेत करैत) मास्साहेब ! बाप रे बाप देखियौ केहन जोर मेघ ?

(मेघ गरजबाक ध्वनि सुनल जाइछ। सभ छात्र जे पंक्तिबद्ध छल, से अस्त-व्यस्त भ' जाइत अछि।)

छात्र एक – मास्साहेब ! हमसभ भीजि जायब। जल्दी छुट्टी द' दियौक।

मास्टर – .....उँ.....? उँ.....? उँ..... जाइ जो।

(सभ छात्र अपन-अपन पोथी आ बोरा लऽ कऽ जहिँ-तहिँ पड़ाइत अछि।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

एहि क्रममे किछु छात्रक पोथी छूटि जाइत छैक। मास्टर साहेब विवशताभरल आँखिसँ सभ वस्तुकेँ सैँत' लगैत छथि। प्रकाश दृश्य एकपरसँ दृश्य दूपर चल जाइत अछि। ग्रामीण एक दलानमे प्रवेश करैत अछि। ओ मोड़ल ओछाओनकेँ पसारिक' सुतबाक उपक्रम करैछ। मास्टर साहेब रजिस्टर, किताब, छत्ता तथा छड़ी ल' क' दलानमे अबैत छथि।)

ग्रामीण एक – (कड़गर स्वरमे) मास्टर साहेब ! हम अपन दलानपर नहि पढ़बऽ देब।

मास्टर – हम वर्षा दुआरे अयलहुँ अछि।

ग्रामीण एक – विद्यार्थीसभ कहाँ गेल ?

मास्टर – सभ चल गेलैक।

(मास्टर साहेब रजिस्टर, पोथी तथा छड़ी' आर्मबेंचपर राखि दैत छथि। छता आर्मबेंचक पाछुमे लटका दैत छथि। ग्रामीण एक कोनटामे हुलकी मारिक' बाहरमे किछु तकैत अछि।)

ग्रामीण एक – हमरा भेल जे अहाँ फुसिये कहैत छी।

(मास्टर साहेब आर्मबेंचपर बैसि जाइत छथि)

ग्रामीण एक – हूँ, चिलकाक लाथेँ तँ चिलकाउर जीवे करैत छैक।

मास्टर – अपनेक कहबाक तात्पर्य नहि बुझलहुँ ?

ग्रामीण एक – वर्षा आबि गेलासँ अहुँकेँ आराम भेटिये जाइत अछि। एम्हर मङनीमे अपन दरमाहा .....।

मास्टर – (विक्षुब्ध भ' क' ग्रामीण एक दिस तकैत) तँ एहि वर्षामे हम की करियौक ? एहिमे यदि विद्यार्थीसभ पढ़य तँ पढ़ा दिऐक।

ग्रामीण एक – नहि, नहि, एहिमे कोना पढ़तैक ?

मास्टर – तखन अपने की कहल गेलैक जे.....। एखन अबैत देरी कहलहुँ जे दलानपर नहि पढ़ब' देब।

ग्रामीण एक – हम दलानपर कोना पढ़ब' देब ? लोक दलान बन्हने अछि अपन सुख ले' कि ..... ! की गाममे आर दलान नहि छैक ?

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

मास्टर – सभ तँ सैह कहैत छथि।

(मास्टर साहेब रजिस्टर उनटाक' किछु-किछु भर' लगैत छथि)

ग्रामीण एक – तखन हमरे कोना कहैत छी जे.....। सभसँ बुड़िबक हमहीँ छी ?.....की हमरे धीया-पूता पढ़ैत अछि ?

मास्टर – (अपनाकेँ कार्यमे व्यस्त रखैत) आखिर बच्चा सभ तँ अपनेक गामक थिक।

ग्रामीण एक – मूड़ी मारू बच्चासभकेँ । ओहि दिन पड़ल रही से ततेक ने कचबच कयलक जे.....। तखन दलान बान्हिक' कोन सुख भेल ?

(चुप्पी । ग्रामीण एक डाँड़सँ तमाकू बाहरक' लगब' लगैत अछि)

एक दिन पढ़ब' देलहुँ, दू दिन पढ़ब' देलहुँ..... आ एना जे सभ दिन हमरे दलानपर कहब से तँ पार नहि लागत।

(चुप्पी। मास्टर साहेब दोसर रजिस्टर उनटा क' किछु लिख' लगैत छथि ! ग्रामीण एक तमाकू लगबैत रहैत अछि। एहि क्रममे तमाकू गर्दा नाकमे लगा लैत अछि।)

सरकार एकटा स्कूल बना देतैक से नहि होइत छैक।

मास्टर – अपनेलोकनिक काज अछि से तँ करिते नहि छी। तखन सरकारकेँ कोन गर्ज छैक जे.....

ग्रामीण एक – हमर व्यक्तिगत रहैत तँ भ' गेल रहितैक, मुदा ई तँ छैक दसगर्दाक काज, तखन दसगर्दाक काज ले' हमहीँ किऐक.....

मास्टर – एहन भावना राखि कोना कोनो दसगर्दाक काज होयत?

ग्रामाण एक – नहि होयतैक तँ नहि होउक। (ग्रामीण एक ठोरमे तमाकू राखि क' चौकीपर पड़ि रहैत अछि) सरकारो आन्हर अछि। जत' स्कूल नहि छैक ओत' मास्टर किऐक ध' दैत छैक?

मास्टर – रोकि देल जाओ ने !

ग्रामीण एक – नहि, नहि हम अहाँ द' नहि कहलहुँ। कतेको ठाम एहिना चलैत छैक।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

मास्टर – जाहि ठामक जनते चौपट्ट छैक, ओहि ठाम .....

ग्रामीण एक – एह ! घुमा-फिराक' जनतेक दोष।

मास्टर – सरकारक एक्को पाई दोष छैक तँ..... (किछु क्षणक बाद) दोष एतबे छैक जे नि:शुल्क शिक्षा देबाक हेतु शिक्षक द' दैत छैक।

(ग्रामीण एक पट द' बिच्चे दलानपर थूक फेकैत अछि। मास्टर साहेब कन्हुआकेँ देखि पुन: कार्यमे व्यस्त भऽ जाइत छथि।

ग्रामीण एक – मास्टर साहेब ! एक टा काज भ' सकैत अछि ?

मास्टर – (रजिस्टर बन्न क' क' उत्सुकतासँ ग्रामीण एकक मुँह तकैत) की ?

(ग्रामीण एक उठिक' बैसि जाइत अछि)

ग्रामीण एक – हम दलान पढ़ब' ले' देब। मुदा, सरकारसँ लिख-पढ़ी क' भाड़ाक रूपमे किछु..... अहाँ तँ देया सकैत छी!

मास्टर – ई कोना भ' सकैत छैक ! एहन नियमे नहि छैक जे .....।

ग्रामीण एक – सैह हम कहलहुँ जे..... यदि.....।

मास्टर – एहन कोनो उपाय रहितैक तँ हम बाज नहि आयल रहितहुँ.....तखन एकटा भ' सकैत छैक।

ग्रामीण एक – (उत्सुकतासँ मास्टर साहेबक मुँह तकैत) की ?

मास्टर – विद्यार्थीसभ एक एक रुपैयाक महिना देअय तँ..... (किछु क्षणक बाद) मुदा ओहो होब' वला नहि अछि। छमाही परीक्षाक फीस एखन धरि कैक टा विद्यार्थी रखनहि अछि। (किछु क्षणक बाद) दोसर, गार्जियनोसभ.....

ग्रामीण एक – नहि होब' वला अछि तँ चर्चे छोड़ू'

(मास्टर साहेब उठिक' कोनटा देने किछु तकैत छथि। पुन: बीच दलानमे अबैत दथि)

मास्टर – एकटा काज कयल ने जाओ।

ग्रामीण एक – की ?

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

मास्टर – पार लगाक' अपने दलान देल ने जाओ!

ग्रामीण एक – (किछु सोचैत) से.....से भ' सकैत अछि। (पुनः किछु सोचैत) मुदा, ओहन दलान तँ गाममे तीनिये ँ चारिटा अछि।

मास्टर – जतबे छैक, ओतबेमे पार लागि जयतैक।

ग्रामीण एक – (पुनः किछु सोचिक') हँ यौ मास्साहेब! सत्त पूछी तँ दलान देबामे कोनो हर्ज नहि, 'मुदा .....।'

मास्टर – की ?

ग्रामीण एक – आब देखियौ-भादवमे आँसु-मड्डुआ होयत-फेर अगहनमे धान-तान रहत। सभ हमर दलानेपर रहैत छैक। विद्यार्थीसभ केहन बानर होइत छथि से तँ बुझले अछि।

मास्टर – एकर जिम्मा हम लैत छी। एक्को रत्ती किछु नोकसान नहि होयत।

ग्रामीण एक – एह ! अपने कहब से मानब !

(नेपथ्य सँ- 'हे..... हे.....हे.....घुम रे.....घुम रे.....ई चमरा पेटक शब्द सुनल जाइछ। ग्रामीण एक उठिक' कोनटा देने तकैत अछि।) ई मालबला.....। (किछु क्षणक बाद बीच दलानमे आबिक') मेघ बहि गेलैक । बेकारे छुट्टी द' देलिऐक।

मास्टर – फूँही पड़' लगलै तँ हम की करितिऐक ?

ग्रामीण एक – एक-दू टा फूँहीसँ विद्यार्थीक देह नहि गलि जैतैक।

मास्टर – हम नहि जनलिऐक जे फूँहिये पड़िक' रहि जयतैक।

(मास्टर साहेब अपन सभ समान सम्हारैत छथि । ग्रामीण एक चौकीपर बैसि जाइत छथि।)

ग्रामीण एक – फेर पढ़ब' जाइत छिऐक ?

मास्टर – विद्यार्थीसभ आब नहि ओतैक।

ग्रामीण एक – कतेक बाजल अछि ?

मास्टर – सी सामान पजियाक', (घड़ी देखैत) डेढ़।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

मास्टर – (ग्रामीण एककेँ कन्हुआ क' देखि) हूँ।

(मास्टर साहेब चल जाइत छथि। ग्रामीण एक चद्दरि तानिकेँ सुतबाक उपक्रम करैत छथि)

ग्रामीण एक – एह ! क्यो देख' वला नहि।

(ग्रामीण एक मुँह झाँपिक' सूति रहैत अछि। दृश्य दूपर अन्हार पसरि जाइछ । किछु क्षणक बाद ग्रामीण एक उठिक' चल जाइत अछि। दृश्य तीनपर पहिने ग्रामीण सात आबि जाइत अछि। ओ अपन चाहक केटलीकेँ छूब'-छाप' लगैछ। तकर बाद एक-एक ग्रामीण सभ आबिक' क्रमश कुर्सी आ बेंचपर बैसैत अछि) तत्पश्चात् प्रकाश धीरे-धीरे दृश्य तीनपर पसरि जाइछ।

ग्रामीण दू – हमरालोकनि किऐक बजाओल गेलहुँ अछि ?

ग्रामीण एक – हमरा कहलनि जे अपनेलोकनि चलू, हम आर लोककेँ बजौने अबैत छी ?

(मास्टर साहेब आबिक' ठाढ़ भ' जाइत छथि आ एक बेर सभकेँ तकैत छथि ।)

मास्टर – सभगोटे तँ आबिये गेलहुँ। एक दू गोटे आर अबैत छथि। किछु गोटे कहलनि जे हमरा फुर्सतिये नहि अछि।

ग्रामीण एक – तखन कोना भेल ?

मास्टर – हम जबर्दस्ती कोना अनियौन ? औताह तँ अपने विचारेँ ।

(मास्टर साहेब बीचमे चुक्कीमाली भ' क' बैसि जाइत छथि।)

ग्रामीण दू – एह ! ऊपरे किऐक ने बैसलहुँ ?

ग्रामीण दू पहिने धकियाक' जगह बनयबाक प्रयास करैछ, मुदा जगह नहि होयबाक कारणेँ अपने उठबाक उपक्रम करैत अछि।

मास्टर – नहि, नहि ..... अपने बैसल जाओ।

(मास्टर साहेब उठिक' आधा उठल ग्रामीण दूकेँ बैसबैत छथि।)

ग्रामीण तीन – ई बैसार तँ जेठरैयतेक दरबज्जापर करितहुँ । एहिठास बैसौक दिक्कत .....

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

ग्रामीण चारि – ओहिठाम लक्ष्मणजी नहि जैतथिन ।

ग्रामीण पाँच – अयँ ! एखन धरि भँड़ा -महिसिक कानि छनिहँ।

ग्रामीण दू – नहि, से तँ इऐह ठीक छैक। एहिठाम चाहो पीबाक लाथेँ.....आ ओना आइ-काल्हि के जाइत छैक मिटिंगमे ?

(ग्रामीण एक आ दू फूसुर-फूसुर किछु गप्प करैत देखल जाइछ । मास्टर साहेब पुन: ओहिना बैसि जाइत छथि।)

ग्रामीण तीन – बेदा भाइ ! तमाकू दहक ।

ग्रामीण एक – अपने दहक।

(ग्रामीण एक डाँड़सँ तमाकूक डिब्बा बाहर करैत अछि आ ओकरा खोलिक' देखा दैछ) नहि छह।

ग्रामीण तीन – हमर एकदम तीत लगैत छैक।

ग्रामीण एक – तोँ लोककेँ ठकबाक नीक उपाय सोचने छह।

ग्रामीण तीन – आ तोँ नहि ? दहक दोसर डिब्बामे सँ।

(ग्रामीण एक आ तीन क्रमश: अपन दाँत चियारि दैत अछि।)

ग्रामीण एक – तमाकू तँ चाह पीबिक' खयबामे बढ़ियाँ लगैत छैक।

ग्रामीण चारि – पिअयबहक ?

(ग्रामीण सात देबालमे ओङठिक' ठाढ़ भ' जाइत अछि। मास्टर साहेब बिचला आङुरसँ निच्चाँमे किछु लिख' लगैत छथि।)

ग्रामीण एक – हम ? हमर कोन माय मुइली अछि ?

ग्रामीण चारि – तँ .....।

ग्रामीण दू – (ग्रामीण चारिक मुँहक बात लोकैत) सत्त पूछी तँ ई मास्टरे साहेबक काज छनि। तेँ हिनके पिअयबाक चाही।

ग्रामीण पाँच – हिनक कोन काज छनि ? स्कूल बनतह तँ अपनेसभक बच्चा पढ़तह।

ग्रामीण दू – से तँ बुझलहुँ मुदा, ... नहियो छैक तँ बच्चासभ कहुना क' पढ़िये लैत अछि।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

ग्रामीण एक – बाहरमे हिनका अवस्से लोक कहैत होयतनि जे कहेन स्कूलमे छी जकरा एकटा घरो नहि छैक। ..... तखन हिनको कोनादन लगैत होयतनि। बनि गेलासँ हिनको छाती फूलि जयतनि जे .....।

ग्रामीण दू – से तँ ठीके।

ग्रामीण तीन – छाती फुलनि वा नहि, मुदा आराम हिनके होयतनि। तँ चाह आइ इएह पियाबथु।

मास्टर – (बिक्षुब्ध नजरि सभ ग्रामीणपर फेरिक') बनबह हो चाह।

ग्रामीण सात – कैकटा ?

मास्टर – गनि लहुन ने !

(ग्रामीण सात गनबाक क्रममे सभकेँ देखि लैत अछि आ अपन काजमे जुटि जाइछ। ग्रामीण छओ प्रवेश करैत अछि। एकटा कुर्सीपर बैसल ग्रामीण उठि जाइछ। ग्रामीण छओ ओहिपर बैसि जाइत अछि। ग्रामीण चारि आ पाँच किछु गप्प करैत देखल जाइछ।)

(ग्रामीण सातसँ) राजकुमार ! एकटा बैस' ले' किछु लाबह।

(ग्रामीण सात नेपथ्यसँ एकटा स्टूल आनिक' द' दैत अछि। कुर्सी परसँ उठल व्यक्ति स्टूलपर बैसि जाइछ। ग्रामीण सात पुनः अपन काजमे लागि जाइत अछि।)

ग्रामीण छओ – ई गाम थिक ! एकटा स्कूल नहि बनि रहल अछि।

मास्टर – यदि स्कूल नहि बनलैक तँ स्कूलक स्वीकृतियो तोड़िक' दोसर ठाम ध' देतैक।

ग्रामीण छओ – तखन आँखि खुजतैक लोकक।

ग्रामीण पाँच – मास्टरो साहेबकेँ बढ़ियाँ भ' जयतनि। चल जयताह एहि किच्किचसँ दोसरठाम।

मास्टर – (ग्रामीण सातसँ) एकटा चाहक कोटा आर बढ़ा दहक।

ग्रामीण चारि – की यौ मास्टर साहेब! सभ अबैत गेलाह ?

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

ग्रामीण दू – के अयलाह आ के नहि अयलह से तोँ नहि देखैत छहक ?

ग्रामीण चारि – एह ! बुड़िबक जकाँ गप्प नहि ने करी ! आखिर एहि बैसारक आयोजन तँ मास्टरे साहेब कयलनि अछि। तँ हिनकासँ पूछब हमर उचित ।

ग्रामीण दू – बेस, तोँही काबिल छह। आर सभ एम्हर बुड़िबके छैक।

(ग्रामीण पाँच आ तीन किछु गप्प करैत देखल जाइछ।)

ग्रामीण छओ – आब गप्प सप्प छोड़ह! जाहि काज ले' जमा भेलहुँ अछि से करह !

ग्रामीण पाँच – (गप्प बन्नक') कह' ने ! हम तैयार छी ।

ग्रामीण एक – बढ़िया होयत जे चाहक सङे गप्प-सप्प शुरू करितहुँ। (ग्रामीण सातसँ) की हौ ? चाह भ' गेलह ?

ग्रामीण सात – हँ, हँ, भ' गेलह ?

(ग्रामीण सात गिलासमे चाह छान' लगैत अछि।)

ग्रामीण छओ – तावत गप्पो चलय तँ हर्ज की ?

ग्रामीण चारि – हर्ज तँ कोनो नहि। ..... की यौ मास्टर साहब ! हमरा लोकनिकेँ किऐक बजौलहुँ अछि ?

मास्टर – सभ बात तँ अपनेलोकनि जानिते छी ।

ग्रामीण चारि – हमरालोकनि तँ जनैत छी बहुत किछु। तथापि अहाँ कहब तखन ने जे .....।

(ग्रामीण एक आ दू किछु गप्प करैत देखल जाइछ।)

ग्रामीण छओ – एह, गप्प नहि करह। सुनह !

मास्टर – समस्या अछि स्कूलक घरक ।..... घरक अभावमे कोन -कोन दशा भ' रहल अछि से तँ अपनेलोकनिकेँ बुझले अछि। तँ अपने लोकनिसँ प्रार्थना अछि जे कतहु स्कूलक हेतु पाँच धूरि भूमि भेटय आ केहनो घर अपने लोकनि ठाढ़ क' दी !

(सभ ग्रामीण मूड़ि गोति लैत अछि। चुप्पी । ग्रामीण सात उभेरक हिसाबेँ सभकेँ चाह देब' लगैछ। सभ मूड़ि गोतिक' चाह पीबि' लगैछ।)

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

ग्रामीण छओ – (मूड़ी उठाक') सुनैत नहि गेलहक ?

ग्रामीण पाँच – (मूड़ी उठाक') सभ सूनलिऐक।

ग्रामीण चारि – (मूड़ीक उठाक') सभसँ पहिने जगह टेबल जाय।

ग्रामीण तीन – (मूड़ी उठाक') स्कूल जोगरक तँ कयकटा ने जगह छैक।

ग्रामीण छओ – बाजह ने !

ग्रामीण तीन – से तोँ नहि जनैत छहक ?

(चुप्पी । किछु गोटे कनाफुसकी कर' लगैत अछि।)

ग्रामीण छओ – जगह तँ कैकटा ने छैक -श्यामजीक जामुन तर, छेदू भाइक बसेढ़, सुन्दर लालाजीक बराड़ी, मन्नूक भीड़ी महेशक बारी .....।

ग्रामीण एक – आ तोहर कलमक कात नहि ?

ग्रामीण छओ – से हम कहाँ कहैत छियह नहि ..... ? ओहो छैक।

(चुप्पी। सभ गोटे चाहक चुस्की लैत एक दोसरक मुँह तकैत अछि।)

ग्रामीण पाँच – एना कयने काज नहि चलतह। खेतो-पथार गेनाइहरमाद होइत अछि।

ग्रामीण छओ – तँ।

(चुप्पी। किछु गोटे चाह पीबिक' खाली गिलास निच्चाँमे राखि दैछ)

की ओ सुन्दर ाल जी ?)

ग्रामीण तीन – हमहूँ इऐह प्रश्न अहाँसँ करैत छी !

ग्रामीण छओ – तखन तँ बेकारे बेसैत गेलहुँ। छोड़ि दिय'।

ग्रामीण तीन – हूँ। अपन बेरमे छोड़ि दिय'।

ग्रामीण चारि – मन्नू बजैत नहि छह ?

ग्रामीण दू – तोँही बाजह ने !

ग्रामीण चारि – स्कूल नहि बनैक ?

ग्रामीण दू – अबस्स बनैक। दैत जइयौक जगह।

ग्रामीण तीन – से ककरा कहैत छिऐक ? अहीँ दियौक ने ? बड़ टोनगर जमीन अछि।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

ग्रामीण चारि – की, हमरे बच्चा ओहि स्कूलमे पढ़त ?

(ग्रामीण चारि बेंचपरसँ उठिक' बिच्चेमे चुक्कीमाली भ' बैसि जाइत अछि।)

ग्रामीण पाँच – से कहाँ क्यो कहैत अछि जे अहींक बच्चा पढ़त ? तखन जथेवाला जगह देथिन कि ..... (किछु क्षणक बाद) की यौ ! बेदा भाई ?

ग्रामीण एक – एकटा हमहीँ अहाँकेँ सुझैत छी।

(ग्रामीण एक ग्रामीण चारि जकाँ बैसि जाइत अछि।)

ग्रामीण एक – द' ने दियौक अहीँ?

ग्रामीण पाँच – हमरा देबामे कोनो हर्ज नहि, मुदा हम ओहिठाम बास ल' जायब।

(ग्रामीण पाँच ग्रामीण एक जकाँ उठिक' बैसि रहैत अछि।)

ग्रामीण एक – वैह बात तँ हमरो सङ अछि। ओहिठाम सभकेँ निर्वाह नहि होयतैक।

ग्रामीण दू – हमर समस्या ई अछि जे हमरा ओहिठाम मालक घर ल' जयबाक अछि।

(ग्रामीण दू ग्रामीण पाँच जकाँ उठि क' बैसि जाइत अछि।)

ग्रामीण तीन – हम तँ जमीन द' दितहुँ , मुदा घरमे सभक विचार नहि छैक'। तखन हम ओहि ले' घरमे फूट करू से .....।

(ग्रामीण तीन उठि जाइत छथि।)

ग्रामीण चारि – हम खरिहान ओहिठाम नहि करितहुँ तँ भूमि देबामे कोनो हर्ज नहि छल।

ग्रामीण छओ – हम यदि दैत छी तँ हमर पर्दा-पोश मारल जाइत अछि।

(चुप्पी। सभ एक दोसरसँ फुसुर-फुसुर गप्प कर' लगैत अछि।)

ग्रामीण एक – की औ मास्टर साहेब ! पानो चलतैक ?

(मास्टर साहब कोनो उत्तर नहि दैत अछि।)

ग्रामीण दू – मास्टर साहेबक काज होइते नहि छनि तँ .....।

ग्रामीण एक – हमरा की कहैत छह ?

ग्रामीण छओ – सभ तँ एहिना कहैत छैक ।

मास्टर – (विक्षुब्ध स्वरसँ) पान लगाबह।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

(ग्रामीण सात पानें लगब' लगैत अछि।)

ग्रामीण पाँच – हमर एकटा गप्प सुनह। सभमे चन्दा लगा दहक आ कतहु भूमि कीनि लैह।

ग्रामीण एक – एखन लोक खाय ले' मरैत अछि आ चन्दा दैत छैक।

ग्रामीण दू – पहिने तँ धनिकहे नहि देतैक।

ग्रामीण तीन – ई बात नहि चलतह। मामूली गमैया पूजामे बेहरी दैतेह ने रहैत छैक आ .....।

ग्रामीण चारि – तँ ओहिमे तँ एक्के -डेढ़ रुपैया लगैत छैक।

(चुप्पी। सभ एक दोसरसँ फुसुर-फुसुर गप्प कर' लगैत अछि।)

ग्रामीण एक – (ग्रामीण दू सँ) मन्नू भाई । तोहर थान तर कादो भ' गेलह ?

ग्रामीण दू – ओह! पानिये ने लगैत छैक।

ग्रामीण छओ – एह! गप्प लेढ़ायल जाइत छह।

ग्रामीण एक – करह ने गप्प। हम तैयारे छी ।

(चुप्पी। ग्रामीण सात सभकेँ पान, सुपारि आ, जर्दा दैत अछि।)

ग्रामीण पाँच – ने क्यो जगह देतैक आ ने चन्दा। तखन कोना बनतैक स्कूल ?

ग्रामीण एक – नहि बनतैक तँ नहि बनौक। हमरा धीया-पूताकेँ पढ़यबाक होयत तँ दरबज्जेपर मास्टर राखिक' पढ़ा लेब।

ग्रामीण दू – तँ।

ग्रामीण तीन – (पचद' पीक फेकैत) तोरासँ के मौर अछि ?

(ग्रामीण तीन उठि जाइत अछि)

ग्रामीण एक – हम तोरा नहि कहै छिएह।

ग्रामीण तीन – आ हम तोरा कहलियह अछि ?

ग्रामीण पाँच – (पीक फेकिक') मारि करैत जाह।

(ग्रामीण चारि पीक फेकि प्रस्थान करैत अछि।)

ग्रामीण छओ – जाइत छह ?

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

ग्रामीण चारि – (ठाढ़ भ' क') तँ । मङनीमे काज हरमाद होइत अछि।

(ग्रामीण चारिक प्रस्थान तथा ग्रामीण तीन जयबाक हेतु डेग बढ़बैत अछि।)

ग्रामीण पाँच – तोहूँ जाइत छह ?

ग्रामीण तीन – नहि किछु होइत छैक तँ की करू ? तीनटा बेटा पढ़लक से कोन ई स्कूल छलैक ?

ग्रामीण पाँच – चलह। हमरे की अछि ?

(बेरा-बेरी सभ ग्रामीण चल जाइत अछि। मास्टर साहेब विक्षुब्ध भ' क' सभकेँ तकिते रहित जाइत छथि। ग्रामीण सात खूब जोरसँ भभाक' हँसैत अछि।)

ग्रामीण सात – मास्टर साहेब ! स्कूल बनि गेल ?

(मास्टर साहेब मूड़ी लटका क' जाय लगैत छथि)

ग्रामीण सात – मास्टर साहेब ! कने बाजार जयबै चाह-चीनी आन'।

(मास्टर साहेब अपन जेबी टोब' लगैत छथि। दृश्य तीनपर अन्हार पसरि जाइछ। प्रकाश दृश्य एकपर चल अबैत अछि। ओही प्रकाशमे गाछसँ टप-टप खसैत पानि आ खाली कुर्सी देखल जाइछ। किछु कालक बाद प्रकाश आस्ते-आस्ते क्षीण भ' जाइत अछि।)

(पर्दा खसैत अछि)

शब्दार्थ

आवेश	–	वेग
विवशता	–	लाचारी
चिलका	–	छोट बच्चा

प्रश्न ओ अभ्यास

1. **वस्तुनिष्ठ प्रश्न -**

निम्नलिखितमे सँ सही विकल्पक चयन करू।

(i) मंच पर दृश्य बनल अछि।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

(क) एकटा (ख) दूटा

(ग) तीनटा (घ) चारिटा

(ii) चाहक पाइ देलनि -

(क) ग्रामीण एक (ख) मास्टर साहेब

(ग) ग्रामीण पाँच (घ) ग्रामीण दू

2. निम्नलिखित खाली स्थानक पूर्त्ति करू -

(क) कोइलाक चूल्हि पर टूटा चाहक ..... चढ़ल छल।

(ख) घोड़ा कहिया ..... करतैक।

3. निम्नलिखितमे सही/गलतक चयन करू -

(क) गाछक जड़िसँ हँटि क' एकटा टेबुल राखल छल।

(ख) शान्तिनिकेतन बंगालक बोलपुरमे अछि।

4. लघूत्तरीय प्रश्न-

(i) 'लेभराह अन्हारमे एकटा इजोत ' एकांकीक लेखक के छथि ?

(ii) बीचवला दृश्यमे पढ़ाई कतय होइत छल ?

(iii) छात्र सभ कोन चीज पर बैसल अछि ?

(iv) शान्तिनिकेतनक अर्थ की होइत अछि ?

(v) चाह-पानक दाम के देलनि ?

5. दीर्घोत्तरीय प्रश्न -

(i) 'लेभराह अन्हारमे एकटा इजोत' एकांकीमे लेखकक विचार स्पष्ट करू।

(ii) ग्रामीण समस्या पर एक निबन्ध लिखू।

(iii) 'लेभराह अन्हारमे एकटा इजोत' एकांकी सामाजिक जीवन दृश्य उपस्थित कएने अछि प्रमाणित करू।

6. निम्नलिखित शब्दक विपरीतार्थक शब्द लिखू-

सर्द, हँसैत, धरती, ग्रामीण, इजोत, नि:शुल्क

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

गतिविधि -

(i) ग्रामीण पाठशालाक एक दृश्य बनाउ।

(ii) ग्रामीण लोकनिक मनोवृत्तिक चित्रण करू।

(iii) विद्यार्थी लोकनिक बीच ग्रामीण स्कूलक दशा पर भाषण प्रतियोगिता कराउ ।

निर्देश -

(i) शिक्षक विद्यार्थी लोकनिसँ ग्रामीण विद्यालय संबंधी कविताक पाठ कराबथि।

(ii) शिक्षक एक छात्रकेँ शिक्षक आ अन्यकेँ विद्यार्थी बना वर्गमे नाटक कराबथि।

(iii) शिक्षक छात्र लोकनिसँ दस गामक प्राथमिक स्कूलक सर्वे कराय ओकर प्रतिवेदन तैयार कराबथि।

---

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

अशोक

अशोक मैथिलीक यशस्वी लोकधर्मी रचनाकार छथि। मधुबनी जिलाक लोहना गाममे 18 जनवरी 1953 कऽ हिनक जन्म भेलनि। विज्ञानक विद्यार्थी छलाह। रुचि आ प्रवृति छलनि साहित्य पढ़बाक आ लिखबाक। से छात्रावस्थेसँ साहित्य-रचना करय लगलाह। चाकरी भेटलनि सहकारिता विभागमे। ओहू ठाम सामान्य जनक साख बचयबामे लागल रहैत छथि। लोक-चिन्ता, लोक-हित आ लोक-उन्नति हिनक एकलव्य-दृष्टि छनि।

अशोक अनेक विधामे लिखैत छथि। चक्रव्यूह (कविता-संग्रह), ओहि रातिक भोर तथा मातवर (कथा-संग्रह) आ मैथिल आँखि (निबन्ध-समीक्षा) हिनक चर्चित पुस्तक छनि। पृथ्वी-पुत्र (ललितक उपन्यासक नाट्य रूपान्तर) तथा संवाद (संपादन) मैथिलीक बेछप पोथी अछि। पत्रिका-सम्पादनमे हिनक मौलिकता 'संधान' मे तँ देखार होइते अछि, 'घर-बाहर' सेहो ओहि क्षमता-प्रतिभाक साक्षी अछि। सोवियतसंघक यात्रा-कथा जतबे प्रकाशित अछि से बेजोड़ अछि।

'बाबाक आत्मीयता' अशोकक 'मैथिल आँखि' सँ लेल गेल अछि। बाबा माने यात्री नागार्जुन। आत्मीयता माने अपनापन। अपेक्षितारय। अशोकक कहब छनि जे यात्रीकेँ बुझबाक लेल, हुनक जीवन आ लेखनसँ परिचित होयबाक लेल आत्मीयता शब्दक व्याप्तिकेँ जानब जरूरी अछि। नीक रचनाकार होयबाक लेल नीक व्यक्ति होयब अनिवार्य अछि। नीक व्यक्तिक मतलब थिक संवेदनशील व्यक्ति, मनुष्यक सुख-दुखक भागीदार । क्षेत्र, जाति, धर्म, सम्प्रदाय आदिक सीमा मनुष्यकेँ बँटैत अछि, तोड़ैत अछि। राग-भावक हनन करैत अछि।

आजुक समयमे जखन सभ अपन-अपन सुख-सुविधा लेल अपस्याँत अछि- यात्रीक जीवन आ लेखन विश्व-बन्धुत्वक पाठ बनि कऽ सोझाँ अबैत अछि। दोसर बात ई अछि जे बाबाक जीवन आ लेखनमे, आचार या विचारमे भिन्नता नहि अछि। ओ पानि जकाँ पारदर्शी छथि। तँ ओ बच्चा-बुतरु, युवक-बूढ़, परिचित-अपरिचित सभक अपन समाङ छथि। सभक आत्मीय छथि।

प्रस्तुत निबन्ध बाबाकेँ बुझबाक आँखि दैत अछि।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

बाबाक आत्मीयता

लोक हुनका बाबा कहैत छलनि। बाबा कहायब हुनका नीक लगनि। से बात कत्ते गोटे कहैत छथि। एक गोटा कहैत छथि जे हुनका कोनो नवयुवतियोसँ बाबा कहेबा पर आपत्ति नहि छलनि। केशवदास नहि छला ओ। कियो नवयुवती जखन हुनका बाबा कहनि तऽ हुनकर हृदयमे वात्सल्य उमड़ि आबय। भोजपुर इलाकामे ब्राह्मणकेँ बाबा कहल जाइत छैक। बूढ़ो बाबा आ नेनो बाबा। ब्राह्मण दुआरे बाबा। कतेक गोटा के एहि सम्बोधन पर फूलि कऽ कुप्पा होइत देखने हेबनि। साइत ब्राह्मणत्वक मोजरक कारणे। मुदा ओ ब्राह्मण बाबा नहि छला। नागा बाबा सेहो नहि छला। संसार त्यागी ओ कोना भऽ सकैत रहथि ? संसारसँ तऽ हुनका अत्यन्त लगाओ छलनि। ओ परिवारक, गाम घरक बाबा छला। जे बाबा अपन संतानमे सुसंस्कार भरैत अछि। हँसैत तमसाइत नीक बेजाए बुझबैत अछि। संसारक कोमलता कठोरताक ज्ञान करबैत अछि। जीबाक ढंग सिखबैत अछि। हाथी-घोड़ा बनि कऽ पोता-पोती के पीठ पर चढ़बैत अछि। ओ मुँह-कान बना कऽ, नाचि कऽ संतानक मनोरंजन करैत अछि। गलती भेलापर कानो ऐंठैत अछि।

बाबाकेँ बहुतरास बात पसिन्न नहि छलनि। ओ ककरो छोट नहि बुझैत छला। ककरो पैघत्वक कारणे मोजर देब ओ नहि जनैत छला। ओ अपन समाने सभकेँ बुझैत छला। एक्कोरत्ती घमण्ड हुनका बरदास्त नहि रहनि। बड़का-बड़काक घमण्ड तोड़ै लेल ओ मारुक कविता सभ लिखैत छला। बाबाकेँ ककरो डर नहि छलनि । कियो होथि, नेता, धनिक, अफसर, पण्डित सभकेँ समाजक दिससँ ओ चेतौनी दैत छला। समाजक लेल, गरीबक लेल ओ ककरोसँ भीड़ि सकैत छला। अपन कविताक अचूक व्यंग्य-वाणसँ बेधि सकैत छला। बाबा गरीब आ विपन्नक मित्र छला। समाङ छला।

बाबाकेँ गाछ बिरीछ बड़ पसिन्न रहनि। मेघ देखि कऽ ओ उमंगमे नाच' लागथि। अगहन मास हुनका प्रिय रहनि। अगहन मासमे धान होइ छै। अगहनमे सभ जन, मजूर, किसानक घर अन्नसँ भरि जाइ छै। पोखरि, माछ, मखान बाबा के बड़ नीक लगनि। असलमे बाबा एकटा खेतिहर छला। खेत हुनका मोनमे रचल बसल छल। कोदारि, खुरपी, हर, खेतीमे काज आबऽ बला औजार सभ ओ कहियो नहि बिसरि सकला। ओ अपन कवितो लिखबकेँ खुरपी चलायब

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

कहथि। कोदारि नहि तऽ खुरपीये। नहि खेत कोड़ल होइये तँ खुरपीसँ कमैनी तऽ होइये। खढ़ पात हेंठ कयल तऽ होइये। कनियो दूरक माटि पलटल तँ होइये। छोट छोट नवजात गछुलीकेँ स्वस्थ सुन्दर बनेबाक उपक्रम तँ कयल होइये। ओकरामे नवजीवनक संचार तँ कयल होइये। यैह नवजात गछुली विशाल वृक्ष बनत। धरतीक सुन्दरता बढ़ाओत। बाबा सुन्दर धरती चाहैत छला।

बाबा सुन्दर मनुक्ख सेहो चाहैत छला। एहन मनुक्ख जे ककरोसँ घृणा नहि करय। ककरो अस्पृश्य नहि मानय। संसारक हरेक वस्तु बाबाकेँ सुन्दर ओ सार्थक लगैत रहनि। ओ भेद-भाव, वर्ग, जाति नहि चाहैत छला। ऊँच नीचक भावनासँ ओ एकदम फराक रहथि। समाजमे सभ कियो समान हूअय। सभकेँ अपन जीवन अपना ढंगसँ जीबाक अधिकार होइ। जीवनमे संघर्ष के ओ सर्वोपरि मानैत छला। वर्ग- भेद देखि ओ तमसा जाथि। कोनो मनुक्खकेँ दोसराक शोषण-दमन करैत देखि हुनकामे प्रतिहिंसा जागि जाइन। बाबा अगियाबेताल भऽ जाथि। हुनकर अनेकानेक कविता सभमे ई बात कियो देखि सकैत अछि। भरि जीवन हुनकामे ई विचार बनल रहलनि।

बाबाकेँ दूटा मोन नहि छलनि। एक्केटा मोन रहनि। आचार आ विचारमे कोनो भेद नहि रहनि। सोचलहुँ किछु, बजलहुँ किछु आ केलहुँ किछु, एहन लोक नहि छला ओ। एहने लोक आइ काल्हि सभ तरि फड़ि गेल अछि। जेकर बातक कोनो ठेकान नहि होइत छैक। करत किछु आ बाजत किछु , मुदा बाबाकेँ से पसिन्न नहि छलनि। ओ जे बात सोचै छला से मोनसँ करैत छला। सैह बात बजितो छला। से कविता हो, उपन्यास हो आ कि आन कोनो रचना हो। मंच पर भाषण देबाक हो आ कि जीवनमे व्यवहार हो। सभठाम एक रंग रहथि बाबा। बाबा गिरगिट संग रंग नहि बदलि सकैत छला।

पण्डित सभ कतेक तरहक चश्मा लगा कऽ हुनका देखलनि। सभ अपन-अपन छहरदेबालीक भीतर ठाढ़ भऽ हुनका भजियबैत छला। आइयो देखैत रहैत छथि। सभ अपनामे बाबा के मिलबऽ चाहैत अछि। बाबाक नाम लऽ कऽ अपन झंडा पतक्का ऊँच करऽ चाहैत अछि बाबाकेँ अपन बनबऽ चाहैत अछि। हुनकर मुइलाक बाद ई काज आर बेसी जोरसँ भऽ रहल अछि। सभ बाबाकेँ पकड़ि अपनाकेँ ऊँच करऽ चाहैत अछि। बाबा सन अपनाकेँ कहऽ चाहैत अछि। मुदा बाबा ककरो पाँजमे नहि आबि रहल छथिन। कतहु ने कतहु अधिकांश के गरऽ लगैत छथिन। लोक इस-इसो करैत हुनका भरि पाँज पकड़ऽ चाहैत अछि। मुदा बाबा तऽ विपन्न लोकक हेंजमे मुसकुराइत ओहिना ठाढ़ रहैत छथि। ओहि हेंज

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

धरि पहुँचबाक साहस बहुतो के नहि होइत छैक । लोकक नाटक असफल भऽ रहल छैक । अपन समाङक बीचमे ठाढ़ बाबा हँसैत रहैत छथि। खिलखिल ..... खिलखिल।

सौंसे भारतमे बाबाक हजारो परिवार रहनि। हजारो परिवारमे बाबा अपन यात्रामे रहल छला । दिनसँ मास धरि। परिवारक हरेक सदस्यक ओ बाबा रहथि। स्त्री आ नेना सभक तऽ ओ खास लोक छला। एकदम अपन लोक। जेकरा ओ अपन सुख दुःख कहि सकैत अछि बाबा सभकेँ नीक बात सिखबैत रहथिन। बच्चा सभ संग ओ संगतुरिया बनि कऽ खेलाइत रहथि। गृहिणी सभकेँ घर सुन्दर बनौनाइ सिखबैत रहथि। तरकारी तीमन बनौनाइ सेहो सिखबथिन। शिक्षा दीक्षामे अपन सुझाव देथिन। नोकरी चाकरी खेती पथारी मादे कोनो समस्याक समाधान करथिन। लोक हुनकर बात गौरसँ सुनय, मानय। आइ काल्हि जखन लोक अपनेमे जीबऽ चाहैये। आन परिवारमे रहबामे असुविधाक अनुभव करैये। अपने बिछान नीक लगै छै। अपने तकिया पर नींद होइ छै। खेबा पीबाक अपन खास रंग ढंग भऽ गेल छैक। तखन सोचियौ, बाबा कोना एतेक भिन्न-भिन्न परिवारमे रहि जाइत छला ? कतेक जाति, कतेक वर्ण, कतेक संस्कृतिक बीच बाबा अपन लोक भऽ कऽ जीबैत छला। जीबाक ई ढंग बाबा के कतसँ अयलनि ? अपन समाजक संभ्रान्त द्वीप सन बनि कऽ जीबऽ बला लोककेँ बाबाक जीबाक ढंग चकविदोर लगबैत अछि। बाबा अबोध बच्चा जकाँ स्वयं अपनाके बेसी कऽ कय नहि बुझैत छला। अपन समान सभकेँ बुझबाक बात अपन संस्कृतिक एहन विशेषता थिक जे विश्वमे कतहु आनठाम नहि अछि। एहेन लोक संरक्षक प्रतिष्ठापक आ नीक मनुक्ख होइये। बाबा एहने लोक छला।

बाबा अपन मिथिलासँ बड़ प्रेम करैत छला। एहिठामक धरती, लोक-वेद नीक बेजाए दुःख-सुख, सम्पन्नता-विपन्नता, संघर्ष, कुरूपता, सौन्दर्य सभ किछु बाबाकेँ मोन रहैत छलनि। कत्तहु रहथि देशमे, विदेशमे अपन मिथिलाकेँ ओ नहि बिसरथि। सभठाम, सभ भाषामे ओ अपन समाजक, अपन मिथिलाक बात राखथि। आनठामक लोक बाबाक लेखनीसँ मिथिलाकेँ फेर तेसर बेर नब आँखिसँ चिन्हलक। पहिल बेर सीताक माध्यमसँ चीन्हने छल। दोसर बेर विद्यापतिक आँखिये देखलक । परिचय पौलक। मुदा हमरालोकनिक दुर्भाग्य अछि जे बाबाकेँ एहिठामक मुँहपुरुषलोकनि नहि चिन्हलनि। अपना समाजक ठीकेदार नेता, संभ्रान्त लोक, अगुआ कहाबऽ बला सभ दाँततर आंगुर काटऽ लगला जखन सौंसे देशक अखबार, पत्रिका, रेडियो, टी. बी. बाबाक देहावसान पर हुनकर चर्चा केलक। हुनका संग अपन मिथिलाक चर्चा केलक। ओना कहू तऽ इहो कोनो अनर्गल बात नहि थिक। बाबा हिनकालोकनिक लोको नहि छला। इहो सभ

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

बाबाक लोक नहि छथि। बाबाक लोक तऽ मिथिलाक विपन्न दलित किसान सभ छथि। जे बाबाक दाहसंस्कारमे हजारक हजार संख्यामे लोर भरल आँखिसँ हुनका अन्तिम बिदाइ देलथिन। जिनका लेल बाबा सभ दिन लिखैत रहला। बजैत रहला। जिनका बीच रहब बाबाकेँ सभ दिन पसिन्न छलनि। जिनकर जकाँ रहब, जीवन जीयब बाबाक पहिचान बनि गेल अछि।

बाबा यात्री छला। यात्राक एखनहुँ अन्त नहि भेल अछि। भने शरीरे ओ हमरा लोकनिक बीच नहि छथि। ओ बहुत रास कलम लगा गेल छथि। आइ ने काल्हि ई बीया धरती तरसँ जनमत। लगाओल कलम विशाल वृक्ष बनत। फड़त फुलायत। बाबा पुरैनिक पात पर बैसल सभ के देखैत रहता। बाबा मखान हेता। माछक आँखि सन कोनो बच्चाक आँखिमे तकता। दनूफक फूल सन कोनो बहीनकेँ सिनेह बिलहता। जेठक जरैत दुपहरियामे कोनो हरबाहक कण्ठ शीतल करता। मशीनसँ थाकल कोनो मजदूरक घाम पोछता। कोनो लोकगीत सन श्रमजीवी मनुक्खकेँ ऊर्जासँ भरि देता। दलित प्रताड़ितकेँ एकजुट भऽ संघर्ष लेल ललकारा देता। यात्रीक यात्रा एहिना चलैत रहत।

बाबा हमरालोकनिक लेल 'यात्री' छथि। मुदा सौंसे देशक लेल 'नागार्जुन' सेहो छथि। सौंसे भारत हुनका यात्री-नागार्जुन नामे जनैत अछि। हुनकर नाम किछु रहनु। ओ सभक आत्मीय छथि। एहेन आत्मीय लोक दुनियामे कम्मे होइत अछि। एहन आत्मीयता हुनकामे कतऽसँ अयलनि ? अपन लोक संस्कृतिसँ । मिथिलाक संस्कृतिमे लोक संस्कृतिक सभसँ महत्त्वपूर्ण अवदान आत्मीयता थिक। ई आत्मीयता हमरालोकनिकेँ बाबासँ सिखबाक चाही। अपन लोक संस्कृतिसँ सिखबाक चाही।

शब्दार्थ

वात्सल्य - बच्चाक प्रति स्नेह

समाङ - अपन लोक

कमैनी - खढ़ पात साफ करब

हेंठ - नीचा उतारब

गछुली - छोट गाछ

अगियाबेताल - साहसपूर्वक कठिन कार्य करयवला

तीमन - दालि। झोरगर तरकारी

चकविदोर - अति आश्चर्य

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

दनूफ - एकटा उजर फूल जकर उपयोग भरदुतियामे होइत अछि।

कलम - डारि मे डारि जोरि लगाओल गाछ।

प्रश्न ओ अभ्यास

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न -

(i) अशोकक रचना छनि

(क) बाबाक आत्मीयता (ख) मिथिलाक सांस्कृतिक सीमा

(ग) पर्यावरण (घ) चन्द्रमुखी

(ii) 'बाबाक आत्मीयता' क रचयिता छथि

(क) रतनेश्वर मिश्र (ख) अशोक

(ग) जयकान्त मिश्र (घ) तारानन्द वियोगी

रिक्त स्थानक पूर्त्ति करू -

(i) बाबाकेँ बहुतरास ..... पसिन्न नहि छलनि।

(ii) बाबा ..... बिरीछ बड़ पसिन्न रहनि।

(iiii) पण्डित सभ कतेक तरहक चसमा ..... हुनका देखलनि।

शुद्ध-अशुद्ध वाक्यकेँ चिह्नित करू-

(i) बाबा कहायब हुनका नीक लगनि।

(ii) ओ अपना सामने ककरो किछु नहि बुझैत छला।

(iii) बाबा एकटा खेतिहर छलाह।

(iv) अगहन मास हुनका प्रिय नहि रहनि।

(v) बाबा अपन मिथिलासँ बड़ प्रेम करैत छला।

2. लघूत्तरीय प्रश्न -

(i) बाबाक आत्मीयतासँ की तात्पर्य अछि ?

(ii) बाबाकेँ की सभ पसिन्न छलनि ?

(iii) बाबाकेँ की सभ बात पसिन्न नहि छलनि ?

(iv) सौंसे भारत हुनका कोन नामे जनैत अछि ?

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

(v) आत्मीयता हुनकामे कतसँ अयलनि ?

3. दीर्घोत्तरीय प्रश्न -

(i) पठित पाठक आधार पर 'बाबाक आत्मीयता' क वर्णन करू।

(ii) बाबाक चरित्र चित्रण करू।

(iii) 'बाबाक आत्मीयता' शीर्षक रचनाकेर सारांश लिखू।

(iv) बाबा सभक आत्मीय छथि। कोना ?

(v) 'बाबाक आत्मीयता' शीर्षक रचनाकरे प्रासंगिकता सिद्ध करू।

4. निम्न पाँती सभक सप्रसंग व्याख्या करू:

(i) अपन समान सभकेँ बुझबाक बात अपन संस्कृतिक एहन विशेषता थिक जे विश्वमे कतहु आनठाम नहि अछि। एहने लोक संरक्षक प्रतिष्ठापक आ नीक मनुक्ख होइये। बाबा एहने लोक छलाह।

(ii) मिथिलाक संस्कृतिमे लोक संस्कृतिक सभसँ महत्त्वपूर्ण अवदान आत्मीयता हमरालोकनिकेँ बाबासँ सिखबाक चाही। अपन लोक संस्कृतिसँ सिखबाक चाही।

गतिविधि-

(i) निम्न लोकोक्तिकेँ वाक्यमे प्रयोग करू:

फुलि कऽ कुप्पा, गिरगिट सन रंग बदलब, दाँत तर आंगुर काटब।

(ii) बाबाक व्यक्तित्वक चर्चा छात्र आपसमे करथि।

(iii) बाबा मैथिलीमे यात्री आ देश भरिमे नागार्जुन नामसँ प्रख्यात छलाह। - हुनक दुनू नामक सार्थकता छात्र स्पष्ट करथि।

(iv) मिथिलाक संस्कृतिमे लोक संस्कृतिक सभसँ महत्वपूर्ण अवदान आत्मीयता थिक। कोना ?

निर्देश -

(i) शिक्षकसँ अपेक्षा जे यात्रीजीक रचनासँ छात्रकेँ परिचित कराबथि।

(ii) नागार्जुन नामसँ ओ कोना देश भरिमे प्रख्यात छथि-शिक्षक छात्रकेँ जनतब कराबथि।

(iii) यात्रीजीक कविताक सस्वर पाठकऽ छात्रकेँ शिक्षक सुनाबथि।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

विभारानी

मैथिलीक नवोदित कथाकारमे प्रसिद्ध विभारानीक जन्म 1959 ई. मे भेल। मधुबनी शहरमे स्थायी निवास स्थान छनि मुदा इंडियन ऑयल कॉरपोरिशन, पश्चिमी क्षेत्र, मुंबइमे उपप्रबन्धकक रूपमे कार्यरत छथि। हिनक 'खोह सँ निकसइत' मैथिली कथा-संग्रह मैथिली जगतमे अति चर्चित अछि। हरिमोहन झाक 'कन्यादान' एवं प्रभास कुमार चौधरीक 'राजा पोखरिमे कतेक मछरी' उपन्यासक हिन्दी अनुवाद हिनका द्वारा कयल गेल अछि। अपन सारस्वत साधनाक प्रसादात् हिनका कथा अवार्ड (मैथिली कथा 'रहथु साक्षी छठ घाटक लेल'), डा0 महेश्वरी सिंह महेश ग्रन्थ सम्मान, तथा घनश्याम दास सराफ । साहित्य सम्मान प्राप्त भेल। मैथिलीक अतिरिक्त हिन्दीमे सेहो हिनक अनेकानेक रचना पुस्तकाकार प्रकाशित अछि ताहिमे मिथिलाक लोक कथाएँ प्रसिद्ध अछि।

प्रस्तुत कथा भारतीय जनजीवनक दयनीय दशाक एक गोट मार्मिक चित्र उपस्थित करैत अछि। हमरा लोकनिक समाजमे कतेको गोटे एहन हतभाग अछि जकरा भरि पेट भोजन भाग्यमे नहि लिखल छैक। ओ दिन-राति काज करैत अछि, मुदा अन्नक बिना ओकर बाल-बच्चा भुखल रहैत अछि। भरि छीपा भातक दर्शन ओकर लेल दुर्लभ अछि। कथाक अन्त विषादसँ होइत अछि।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

भरि छीपा भात

तहिया हमरा देखिते ओ कोइली जकाँ कुहुकि उठलि। ओकर आँखिक कोटरमे एगो चीज छन्न दऽ समा गैले। रातिरानी सन गंध स' भीजैत ओकर मोन भोरका पुरबासँ सिहकइत देह जकाँ भुलकि गेलै। बोलीमे चिन्नी मिलबइत बाजलि छलि-'कहिया एलौं ?'

गाम-घरमे प्रसिद्ध छैक जे बतहिया लौंगिया मिरचाइ छैक, किन्तु बेर-कुबेर ओ गूड़क भेली भ' जाइ छैक, अनमन वैह फकरा जकाँ -'जेम्हरे देखली खीर, तेम्हरे बैसली फीर'। रामपट्टीबाली कहैत छलै-'दुलहिन, अहाँ एकर बातमे नहि आएब। ई त' अहाँ स' मीठ-मीठ बतिया क' तेहन ने छुरी चलाओत जे अहाँ बुझबो नहि करबइ।'

हरिपुरवाली समर्थन करैत बाजल छलीह हँ सत्ते, अहाँकेँ त' ओ सोझे सोझ हाटमे बेचि क' चलि आओत आ फेर कहबो करत जे हम कहाँ किछु कहलहुँग'।'

कहाँदनि बतहियाक नाम जन्मे स' इएह छलैक। ओना ओ अपन नाम फुलेसरी बतौने छलि। मुदा, लटपटाइत बोली आ अलबटाह चालि ओकर नामकरणक सार्थकता दइत रहैछ।

ओ तोतरा क' अपन टोलक गाथा सुनबैत अछि। तेहेन लोकक, जकर हम नामो नञि जनैत अछि। मुँहो नञि देखने छी। ओकर ई बोली एक त' हमर दिमागेमे नहि घुसय जे घुसय ओ परिचयक अभावमे सूखि जाय। तइयो 'हूँ हूँ' कहने बगैर गुजर नहि छैक। बतहिया तुरतें तगेदा करत -' ओ जे चुल्हिया माय नञि छइ, हे वएह पुबरिया टोलमे जेकर घर छइ। डोमाक घरवाली, सुरताक माय ..... ' आ बेबस हमर गर्दनि स्वीकृति से हिलिए जाइए।

कखनो-कखनो बतहिया एकदम चुप्प भ' जाइत छैक। रहिकावाली बजैत छै जे "बतहिया पर ओकर मतारिक भूत अबै छै आ ओ गुम्मी साधि लेइ छै।"

ओकरा चारिटा धिया-पुता छैक -चारू कारी, नांगट। हाथ गोर लकड़ी आ पेट कुम्हड़ सन। छोटकी छौंड़ीकेँ लऽ अबैत छै आ रोटी माँगि ओकरा थमा दइत छै। छौंड़ीक विरोध कएनो सन्ता जबर्दस्ती ओकरा मुँहमे रोटी ठुसैत छै। पाछासँ 'गदागद मुकियाब' लागै छै।

सासु बजैत छथिन्ह -'रे बतहिया; ए तरहेँ काहे मार' तारीस ओकरा। छोड़ दे, ना खाई

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

त' । भूख ना होखी ..... का रे, घरे का खइले रहे ?''

'डेढ़ टा मरुआक सोहारी'। छौंड़ी महीन आवाजमे बजैछ आ डगरा सन -मरुआ-रोटीक आकृति आँखि पर नाचि जाइत छैक आ सासु स्तब्ध भ' जाइत छथिन्ह। बतहिया प्रतिवाद करैत छैक-'' त' की भेलै ? गहूँमक रोटी नहि खेलकइग' ने ! मरुआ रोटी त' हल्लुक होअ छै।''

ओकर ओकालती बात पर सासु पिताएल छलीह- ''अब बताब', एतनी गो लइका -एतना बड़-बड़ रोटी खा गइली आ ई कह' तारी जे कुछहू खइलेही नइखे। पेटमे जगहिया रही तबे न खाई रे। ''

नरपतिनगरवाली कहने छलह जे ''मौगी बड्ड लोभी छै। कतबो किओ ने खएने रहत, कखनो नञि कहत जे खेने छी। गोटएक दिन ओकर मुँह-पेट सेहो चल' लगैत छै। बुझबे नहि करैत छैक धोंछिया।''

बतहिया हमर हाथ-गोरमे तेल लगबैत अछि। बड़ नीक जकाँ देह जँते छै। मालिश करैत कहैत छैक-''दुलहिन, हमरा एगो रुपया देब ? तेल लाएब .....? हँ, मुदा हमरा एकटकही नहि देब ..... चारिटा चवन्नीए द' देब। नोट त' एकेगो होइ छै। चवन्नी चारिटा भेट जाएत।'' आ आंगुरिक पोर पर चारू चवन्नीसँ अपन बजट बनाब' मे लीन भ' जाइत छल।

बतहियाक गप्पक गाड़ी एहिना आगाँ बढ़ैत-बढ़ैत कखनो ठमकि जाइछ-' हे यै दुलहिन, अहाँ नमरी देखने छियै ?

कहियो ओकरो आँखिमे सरिसो फुलायल छलैक। हमरास' एक दिन मजाक कयलकै। हमहूँ किछु बजलहुँ त' कहलकैक-'' बुढ़बा बड़ तंग करैए। हे, राति-बेराति आओत आ हाथ पकड़ि क' घीच' लागैयए। मरदाबा बड़ बेशरमा छै। धीया-पुता ओही घरमे सुतल रहै छै। कनियो लाजो-धाखो नहि करत ।''

जतबे सहज ढंग सँ ओ ई सभ गप्प कहि गेल ततबे सहज ढंग सँ ओ एकबेर बाजल छल-' बुढ़बा मरि गेलै। 'धक्कसँ रहि गेलहुँ। ओना ओकरा देह पर कहियो कोनो सुहागक चेन्ह नहि छलै- चीकट गुदड़ी भेल ननगिलाटक नूआ, पाखीक खोता जकाँ केश, कुशियारक गांठ जकाँ हाथ-गोर। ने चूड़ी-लहठी, ने तेल सेनुर । निम्न वर्ग अपन अभावे एकर पूर्ति नहि क' पबैत अछि। उच्च वर्ग अपन शोभामे एकरा आवश्यक नहि बुझय।' बाँचि गेल मध्यम वर्गक स्त्री लोकनि, जे तीनू वर्गक प्रतिनिधित्व करैत महावीरी धाजा जकाँ लाल नूआँ, अढ़ाइ सेरक चूड़ी, लहठी आ सवा सेर सेनूर धारण क' साक्षात वीर-बहू' बनल रहैय।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

सासु कहै छलखिन्ह- "एकर अदमी मरल त' ई तनिको ना रोइल। चार दिनक बाद खेतमे धान काटे जाए लागल। बुझाते ना रहे जे ओकरा संगे कोनो अइसन ओइसन बातो भइल होखे।"

रामपट्टीवाली टुभुकली- "त' किए कनितै ग'। ओकरा कोनो सुख भेलै, बुढ़बासँ। सभदिन अपने कमाइ पर ओ गुजर करैत आयल ग'। चारि टा मूस बिया लेलकै ग' सए टा ने!"

बतहिया फेर आयल छलि-"दुलहिन, चलू तेल लगा दू।" ओकरा आँखिमे चारि टा चवन्नि नाचि गैले। माथ पर भरि चुल्लू तेल दइत बाजल छल-"दुलहिन, अहाँ कहियो भरि छीपा भात खेने छी ?"

"ई की ? आदमी छी कि राकस गे ?"

" ने-ने, हमरा होइयए जे भरि छीपा भात देख' मे कतेक नीक लागैत हेतै ? आ ताहूमे अरबा चाउरक। कतेक सुन्दर महक होइ छै। हमर बुढ़बा चारि-पाँच बेर ओहन भात खइने छल। आधा-आधा छीपा आनबो कएने रहय, मुदा चारिटा टेल्हबा-टेल्हबीमे किछु रह' पबै छैक ..... दुलहिन यै, बड़ नीक लागइ होएतै ने भरि छीपा भात देख - 'सुन' मे !"

रहिकावाली गुम्हरइल हमरा सचेत कएने छली - " मौगी बड़ घाघ छै। अहाँ ओकरा आउरक फेर मे नै पड़ब। ई त' तेहन ने ओस्ताद अइ जे सात कोसक चक्करि लगा आओत आ तइयो कहत जे पेट पिराइ छल, कतहु नहि गेलियैग'।"

सासु समर्थन कएने छलीह - " हँ, बताब' न , अबहई अगहन के महिनवाँ मे जत कुत्तो-बिलाई के पेट अफरल रहेला; भरो -भिखार अगड़ैनी कँ साग चबा-चबा के सुतल रहेला, ओहिजा ई लुगाई खेत मे कटनी करे जाला। ततो कबो ना कह सके जे आज भर पेट खइले बानी; केहु तरहे ई बतिया कह ना सके।"

हम कहलियन्हि -" माँ, किएक नहि एकर जांच कएल जाए। एक छीपा भात ओकरा सोझामे ध' क' देखै छियै।" आ तें कुशल मनोवैज्ञानिक जकाँ ओकर मन:स्थितिक परीक्षा लेल जुटि गेलहुँ।

अगहन मास। गृहस्थक पुतोहु। सुगंधित अरबा चाउरक भरि छीपा भात। सोझामे बतहिया। हमर उक्ति -" ले बतहिया, आइ पूरा क' ले मोनक साधं खा ले भरि छीपा भात।"

बतहिया, कँ पहिने त' बुझयलै जे ओ कोनो सपना त' नञि देखैत अछि। फेर तेना ने

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

घौनाक' क' कान' लागलि जेना ओकर हीत मरि गेल होय। एहि प्रयोगक ई परिणति पर सासु आँखिए सँ हमरा प्रताड़ित कएलीह। रामपट्टीवाली अँचरामे मुँह झाँपी हँस' लगलीह। । रहिकावाली मुँह बिधुआ लेलैन्हि। नरपतिनगरवालीक मुँह पर तेहन भाव आएल जे अनेरे ओ भात बतहिंयाक सोझामे राखि देल गेलै। बानरक हाथमे नारिकेर।

बतहियाक झौहरि शेष भेलै त' ओ हिचुकइत बाजलि - " एहिठाम हमरा खा' नहि हएत, दुलहिन। हमरा द 'दिय' भात । घरही हम लऽ जाएब।

दोसर दिन फेर चारिटा चवन्नी ओसुलइत बतहिया कहै छलि-" भरि छीपा भात देखक साध पूर भ' गेल, दुलहिन। भगवान चाहत त' अहींक पुन्न-परतापें भरि छीपा भातो खाइए लेब।

पएर समेटइत चट स' पूछि बैसलिऐ - "ई की ? त' काल्हि भातक की अचार बना देलही ?"

" नै, नै ! " ओ हड़बड़ा गेलि - "छौड़ा-छौड़ी सभ रह" 'देलकइग' जे .....

" तें ने कहने छलियौ जे अहीठाम खा ले। "

" कोनाक' खा लितियइग', दुलहिन ! ओ सब उपासे रहि जइतै ने ! ओ सभ भरिपेट खा लेलक, सैह देखि हमरो पेट भरि गेल। मोन तिरपित भ' गेल। "

शब्दार्थ

छीपा	-	थारी
भुलकिगेलै	-	रोमांचित भ' गेलै
अनमन	-	ओहने । ठीक ओहिना
प्रतिवाद	-	विरोध
ओस्ताद	-	गुरु
चीकट	-	मइल

प्रश्न ओ अभ्यास

1. निम्नलिखितमे सँ सही विकल्पक चयन करू-

(i) भरि छीपा भातक रचयिता छथि -

(क) लिलीरे (ख) उषाकिरण खाँ

(ग) विभारानी (घ) शेफालिका वर्मा

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

(ii) बतहियाकपति छल-

(क) बुढ़बा (ख) युवक

(ग) किशोर (घ) अधवयसू

2. लघूत्तरीय प्रश्न -

(i) विभारानीक अहाँक पाठ्य-पुस्तकमे कोन कथा संकलित अछि ?

(ii) बतहियाकेँ कैकटा संतान अछि ?

(iii) बतहियाकेँ की देखबाक लालसा छल।

(iv) बतहियाक बात पर कोन महिला हँसय लागलि ?

(v) बतहियाक बोली केहन छल ?

3. दीर्घोत्तरीय प्रश्न -

(i) भरि छीपा भातक सारांश लिखू।

(ii) कथाक मुख्यपात्र बतहियाक चरित्र - चित्रण करू।

(iii) 'भरि छीपा भात' कथाक उद्देश्य स्पष्ट करू ।

4. निम्नलिखित शब्दक प्रयोग वाक्यमे करू-

अलबटाह, तगेदा, लटपटाइत, चाउर, गुम्हरइत, अफरल।

गतिविधि -

(i) छात्र एक गरीब बस्तीकेँ लोकजीवनक अध्ययन करथि।

(ii) एक मजदूरनी आ दोसर मालकिनीक बीच बार्त्तालाप करैत देखाउ।

(iii) छात्र लोकनिक बीच समाजक गरीबीक कारण पर भाषण प्रतियोगिता कराओल जाय।

निर्देश-

(i) शिक्षक छात्र लोकनिक बीच एक गरीब परिवारक दशाक वर्णन करथि।

(ii) सड़ककातमे ऐंठ पात चटैत बालवृन्दक चित्र छात्र लोकनि बनाबथि।

—

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

पद्य-खण्ड

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

विद्यापति

विद्यापति मैथिलीक सभसँ बेसी लोकप्रिय रचनाकार छथि। हिनक जन्म 1350 ई. मे भेल छल। लगभग नब्बे वर्षक आयुमे हिनक मृत्यु भेलनि। ई मधुबनी जिलाक बिस्फी गामक वासी छलाह।

विद्यापति मिथिलाक ओइनवार बंशक विभिन्न राजा सभक समयमे राजदरबारसँ विद्वान रूपमे सम्बद्ध रहलाह। मुदा, हिनक ख्याति अछि राजा शिवसिंहक सखा तथा परामर्शीक रूपमे।

विद्यापति तीन भाषामे रचना कयने छथि - संस्कृत, अवहट्ट, मैथिली। संस्कृतमे हिनक लगभग एक दर्जन पोथी उपलब्ध अछि। एहिमे भूपरिक्रमण, विभागसागर, पुरुषपरीक्षा, दानवाक्यावली, दुर्गाभक्ति-तरंगिणी, मणिमञ्जरी, लिखनावली आदि प्रसिद्ध कृति अछि।

अवहट्टमे हिनक दूटा पोथी अछि - कीर्त्तिलता तथा कीर्त्तिपताका। मैथिलीमे विद्यापति केवल गीत लिखलनि। मैथिलीकेँ ई देसिल बयना कहने छथि। विद्यापति मिथिलाक देशी भाषामे गीत लिखलनि ई, एकटा क्रान्तिकारी काज छल। कारण, ओहि समयमे साहित्य संस्कृत अथवा प्राकृतमे लिखल जाइत रहय। तखन अवहट्टमे लेखन प्रारम्भ भेल आ तकरा बाद विद्यापति मिथिलाक देशी भाषा, मैथिलीमे गीत लिखलनि।

मैथिलीमे विद्यापति लगभग एक हजार गीत लिखने छथि। हिनक गीत मुख्यत: राधा-कृष्ण आ गौरी -महादेवसँ सम्बद्ध अछि। राधा-कृष्ण विषयक गीत नारी आ पुरुषक प्रेम-भावकेँ दिव्य रूपेँ प्रदर्शित करैत अछि। विद्यापतिक शिव-गीतमे महेशवानी पार्वती आ महादेवक वैवाहिक जीवनक गीतकेँ कहल जाइत अछि, किन्तु नचारी महादेवक प्रति भक्ति -भावसँ प्रेरित अछि। मिथिलामे विद्यापतिक शिव-गीत राधा-कृष्ण विषयक गीत जकाँ, किछु अंशमे ओहिसँ अधिके, लोकप्रिय अछि।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

काव्य सन्दर्भ : संकलित शिव-गीत मोहन भारद्वाज द्वारा सम्पादित 'विद्यापतिक शिवगीत' नामक पुस्तकसँ लेल गेल अछि। ई विद्यापतिक महेशवानी थिक । एहिमे पार्वती शिवकेँ सम्बोधित करैत छथि- हम अहाँकेँ बेर-बेर कहैत छी जे मोन लगा कऽ खेती करू। लाज छोड़ि कय अहाँ भीख मँगैत फिरैत छी, एहिसँ अहाँक गुण-गौरव पर प्रभाव पड़ैत अछि। सभ लोक निर्धन कहि कऽ अहाँक उपहास करैत अछि, किओ अहाँकेँ नीक दृष्टिसँ नहि देखैत अछि। यैह कारण अछि जे अहाँक पूजा आक ओ धातूर लऽ होइत अछि विष्णुक पूजा चम्पाक फूलसँ। तेँ हम कहैत छी जे अहाँ खटङ काटि कऽ हर बनाउ, त्रिशुल तोड़ि कऽ फार बनाउ आ बसहा लऽ खेत जोतू। गंगाक पानिसँ पटौनी करू। अहाँक सेवा हम एहने पुरुषक रूपमे करैत रहलहुँ अछि। मुदा अहाँ तँ भिखारि भऽ जीवन-यापन करैत छी। एहि जन्ममे जे भेल से भेल, अगिलो जन्म नीक हो सैह कामना अछि।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

शिवगीत

बेरि बेरि अरे सिव
मोजे तोहि बोलगो
किरिसि करिअ मन लाए।
बिनु सरमे रहिअ
भिखिए पए माङिगअ
गुन गउरव दुर जाए।।
निरधन जन बोलि
सबे उपहासए
नहि आदर अनुकम्पा ।
तोहेँ सिव पाओल
आक धुथुर फुल
हरि पाओल फुल चम्पा ।।
खटङ काटि हर
हर बन्धाबिअ
तिसुल तोड़िअ करु फारे।
बसह धुरन्धर
लए हर जोतिअ
पाटिअ सुरसरि धारे ।।
भनइ विद्यापति
सुनह महेश्वर
ई जानि कएल तुअ सेवा।
एतए जे बरु होअ
से बरु होअओ
ओतए सरन मोहि देबा।।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

शब्दार्थ

बेरि - बेरि	:	बेर-बेर, बारंबार
मोत्रे	:	हम
बोलओ	:	बजैत छी
तोहि	:	तोरा
किरिसि	:	खेती, कृषि
सरमे	:	लाज कयने
उपहासए	:	निन्दा करय, हँसी करय
अनुकम्पा	:	कृपा
हर	:	शिव, महादेव, महेश्वर
हरि	:	विष्णु
आक	:	अकौन
धुथुर	:	एक फूल, धथूर
खटङ	:	काठक एक अस्त्र जे शिव धारण कयने छथि
तिसुल	:	त्रिशूल
ब्सह	:	बसहा, शिवक बड़द
फारे	:	हरमे पैसाओल धरगर लोहा
सुरसरि	:	गंगा

प्रश्न ओ अभ्यास

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न -

(i) 'शिवगीतक' कें रचयिता छथि-

(क) चन्दा झा (ख) विद्यापति

(ग) काशीकान्त मिश्र 'मधुप' (घ) वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री'

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

(ii) 'विद्यापतिक' रचना छनि –

(क) शिवगीत (ख) समय साल

(ग) वन्दना (घ) हऽ आब भेल वर्षा

2. रिक्त स्थानक पूर्ति करू :

(i) बेरि – बेरि अरे .... ।

(ii) नहि .... अनुकम्पा ।

(iii) ई .... कएल तुअ सेवा ।

3. निम्न पाँतीक सप्रसंग व्याख्या करू :

(i) निरधन जन बोलि
सबे उपहासए
नहि आदर अनुकम्पा।

(ii) खटङ काटि हर
हर बन्धाबिअ
तिसुल तोड़िअ करु फारे ।
बसह धुरन्धर
लए हर जोतिअ
पाटिअ सुरसरि धारे ॥

4. लघूत्तरीय प्रश्न-

(i) कवि शिवकेँ की करबाक लेल कहैत छथि ?

(ii) शिवक पूजा की लऽ होइत अछि ?

(iii) विष्णुक पूजा कोन फूलसँ होइत अछि ?

(iv) कवि शिवकेँ हर कोना बनयबाक लेल कहैत छथिन ?

(v) शिव खेतक पटौनी कोना करताह ?

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

5. दीर्घोत्तरीय प्रश्न -

(i) एहि गीतमे कवि शिवकेँ खेती करबाक लेल किएक कहैत छथिन ?

(ii) भीख माङबसँ खेती करब किएक नीक अछि ?

(iii) पठित गीत अहाँकेँ की सन्देश दैत अछि ?

(iv) पठित कविताक सारांश लिखू।

गतिविधि-

(i) विद्यापतिक शिवगीतमे महेशवानी
आ नचारी अबैत अछि।
दुनू प्रकारक एक-एक गीत कंठस्थ करू।

(ii) विद्यापतिसँ भिन्न कोनो कविक शिवगीत लिखू।

(iii) निम्नलिखित शब्दक दू-टा पर्यावाची शब्द लिखू :
निरधन, हर, हरि , फूल

(iv) एहि गीतसँ पाँच टा संज्ञा शब्द चुनि कऽ लिखू।

(v) निम्नलिखित शब्दक अर्थ लिखू।
हर, हरि, सुस्सार।

निर्देश-

1. शिक्षकसँ अपेक्षा कयल जाइत अछि जे ओ विद्यापतिक आन रचनासँ छात्रकेँ अवगत कराबथि।
2. शिक्षक छात्रसँ शिवगीतक गायन वर्गमे कराबथि।
3. शिवगीतक गायनकेँ छात्र द्वारा विद्यालयक समारोहमे गायन शिक्षक कराबथि।
4. विद्यापतिक भक्ति रचनासँ सेहो शिक्षक छात्रकेँ जनतब कराबथि।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

चन्दा झा

चन्दा झाक वास्तविक नाम रहनि चन्द्रनाथ झा, मुदा रचनाकारक रूपमे ई प्रसिद्ध छथि चन्दा झाक नामसँ। ई दरभंगा जिलाक पिण्डारूच गामक वासी रहथि, बादमे मधुबनी जिलाक ठाढ़ी गामक निवासी भऽ गेलाह। ई गाम हिनक सासुर रहनि। हिनक शिक्षा-दीक्षा भेल मातृकमे, सहरसाक बड़गाममे। ओतहि पढ़ि कऽ ई पण्डित बनलाह, विद्वानक रूपमे ख्याति अर्जित कयलनि।

चन्दा झा दीर्घजीवी छलाह। हिनक जन्म 20 जनवरी 1831 आ मृत्यु 14 दिसम्बर 1907 भेलनि। ई जेहने विद्वान रहथि तेहने साधक। महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह तथा रमेश्वर सिंहक राजदरबारक मूर्धन्य पण्डित रहथि। ओतहि हिनक विद्वत्ता आ साहित्य-प्रेम विकसित भेल। मैथिली साहित्य संसारमे ई अनुसन्धनकर्त्ता, कवि आ अनुवादक रूपमे विशेष प्रसिद्ध छथि। विद्यापतिक अनेक कृतिक खोज कऽ ओकरा लिपिबद्ध करब, ओकर पाठकेँ सोझरायब हिनक अद्वितीय उपलब्धि अछि। मिथिलाक लोककण्ठमे व्याप्त विद्यापतिक गीतकेँ एकत्र कऽ ओकरा जे मानक रूप देलनि अछि से हिनक कर्मठता एवं विद्वत्ताक अपूर्व दृष्टान्त अछि।

मैथिली साहित्यमे चन्दा झाक सर्वोत्कृष्ट देन अछि, 'मिथिला भाषा रामायण' तथा 'पुरुष-परीक्षाक मैथिली'अनुवाद। मैथिलीमे पहिल महाकाव्य यैह लिखलनि। हिनक रामायणक कतोक पाँती मैथिल मेधाक आ एहि ठामक भाषा-शक्तिक प्रमाण बनि गेल अछि। रामकथाकेँ जाहि सरल आ सहज भाषामे ई रखलनि अछि से हिनका अमर बनबैत अछि। पुरुष-परीक्षाक गद्य-पद्यमय अनुवाद कऽ मैथिलीमे कथा-लेखनक सूत्रपात करबाक श्रेय हिनके छनि।

चन्दा झा मुक्तक-कविताक लेल सेहो प्रसिद्ध छथि। हिनक वैचारिकताक काव्यात्मक रूप मुक्तके रचनामे बेसी मुखर अछि। प्रस्तुत 'समय-साल' कवीश्वर चन्दा झाक मुक्तक कविता अछि।

काव्य सन्दर्भ -पठित कविता मैथिली अकादमी, पटनासँ प्रकाशित, डॉ. विश्वेश्वर मिश्र द्वारा सम्पादित 'चन्द्र रचनावली' नामक संग्रहसँ लेल गेल अछि। एहि कवितामे मिथिलाक बाढ़ि रोकबाक लेल होइत लोकक प्रयास, बाढ़िसँ भेल तबाही आ जनजीवनक त्रासदीक चित्रण अछि। कवि दाही-रौदीक विभीषिकासँ मुक्त सुखमय जीवनक कामना करैत छथि। तखने मिथिला विकास करत, मैथिल अपन बुद्धि बलक छाप छोड़ताह।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

समय-साल

भदइ सुखायल धान दहाय।
गरिब किसान कि करत उपाय।।
कोना दिन काटत जिउत कि खाय।
वाल वचा मिलि करै हाय हाय ।।
हृदय जनु फाटत ।
वाँधल छहर ऊच कै आरि ।
राति दिन सभ धयल कोदारि।।
सारि छल उपजल लेल संहारि।
निर्दय कमला कि दहु विचारि।।
हारि हिय वैसल ।
समटु समटु जल कमला माय ।
करु जनु एहन देवि अन्याय।
असह दुख होइछ आस लगाय।
कैलहु खरचा करज कै खाय।।
विकल जन रोइछ ।
वड़ रौदी छल वरिसल पानि।
मघ असरेस कयल नहि हानि।।
चलल छल धन्धा कह कवि चन्द ।
अपन वुतै की होयत काज समय न भेल मन्द।।

8A

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

शब्दार्थ

भदइ	:	भादवमे उपजयवला अन्न-यथा -मरुआ, गम्भरी
सारि	:	धान, जजाइत
मघ	:	एकटा नक्षत्र, मकर, माघ मास
असरेस	:	श्लेषा नक्षत्र, पूस मास
करज	:	ऋण
छहर	:	तटबन्ध

प्रश्न ओ अभ्यास

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न-

(i) 'समय-साल' कविताक रचयिता छथि।

(क) चन्दा झा (ख) सुकान्त सोम

(ग) काशीकान्त मिश्र 'मधुप' (घ) बुद्धिनाथ मिश्र

(i) चन्दा झाक कविताक शीर्षक अछि

(क) समय-साल (ख) शिवगीत

(ग) वन्दना (घ) हाथ

2. रिक्त स्थानक पूर्ति करू :

(i) भदइ सुखायल धान .....।

(ii) कोना ..... काटत जिउत कि खाय।

3. शुद्ध/अशुद्ध वाक्यकेँ चिह्नित करू :

(i) राति दिन कोदारि धय छहरक निर्माण कयल गेल।

(ii) बाढ़िमे धान दहाय गेल।

4. निम्न पाँतीक सप्रसंग व्याख्या करू :

(i) भदइ सुखायल धान दहाय।
गरिब किसान कि करत उपाय।।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

कोना दिन काटत जिउत कि खाय।
वाल वचा मिलि करै हाय हाय ॥

(ii) समटु समटु जल कमला माय।
करु जनु एहन देवि अन्याय॥
असह दुख होइछ आस लगाय।
कैलहु खरचा करज कै खाय॥

5. सही युग्मक मिलान करू :

(i) विद्यापति	(क) एड्सक कालनाग
(ii) चन्दा झा	(ख) जवाहर लाल: जेहन देखलहुँ जहन पेआलहुँ
(iii) चन्द्रभानु सिंह	(ग) समय साल
(iv) जयकान्त मिश्र	(घ) चन्द्रमुखी
(v) लिली रे	(ङ) शिवगीत

6. लघूत्तरीय प्रश्न-

(i) भदैया फसिल कोन मासमे होइत अछि ?

(ii) छहर ककरा कहल जाइत अछि ?

(iii) छहरक निर्माण कोन उद्देश्यक लेल कयल जाइत अछि ?

(iv) बाढ़िमे धान दहा गेलाक बाद किसानक दिन कोना कटैत अछि ?

(v) कमला मायक पूजा कोन उद्देश्य लेल कयल जाइत अछि ?

7. दीर्घोत्तरीय प्रश्न-

(i) 'समय साल' कविताक भावार्थ लिखू।

(ii) पठित कविताक आधार पर बाढ़िक वर्णन करू।

(iii) भदइ सुखयलाक बाद आ धान दहयलाक बाद गरीब किसानक स्थितिक वर्णन करू।

(iv) चलल धन्धा मन्द भऽ गेल– कवि चन्द्र कोन रूपेँ वर्णन कयलनि अछि ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

गतिविधि-

1. 'बाढ़ि' पर कोनो दोसर कविक कविता लिखू।
2. भदइ फसल ककरा कहल जाइत अछि - छात्र आपसमे चर्चा करथि।
3. मघा आ असरेस नक्षत्रक विषयमे छात्र चर्चा करथि।
4. बाढ़ि अयला पर गरीब किसानक दशाक वर्णन करू।
5. बाढ़िसँ निदानक लेल छहरक निर्माण भेल अछि - पक्ष-विपक्षमे चर्चा करू।

निर्देश-

1. बाढ़िक विभीषिकासँ शिक्षक छात्रकेँ परिचित कराबथि।
2. कोशी नदीक कुसहा तटबन्ध टुटलासँ धन-जनक हानि भेल, शिक्षक छात्रकेँ बुझाबथि।
3. जल देवता कमला मायक आन गीत शिक्षक गाबि कऽ सुनाबथि।
4. छहरक निर्माण किएक कयल जाइत अछि, शिक्षक जनतब कराबथि।

---

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

काशीकान्त मिश्र 'मधुप'

काशीकान्त मिश्रक उपनाम छल - मधुप। एही उपनामसँ ई साहित्य संसारमे प्रसिद्ध छथि। हिनक जन्म भेल छलनि 2 अक्टूबर, 1906 ई. मे। पैतृक छलनि कोइलख, मुदा ई अपन मातृक (कोर्थु, दरभंगा) मे बसि गेल छलाह। संस्कृतक विद्यार्थी रूपमे ई व्याकरण तथा साहित्य विषयमे आचार्य कयलनि, वेदान्तमे शास्त्री। जयानन्द उच्च विद्यालय, बहेड़ा (दरभंगा) मे संस्कृत शिक्षकक पद पर सैंतीस वर्ष रहलाह। हिनक मृत्यु 20 दिसम्बर, 1987 कऽ भेलनि।

मधुपजीक साहित्य-रचनाक एकमात्र विधा छल कविता। ओ गद्य कहियो नहि लिखलनि। व्यक्तिगत चिट्ठी-पत्री सेहो पद्यमे लिखथि। तेँ हिनका 'कवि चूड़ामणि' क उपाधि भेटल छलनि। सामाजिक दायित्व - बोधसँ प्रेरित भऽ ई काव्य-लेखन शुरू कयलनि। उनैसम शताब्दीक पाँचम दशकमे मैथिली भाषा पर अनेक प्रकारक प्रहार भऽ रहल छल। एहिमे प्रमुख छल मिथिलामे मैथिली-गीतक अपेक्षा हिन्दी सिनेमाक गीतक बढ़ैत प्रभाव। मधुपजी एहि तथ्यकेँ गमलनि। साकांक्ष भेलाह। हिन्दी सिनेमाक तथा अन्य लोक-गीतक भास पर जमि कऽ गीत लिखलनि। अपूर्व रसगुल्ला, टटका जिलेबी, पचमेर, चौंकि चुप्पे, बोलबम आदि एही वैचारिकताक गीत - पोथी अछि।

किन्तु, मधुपजी दोसरो प्रकारक काव्य- रचना कयलनि अछि। झंकार, शतदल, मधुप सप्तशती, द्वादशी, प्रेरणा पुंज आदि कविता संग्रहमे हिनक लोकधर्मी दृष्टिकोणक संग पाण्डित्य सेहो मुखर अछि। 'घसल अठन्नी' हिनक एही कोटिक लोकप्रिय कथा-काव्य अछि। एहि सभक अतिरिक्त हिनक 'राधा-विरह' महाकाव्य अछि जाहि पर हिनका साहित्य अकादमी पुरस्कार भेटल छनि।

काव्य सन्दर्भ - 'भावि भरदुतिया विधान हे ' पहिल बेर चौंकि चुप्पेमे छपल छल जे बादमे प्रसंगवश 'प्रेरणापुञ्ज' मे सेहो संकलित भेल। एहि कवितामे मिथिलाक भरदुतिया पावनिक वर्णन आ ताहि माध्यमसँ भाइ-बहिनक स्नेह-भावक प्रगाढ़ताक उल्लेख अछि। भरदुतियामे भाइक नहि आयब बहिनक लेल कतेक पीड़ादायक होइत अछि, तकर अभिव्यक्ति अत्यन्त सरल आ मार्मिक ढंगसँ कवि कयलनि अछि।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

भावि भरदुतिया विधान हे

नीपि झलकौलेँ घर-अङना दुअरिया
भावि भरदुतिया विधान हे
अरिपन द' पीढ़ी द्यौरि क' रखलिऐ
भैयाकेँ नोतब दय पान हे
यमुना नोतल यम, हम नोती भैया
चाही नहि सोना-चानी, चाही ने रुपैया
या धरि यामुन जल, जीवऽ वर माङि क'
फाँफर फोलब मखान हे
मनक मनहि रहि गेल सब बतिआ
केहन कठोर भेल भैआकेर छतिया
दोष न हुनक, बिनु मायक नैहरबा
भौजिओक हृदय पखान हे
सुनिते साइकिल - घंटी, पाँखि बिनु अँखिया
दौड़य सड़क दिशि, कते बेर सखिया
सुरूज डुबैत भैआकेर ताकि बटिआ
बहि गेल कमला - बलान हे
भटवर तिलकोर कथी ले' तरलिऐ
दही पौड़ि गोटा दूध किए ओरिऔलिऐ
दिऐ उलहन हँसि-हँसि कऽ ननदिआ
भेल मन 'मधुप' मलान हे।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

शब्दार्थ

भावि	:	भावना कऽ, विचारि
भरदुतिया	:	भाइ-बहिनक पावनि, भ्रातृ द्वितीया
अरिपन	:	पिठारसँ पीढ़ी/ देवार/ भूमि पर सिनूर दऽ बनाओल चित्र
पीढ़ी	:	काठक बनायल बैसबाक वस्तु
द्योरि	:	पिठार/ चूनसँ रङि कऽ
नोतब	:	नेओत देब, निमन्त्रण देब
फाँफर	:	फाँड़क धोतीसँ बनाओल धोकरी
मखान	:	एकटा खाद्य वस्तु जे पानिमे उपजैत अछि।
पखान	:	पाथर , पाषाण
गोटा दूध	:	औटैत- औटैत खूब गाढ़ भेल दूध

प्रश्न ओ अभ्यास

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न -

(i) 'भावि भरदुतिया विधान हे' केर रचयिता छथि -

(क) काशीकान्त मिश्र 'मधुप' (ख) चन्द्रभानु सिंह

(ग) वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' (घ) उदय चन्द्र झा 'बिनोद'

(ii) काशीकान्त मिश्र 'मधुप' क कविताक शीर्षक अछि

(क) वन्दना (ख) भावि भरदुतिया विधान हे

(ग) एड्सक कालनाग (घ) जय जवान : जय किसान

2. रिक्त स्थानक पूर्ति करू :

(i) नीपि झलकौलेँ ..... दुअरिया।

(ii) सुनिते साइकिल घंटी पाँखि ..... अँखिआ।

3. शुद्ध / अशुद्ध वाक्यकेँ चिन्हित करू :

(i) भुरदुतियामे अरिपन दऽ पीढ़ी ढौरि कऽ राखल जाइत अछि।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

(ii) भरदुतिया पावनिमे घर-अङना नहि नीपल जाइत अछि।

4. लघूत्तरीय प्रश्न-

(i) भरदुतिया पावनिमे किनका नोतल जाइत छनि ?

(ii) नोतबाक की विधान अछि ?

(iii) बहिन भाइ लेल की वर मँगैत छथि ?

(iv) भैयाक स्वागत लेल की-की ओरियान बहिन कयनै छलथिन ?

(v) भैयाक नहि अयला पर उलहन के देलथिन ?

5. दीर्घोत्तरीय प्रश्न -

(i) 'भावि भरदुतिया विधान हे' कविताक भाव स्पष्ट करू।

(ii) पठित कविताक आधार पर भाइ-बहिनक पावनिक वर्णन करू।

(iii) भैयाक नहि अयला पर बहिनक स्थितिक वर्णन करू।

(iv) पठित कवितामे बहिनक नैहरक प्रति भावक वर्णन करू।

(v) भरदुतिया पावनि भाइ-बहिनक स्नेहक पावनि थिक स्पष्ट करू।

गतिविधि-

1. भरदुतिया पावनि पर एकटा संक्षिप्त निबन्ध लिखू।
2. एहि पाठमे मिथिलाक संस्कृति पर चर्चा कयल गेल अछि - एहिपर आपसमे चर्चा करू।
3. नोत लेबाक कालक गीत स्मरण हो तँ गावि कऽ सुनाउ।
4. 'मनक मनहि रहि गेल सब बतिआ
   केहन कठोर भेल भैआकेर छतिया
   दोष न हुनक, बिनु मायक नैहरबा'
   उपर्युक्त पाँतीक संप्रसंग व्याख्या करू -
5. एहि कविताकेँ कंठस्थ करैत सस्वर पाठ करू।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

निर्देश -

1. भरदुतियाक अवसर पर गाओल गेल गीतसँ शिक्षक छात्रकेँ परिचित कराबथि।
2. भरदुतिया पावनि पर गाओल गेल आनोआन पारम्परिक गीतसँ छात्रकेँ अवगत कराबथि।
3. शिक्षक छात्रकेँ भरदुतिया पावनिक दिनक विधि विधानसँ परिचित कराबथि।
4. भाइ-बहिनक अटूट स्नेह सम्बन्धक प्रतीक पावनि भरदुतियाक महत्त्वक चर्चा शिक्षक छात्रकेँ कराबथि।

---

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री'

यात्रीक मूल नाम छनि वैद्यनाथ मिश्र। मैथिलीमे यात्री आ हिन्दीमे नागार्जुन नामसँ लिखैत छलाह। हिनक जन्म दरभंगा जिलाक तरौनी गाममे 1911 इसवीक ज्येष्ठ पूर्णिमा दिन भेलनि। सतासी वर्षक आयु मे 5.11.1998 कऽ दिवंगत भेलाह।

यात्रीक पहिल कविता 1929 ई. मे छपलनि। तकरा बाद ई मृत्युपर्यन्त निरन्तर लिखैत रहलाह। मैथिलीमे हिनक तीनटा उपन्यास प्रकाशित छनि-पारो, नवतुरिया आ बलचनमा। कविता -संग्रह छनि-चित्रा आ पत्रहीन नग्नगाछ। ओना, हिनक सम्पूर्ण मैथिली कविताक संकलन, हिन्दी अनुवाद सहित, सेहो उपलब्ध अछि। 'पत्रहीन नग्न गाछ' पर हिनका साहित्य अकादेमी, दिल्लीसँ पुरस्कार सेहो भेटल छनि।

प्रगतिवादी रचनाकारक रूपमे यात्री देश-विदेशमे प्रख्यात छथि। लोक-जीवन, लोक-भावना आ लोक-गरिमाक एहन अडिग रचनाकार भेटब कठिन अछि। 'चित्रा' मैथिली -साहित्यमे प्रस्थान बिन्दु अछि। यात्री उपन्यास आ कविताक अतिरिक्तो विधामे लिखने छथि, मुदा सर्वत्र हुनक दृष्टिकोण आ विचारधारा लोकवादी अछि।

काव्य सन्दर्भ -'नागार्जुन-रचनावली' सँ संकलित 'हऽ आब भेल वर्षा' यात्रीक लोकचेतनाक काव्यमय अभिव्यक्ति अछि। वर्षा नहि भऽ रहल छैक। लोक छटपछा रहल अछि। बेचैन अछि। तखने वर्षा होइत अछि। लोकक जानमे जान अबैत छैक। बाध-बोन हरियर होयत। कदम्ब फुलायत। भगत सभ सलहेसक गीतगाय तेँ गहबर ठीक करत । किसान धानरोपनी करत। खेतक आरि पर बैसि कऽ कलौ खायत आ फसिल नीक होयबाक खुशीमे ओकर मन-मयूर नाचऽ लगतैक।

यात्रीक एहि कविताक अन्त किसानक खुशी पर होइत अछि। बल्कि, ई खुशी ओकरे टा नहि अछि, अन्नक आवश्यकता सभकेँ होइत छैक, आ तकर प्राप्तिक प्रसन्नता सभ प्राणीकेँ होइत छैक। तेँ ई कविता वर्षा - ऋतुक लोकवादी आ यथार्थवादी उपयोगिताकेँ उजागर करैत अछि। कविताक शिल्प आ भाषा भावना केँ मूर्त्त करबामे अत्यन्त सहायक अछि।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

हऽ आब भेल वर्षा

प्रतीक्षामे बीति गेल कइएक पहर
प्रतीक्षामे चुइल गत्र-गत्र सँ घाम घैलक घैल
प्रतीक्षामे ठमकल रहलै गाछक पात-पात,
सिहकी नहि चललै बसातक
प्रतीक्षामे सूर्य रहि गेल झाँपल ने जानि कतेकाल
मेघक अऽढ़मे
प्रतीक्षामे सुनलक बड्ड गारि अखाड़क ई मास
हऽ, आब भेल वर्षा
हऽ, आब भीजल संसार
हऽ, आब हल्लुक भेल मोन
हऽ, आब उगला सूर्य
हऽ, आब देखबामे आयल चिड़ै चुनमुन
बीज होयत अंकुर नयनाभिराम
प्रतीक्षाक सुफल भेटतैक ओकरा
बाध-बोन होयत हरियर
जुड़ा जयतनि धरतीक मोन-प्राण
ओढ़ि लेत कदम्बक गाछ
पीयर फुदनाबला झालरि
ठीक-ठाक करत भगता सलहेसक गहबर
दूभि के छीलि-छालि साफ कऽ देतनि आइन

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

भरि जायत पोखरि भऽ जायत उमड़ान
पसरतै ओहिमे ललका कुमुदिनीक पात....
भरि-भरि दिन भीजत लोक
भरि-भरि दिन धान रोपत लोक
आरि पर बैसिकऽ मझनी खायत लोक
आशाक मचकी पर झूलत लोक
कल्पनाक स्वर्गमे बूलत लोक।

शब्दार्थ

पहर	:	कालक एक परिमान, दिन - रातिक आठम भाग अर्थात् तीन घंटा।
सिहकी	:	बसातक /सिहकब
नयनाभिराम	:	देखबामे मनोरम
बाध-बोन	:	गामसँ बाहरक उपजाउ भूखण्ड आ गाछी-बिरछी
उमडाम	:	पूर्ण रूपेण भरल
मझनी	:	दिनक भोजन, मध्याह्न भोजन।

प्रश्न ओ अभ्यास

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न-

(i) वैद्यनाथ मिश्र 'यात्रीक' रचना छनि-

(क) 'हऽ, आब भेल वर्षा' (ख) समय-साल

(ग) वन्दना (घ) रौदी

(ii) 'हऽ, आब भेल वर्षा' शीर्षक कविताक रचयिता छथि

(क) 'वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' (ख) चन्दा झा

(ग) रवीन्द्र नाथ ठाकुर (घ) सुकान्त सोम

2. रिक्त स्थानक पूर्ति करू :

(i) प्रतीक्षामे बीति ..... कइएक पहर।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

(ii) हऽ, ... भेल वर्षा ।

(iii) जुड़ा जयतनि ..... मोन प्राण।

(iv) भरि-भरि दिन ..... लोक।

(v) कल्पनाक स्वर्गमे ..... लोक।

3. सप्रसंग व्याख्या करू :

(i) हऽ, आब भेल वर्षा

हऽ, आब भीजल संसार

हऽ, आब हलुक भेल मोन

हऽ, आब उगला सूर्य

(ii) भरि-भरि दिन धान रोपत लोक

आरि पर बैसिकऽ मझनी खायत लोक

आशाक मचकी पर झूलत लोक

कल्पनाक स्वर्गमे बूलत लोक

4. लघूत्तरीय प्रश्न -

(i) 'हऽ, आब भेल वर्षा' किनकर रचना अछि ?

(ii) वर्षाक प्रतीक्षा लोक कियैक करैत अछि ?

(iii) मेघक अऽढ़मे कथी झाँपल रहि गेल ?

(iv) वर्षा भेला पर बाध-बोन केहन भऽ जाइत अछि ?

(v) वर्षा भेला पर भगता की करताह ?

5. दीर्घोत्तरीय प्रश्न-

(i) 'हऽ, आब भेल वर्षा' शीर्षक कविताक भावार्थ लिखू।

(ii) पठित कविताक सारांश लिखू।

(iii) वर्षाक प्रतीक्षाक वर्णन कवि कोना कयलनि अछि।

(iv) वर्षा भेलाक उपरान्त प्रकृतिक की रूप होयत ?

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

(v) वर्षाक बाद लोक खुशीमे की सभ करत ?

गतिविधि -

1. निम्नलिखित शब्दक अर्थ शब्दकोशमे ताकिकेँ लिखू ।

   जुड़ा जयतनि, झालरि, गहबर, मचकी, बूलत।

2. वर्षा ऋतु पर आन कविता स्मरण सुनाउ।
3. वर्षा नहि भेला पर कोन तरहक कष्टकक सामना करय पड़ैत छैक - आपसमे छात्र चर्चा करथि।
4. वर्षाक आगमनसँ लोक कोना आनन्दित भऽ जाइत छथि- छात्र अपनामे चर्चा करथि।

निर्देश-

1. शिक्षक छात्रकेँ यात्रीजीक आन कवितासँ परिचित कराबथि।
2. वर्षासँ लोक लाभान्वित होइत अछि, शिक्षक विस्तारसँ छात्रकेँ बुझाबथि।
3. वर्षा ऋतु पर एकटा निबन्ध वर्गमे शिक्षक लिखाबथि।

---

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

चन्द्रभानु सिंह

चन्द्रभानु सिंह मैथिलीक नामी कवि छथि। हिनक जन्म दरभंगा जिलाक नदियामी गाममे भेल छनि। जन्मतिथि छनि । मार्च, 1922 ई०। स्कूलमे अध्यापक छलाह, आब सेवा-निवृत भऽ पूर्णत: साहित्यसेवा करैत छथि। स्वदेश भारती, के ई गीत अलापै छै तथा शकुन्तला (महाकाव्य) हिनक मैथिली काव्य-पुस्तक थिक। हिन्दीमे सेहो हिनक कविता-पोथी प्रकाशित छनि। शकुन्तला महाकाव्य पर हिनका साहित्य अकादेमी पुरस्कार भेटल छनि।

मैथिलीक लोकप्रिय गीतकार आ कवि चन्द्रभानु सिंह लोकधर्मी रचनाकार छथि। मैथिली गीतक लोकधुन, लोक-रुचि आ लोक - भाव हिनक रचनाक मुख्य विशेषता थिक। मूलत: ई गीतकार छथि, गायक छथि। कवि सम्मेलनक मंचसँ हिनक गीत सुनि श्रोता मुग्ध भऽ जाइत अछि।

काव्य सन्दर्भ - एहिठाम हिनक जे गीत संकलित अछि से अति सामयिक विषय पर केन्द्रित अछि। एड्स अत्यन्त खतरनाक बीमारी अछि। ओहि जानलेवा रोगसँ बचब प्रत्येक युवक-युवतीक लेल जरूरी अछि। तेँ कवि आमलोकक भाषामे आमलोककेँ आजुक कालखण्डक कालनागसँ बचबाक चेतौनी दैत छथि।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

एड्सक कालनाग

एड्सक कालनाग उतरल छै सिंधुक कतबय सँ घूसल।
कतऽ सँ ढूकल स्वदेश मे, दिशा-दिशा सँ गरजै छे ।।
आबै छै कम्पायमान भूकम्प आ कि सागरक लहर,
पाराद्वीपक कालरात्रि की करगिल केर विकराल पहर।
ऐटम बमसँ बढ़ि विभीषिका, आइ मनुज -कुल सिरजै छै ।। ।।। कतऽ सँ

एहेन काल घटा मड़राइछ, लोक अचेत पड़ल घर मे,
बूझि ने पड़य मुसीबत केर ढब, संचमच मरचर घर मे,
महादैत्य केर घ्राण साँस आ शोणित मे घुसि कुचैर छै।। 2।। कतऽ सँ

सिफलाहा सब परदेश जा-जा, पाप कमा' घर मे लाबय,
ढाहै वंशक भीत, कुटुम आ अपनहु घर बेबुझ घालय।
छूतक रोग ग्रसय बाघिन सन, अनदेखे दुख सिरजै छै ।। 3 ।। कतऽ सँ

डूबत देश जाहि कुत्सा सँ लाड़ल लोहाकेर लाड़न,
धँसल अलोपे पाप धरा पर अणु बिस्फोटो सँ भीषण।
चेतह बाल-युवा- नवतुर-जन, मोनक मीत चेताबै छै ।। 4।। कतऽ सँ

क्यो की बूझय ककर रक्त मे, विषकेर पुड़िया छै राखल,
महाकाल ककरा सिर उतरत, ककर मृत्यु रग मे झाँपल।
मीतो सँ बचि रहिहऽ मीता मोनक मीता बरजै छै ।। 5 ।। कतऽ सँ

हड़विर्रो मचि रहल देशमे, काल- संकटक आगम सँ,
जकरा मे चरित्रकेर बल छै, सैह निडर भूखल यमसँ,
सहस्राब्द केर शुभारंभ मे, नर-निरघिनकेँ लजबै छै ।। 6।। कतऽ सँ

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

शब्दार्थ

मनुज	:	मनुक्ख
भीत	:	डरायल
कम्पायमान	:	कम्पित करयबला
विभीषिका	:	भीषण भय
सिफलाहा	:	सिफलिस रोगसँ ग्रसित
मीता	:	मित्र
सहस्त्राब्द	:	हजार वर्ष
निरघिन	:	घृणित
कालनाग	:	समय - साँप, खतरनाक समय
बरजै	:	रोकै, मना करै।

प्रश्न ओ अभ्यास

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न-

(i) एड्सक कालनागक कवि छथि-

(क) चन्दा झा (ख) चन्द्रभानु सिंह

(ग) बुद्धिनाथ मिश्र (घ) वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री'

(i) एड्सक कालनागसँ रक्षाक लेल ककर आवश्यकता अछि।

(क) धन (ख) बल

(ग) चरित्र (घ) बुद्धि

2. रिक्त स्थानक पूर्ति करू :

(i) एहेन काल घटा मड़राइछ, लोक ..... घरमे।

(ii) चेतह बाल-युवा नवतुर-जन ..... चेताबैछै।

3. निम्नलिखितमे सँ शुद्ध / अशुद्धकेँ निर्दिष्ट करू :

(i) सिफलाहा सब कोलकाता जा पाप कमा' घर अनैत अछि।

(ii) एड्स एटम बमसँ विशेष खतरनाक अछि।

4. लघूत्तरीय प्रश्न -

(i) एड्स केहन रोग अछि ?

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

(ii) एड्सक विभीषिका केहन अछि ?

(iii) एड्सक कारण की अछि ?

(iv) कोन व्यक्ति एहि रोगसँ निडर रहैत अछि ?

(v) एड्सक प्रसारक कारण की अछि ?

5. दीर्घोत्तरीय प्रश्न -

(i) एड्सक प्रसारक कारणक उल्लेख करू ।

(ii) एड्सक बचावक उपाय बताउ।

गतिविधि-

1. छात्रकेँ अपन आचार-विचार केहन रखबाक चाही तकर आपसमे चर्चा करथि।
2. छात्र लोकनि वर्गमे भाषण प्रतियोगिताक आयोजन करथि।
3 छात्र एड्स निरोध सम्बन्धी नारा तैयार करथि।

4. निम्नलिखित पाँतीक सप्रसंग व्याख्या करू :

(i) डूबत देश जाहि कुत्सासँ लाड़ल लोहाकेर लाड़न,
धँसल अलोपे पाप धरा पर अणु बिस्फोटो सँ भीषण।

(ii) हड़बिर्रो मचि रहल देशमे, काल- संकटक आगम सँ,
जकरा मे चरित्रकेर बल छै, सैह निडर भूखल यमसँ,
सहस्राब्द केर शुभारंभ मे, नर-निरघिनकेँ लजबै छै।

निर्देश-

1. शिक्षक छात्रलोकनिकेँ एड्सक कारण, लक्षण ओ निदान बताबथि।
2. एड्सक कारणेँ कोनो एक परिवारक सर्वनाश भऽ गेलनि अछि, शिक्षक उल्लेख करथि।
3. छात्रलोकनिकेँ एड्स पर आधारित गीतक चुनाव कऽ वर्गमे शिक्षक सस्वर गबाबथि।
4. एड्स सम्बन्धी नारासँ शिक्षक छात्रकेँ परिचित कराबथि।

---

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

दीनानाथ पाठक 'बन्धु'

दीनानाथ पाठक 'बन्धु' मैथिलीक प्रसिद्ध कवि छथि। बेगूसराय जिलाक टुनही गाममे 1928 ई. मे हिनक जन्म भेलनि। माध्यमिक विद्यालयक शिक्षकक रूपमे ई अपन इलाकामे अत्यन्त लोकप्रिय छलाह। 'चाणक्य' नामक महाकाव्यक रचना सेहो कयलनि। हिनक निधन 1962 मे भेलनि।

काव्य सन्दर्भ -प्रस्तुत काव्य-अंश 'चाणक्य' महाकाव्यक पहिल सर्गसँ लेल गेल अछि। पुस्तकमे कर्मवीर चाणक्यकेँ कहल गेल अछि। एहि शब्दसँ हुनकहि विशेषता झलकैत अछि। मुदा, प्रस्तुत अंशमे कोनो एहन व्यक्ति जे काज करबामे विश्वास रखैत अछि, सक्रिय आ संघर्षशील अछि तकर लक्षण आ महत्वक वर्णन कवि कयलनि अछि। एहि प्रसंग राष्ट्रभक्ति पर सेहो जोर अछि। कविताक विचारे नहि, भाषा-भंगिमा पर्यन्त प्रेरणादायक अछि। ई उद्‌बोधन-काव्यक विलक्षण उदाहरण अछि।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

कर्मवीर

कर्मवीर रवि-ज्योति पुञ्जकेँ सहय न विघ्न उलूक
अखिल विश्व पथ दैछ समुज्ज्वल रहने लक्ष्य अचूक
कर्मवीरकेँ निश्चित पथपर विघ्न रहय नहि ठाढ़
ताल ठोकि कय भिड़य जखन पर्वत पर लाबय गाढ़
कर्मवीरसँ कोटि कोटि संकट भयभीत पड़ाय
रहय दु:ख-पर्वत सभ सम्मुख देखितहिँ शीघ्र नशाय
महाविपत्ति न धैर्यधनीकेँ कायरकेँ भय दैछ
शूल फूल सभ आगू आगू हँसइत पथ देखबैछ
घनक चोट सहि लौह धातुसँ होइछ जखन तरूआरि
रहितहुँ छोट अनेक युद्धमे दैछ शत्रु संहारि
अग्नितापसँ स्वर्ण अपन् द्युति द्विगुणित ग्रहण करैछ
कर्मवीर बाधाक आगिसँ तहिना दीप्ति पबैछ
जखन समाज स्वराष्ट्र स्वदेशक होइछ शिथिल सभ अंग
विविध कलुष पातक अनीतिसँ मानवता विकलांग
होइछ प्रखर आह्वान क्रान्ति केर प्रबल प्रेरणा प्राप्त
जनसमाजसँ उद्‌बोधित क्यो उठइछ नेता आप्त
नेता सैह समाजक दुखमय शोषण-पीड़न जाल
उठा लैछ गोबर्द्धन गिरि सभ आङ्गुरपर तत्काल
कालकूट घट पीबि, सुधा-रस जगमे बाँटि सकैछ
मर्त्य-लोकसँ देव-लोक धरि नेता ओ कहबैछ

Fan

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

विष-ज्वाला-परिपूर्ण नागफन चढ़ि जे नाचि सकैछ

सैह समाजक, धर्मक, राष्ट्रक जन - नेता कहवैछ

टारि घोर संकट स्वराष्ट्र हित कऽ स्वकीय बलिदान

नेता पूर्वप्राप्त गौरव केर बढ़ा दैछ सम्मान

शब्दार्थ

कर्मवीर - काज करबामे बहादुर, काज करबामे विश्वास राखयवला

गाढ़ - रंग, भावनात्कम गंभीर रंग

नशाय - नाश हो

द्युति - चमक

दीप्ति - प्रकाश , चमक

कलुष - पाप

प्रश्न ओ अभ्यास

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न -

(i) 'कर्मवीर' केर रचयिता छथि।

(क) बुद्धिनाथ मिश्र (ख) उदयचन्द्र झा 'विनोद'

(ग) दीनानाथ पाठक 'बन्धु' (घ) सुकान्त सोम

(ii) 'दीनानाथ पाठक' बन्धुक रचना छनि -

(क) वन्दना (ख) हाथ

(ग) कर्मवीर (घ) रौदी अछि

2. रिक्त स्थानक पूर्ति करू -

(i) कर्मवीर निश्चित ..... विघ्न रहय नहि ठाढ़

(ii) घनक चोट सहि ..... धातुसँ होइइ जखन तरूआरि

(iii) मर्त्य-लोकसँ देव-लोक धरि ..... ओ कहबैछ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

3. लघूत्तरीय प्रश्न -

(i) कर्मवीरक लक्ष्य केहन होइछ ?

(ii) कर्मवीर केहन होइत छथि ?

(iii) पठित कवितामे नेताक की रूप अछि ?

(iv) 'कर्मवीर' किनकर कविता अछि ?

(v) 'कर्मवीर' सँ अहाँ की बुझैत छी ?

4. दीर्घोत्तरीय प्रश्न-

(i) पठित पाठक भावार्थ लिखू

(ii) पठित पाठक आधार पर कर्मवीरक प्रमुख विशेषता बताउ।

(iii) 'कर्मवीर' क सारांश लिखू।

(iv) पठित पाठमे नेताक लक्षण निरूपित कयल गेल अछि। स्पष्ट करू।

(v) निम्न पाँतीक अर्थ स्पष्ट करू-

घनक चोट सहि लौह धातु सँ होइछ जखन तरूआरि

रहितहु छोट अनेक युद्धमे दैछ शत्रु संहारि

5. निम्न पाँतीक सप्रसंग व्याख्या करू :

(i) कर्मवीरसँ कोटि कोटि संकट भयभीत पड़ाय

रहय दु:ख-पर्वत सभ सम्मुख देखतहिँ शीघ्र नशाय

(ii) कालकूट घट पीबि सुधा-रस जगमे बाँटि सकैछ

मर्त्य -लोकसँ देव-लोक धरि नेता ओ कहबैछ

गतिविधि -

1. 'कर्मवीर' पाठ कंठस्थ कऽ सस्वर पढ़ू।

2. निम्न शब्दक पर्यायवाची लिखू

विश्व , पर्वत, स्वर्ण , गिरि

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

3 शब्दकोशसँ निम्न शब्दक अर्थ ताकू

धैर्यधनीकेँ, घनक, स्वराष्ट्र, कालकूट।

4. सोना जेना आगिमे तपि कऽ चमकैत अछि तहिना कर्मवीर बाधाक आगिसँ आलोकित होइत छथि - फरिछा कऽ लिखू।

निर्देश -

1. कर्मवीरक विशेषता शिक्षक छात्रकेँ जनतब कराबथि।
2. पठित पाठमे नेताक परिभाषा कोन रूपेँ देल गेल अछि फरिछा कऽ शिक्षक छात्रकेँ बुझाबथि।
3. 'कर्मवीर' मे कविक कहबाक की उद्देश्य छनि - शिक्षक छात्रकेँ विस्तारसँ बुझाबथि।
4. कोनो कर्मवीरक लघु कथा शिक्षक छात्रकेँ सुनाबथि।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

रवीन्द्रनाथ ठाकुर

मैथिली गीतकेँ जन-गण धरि लऽ जायवला कविमे रवीन्द्रनाथ ठाकुर मुख्य छथि। पूर्णिया जिलाक धमदाहा गाममे 7 अप्रैल, 1936 कऽ हिनक जन्म भेलनि। प्रारम्भमे ई सरकारी नोकरी कयलनि, मुदा से छोड़ि पूर्णत: लेखन-कार्यमे लागि गेलाह। मैथिली अकादमी, पटनाक निदेशक रूपमे महत्वपूर्ण काज कयने छथि।

रवीन्द्रनाथ ठाकुर स्वभावसँ साहित्य-संगीत-कला संसारक लोक छथि। गीतक माध्यमसँ मैथिली भाषा - साहित्यक प्रचार-प्रसार कयलनि। बाल-बच्चा, युवक-युवती आ बूढ़-जवान-सभकेँ हिनक गीत नीक लगलैक। सुनि-पढ़ि कऽ लोक झूमि उठल। एहि प्रकारक गीत-संग्रहमे सुनू सुनू बहिना, जहिना छी तहिना, स्वतंत्रता अमर हो हमर, प्रगीत, सुगीत, रवीन्द्र पदावली आदि लोकप्रिय अछि। मैथिलीमे फिल्म बनयबाक श्रेय हिनका छनि। 'ममता गाबय गीत' आइयो ऐतिहासिक उपलब्धि मानल जाइत अछि। सम्प्रति दिल्लीमे रहि सुयोजन फिल्म्स इन्डिया प्राइवेट लिमिटेडक माध्यमसँ साहित्य आ कलाकेँ नव-नव आयाम दऽ रहल छथि।

काव्य सन्दर्भ -प्रस्तुत कविता 'स्वतंत्रता अमर हो हमर' नामक पोथीसँ लेल गेल अछि। पोथीक नामे सँ स्पष्ट अछि जे एहिमे राष्ट्रप्रेमक रचना संगृहीत अछि। 'जय-जवान : जय किसान' सेहो राष्ट्रीय प्रेमक कविता थिक। भारत पर चीनी आक्रमण 1962 मे भेल छल। तकरा बाद तत्कालीन प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री इएह नारा देने रहथि। भारतक सेना आ किसानकेँ जगयबाक लेल ई कविता लिखल गेल अछि। यदि भारत सुरक्षित आ आत्म-निर्भर रहत तऽ एकरा पर कोनो आक्रमण निष्फल भऽ जायत। तेँ सैनिककेँ आ कृषककेँ अपन-अपन काजमे मनसँ लागब अपेक्षित अछि।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

जय जवान : जय किसान

जय बाजू मिलिकय भैया
जय बाजू वीर जवान केर
जय जय हो भारत मैया
जय जय हो आइ किसान केर।

लड़त सिपाही जा सीमा पर
हऽम अन्न उपजेबै
आमद सँ कम खर्चा करबै
बेसी अन्न बचेबै
असराने रखबै आन केर।

हऽम कमयबै तखने खयतै
बोआ हमर सिपाही
मेहनति करबै देह तोड़िकै
हऽ रे बड़द गबाही
ममता ने राखब जान केर।

बून्दे-बून्दे घैल भरै छै
पैसे-पैसे भरे बटुआ
जै घर पैसा सुख छै तै घर
नाचय छम-छम नटुआ
शोभा अपरूप हिन्दुस्तान केर।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

शब्दार्थ

आमद - आमदनी

असरा - भरोसा

अपरूप - सुन्दर

बटुआ - कपड़ाक बनाओल छोट झोड़ी

प्रश्न ओ अभ्यास

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न -

(i) 'जय जवान जय किसान' कविताक रचनाकार के छथि ?

(क) काशीकान्त मिश्र 'मधुप' (ख) रवीन्द्रनाथ ठाकुर

(ग) उदय चन्द्र झा 'विनोद' (घ) तारानन्द 'वियोगी'

(ii) सिपाही कतय लड़ैत अछि

(क) खेतमे (ख) घरमे

(ग) सीमा पर (घ) लड़ाइक मैदानमे

2. रिक्त स्थानक पूर्ति करू :-

(i) ममता ने राखब ..... केर

(ii) नाचय छम-छम नटुआ शोभा अपरूप ..... केर

3. निम्नलिखितमे सँ शुद्ध / अशुद्ध प्रश्नकेँ चिह्नित करू :-

(i) किसान सीमा पर लड़ैत अछि।

(ii) सिपाही अपन जान केर मोह नहि रखैत अछि।

4. सप्रसंग व्याख्या करू :

(i) लड़त सिपाही जा सीमा पर
हऽम अन्न उपजेबै
आमदसँ कम खर्चा करबै
बेसी अन्न बचेबै
असराने रखबै आन केर ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

(ii) बून्दे-बून्दे घैल भरै छै
पैसे-पैसे भरे बटुआ
जै घर पैसा सुख छै तै घर
नाचय छम-छम नटुआ
शोभा अपरूप हिन्दुस्तान केर।

5. लघूत्तरीय प्रश्न -

(i) जवान की करैत छथि ?

(ii) किसानक की काज अछि?

(iii) कवि ककर जयकार करैत छथि ?

(iv) कोन व्यक्ति प्रसन्न रहैत छथि ?

6. दीर्घोत्तरीय प्रश्न -

(i) देशक विकासमे जवान ओ किसानक योगदानक उल्लेख करू।

(ii) 'जय जवान जय किसान' कविताक भाव स्पष्ट करू।

गतिविधि-

1. अमर शहीद सेनानी पर लिखित गीत छात्र गावथि।
2. एक किसानक आत्मकथा लिखू
3. जवान आ किसान देशक लेल कतेक महत्त्वपूर्ण अछि–छात्र आपसमे चर्चा करथि।
4. जवान आ किसानक जीवन पर स्वतन्त्र-स्वतन्त्र निबन्ध लिखू।

निर्देश -

1. शिक्षक छात्रकेँ जवान आ किसानक दशासँ अवगत करावथि।
2. किसान पर लिखित आन गीतसँ शिक्षक छात्रकेँ परिचित करावथि।
3. 'जय-जवान: जय किसान' कविताक सस्वर पाठ करावथि।
4. 'जय जवान: जय किसान' किनकर नारा थिक, शिक्षक छात्रकेँ अवगत करावथि।
5. 'जय जवान: जय किसान नारा' कहिआ देल गेल आ किएक देल गेल-शिक्षक छात्रकेँ बुझावथि।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

विद्यानाथ झा 'विदित'

विद्यानाथ झा 'विदित' मैथिलीक जानल-मानल रचनाकार छथि। हिनक जन्म दरभंगा जिलाक मौहार गाममे 5 जून, 1942 कऽ भेलनि। मैथिलीमे एम.ए, पीएच.डी. कयलनि, संताल परगना कालेज, दुमकामे मैथिलीक प्राध्यापक ओ विभागाध्यक्ष भेलाह। ओही कालेजक प्राचार्य-पद पर कार्य करैत सेवा-नेवृत भेलाह।

विद्यानाथ झा 'विदित' गत शताब्दीक सातम दशकमे साहित्य-रचना प्रारम्भ कयलनि। तकरा बाद हिनक लेखनी कहियो विराम नहि लेलक। लगातार लिखि रहल छथि। वास्तविकता ई अछि जे आयुमे वृद्धिक संग-संग हिनक लेखनक गति सेहो बढ़ल अछि। ई कविता, कथा, उपन्यास, निबन्ध, समीक्षा-सभ विधामे लिखैत छथि। लगभग बीसटा हिनक प्रकाशित पोथी छनि। 'मैथिली ओ संताली' हिनक महत्वपूर्ण अवदान अछि। एकर अतिरिक्त मानव कल्प, महोदय मन्वन्तर, बहुरिया, प्रालब्ध, विप्लव बेसरा, कोसिल्या, कर्पूरिया, ओ 'मिथिला मिहिर'मे धारावाहिक उपन्यास, फूटल चूड़ी-कथा संग्रह प्रकाशित सिंगरहार, सुरासुन्दरी, (काव्य) आदि पोथी प्रकाशित अछि। सम्प्रति उपन्यास -लेखन पर हिनक बेसी जोर छनि। संगहि मैथिली भाषा आ साहित्यक विकास लेल सेहो दत्तचित्त छथि। साहित्य अकादेमी, दिल्लीमे मैथिलीक प्रतिनिधि छथि।

काव्य सन्दर्भ - प्रस्तुत कविता मैथिली अकादमी, पटनासँ प्रकाशित कविता संग्रहसँ लेल गेल अछि। कविता देशक, मातृभूमिक, वन्दना थिक। एहि क्रममे मिथिलाक सांस्कृतिक इतिहासकेँ प्रेरणाक रूपमे राखल गेल अछि। मिथिलाक अतीत प्रेरणादायक अछि। वेदक मंत्र, स्मृति-पुराण, सीता-सन बेटी, भारती-सन कुलवधू, विद्यापति सदृश कवि, रामायण-सन ग्रन्थक रचनाकार कवि चन्द्र -सब प्रेरक बनि कऽ मार्गदर्शन लेल उपलब्ध छथि। ई सभ त्याग, बलिदान आ कर्मठताक संदेश दैत छथि। ई कविता जन्मभूमिक गुण-गौरवक स्मरण द्वारा आजुक लोककेँ प्रेरित करबाक प्रयास थिक।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

वन्दना

हित-हित वलिदान होयबा सँ समुज्ज्वल कर्म की ?
मातृभूमिक वन्दना सँ श्रेष्ठ पावन धर्म की ?

जाहि धरती पर जनक केर
दीप्त ज्ञान - विवेक ।
याज्ञवल्क्यक अमित - तेजक
भेल हो अभिषेक ।।
जाहि ठामक माटि श्रुतिमय
पानि स्मृतिमय रहल हो।
वायु केर सिहकी ऋचामय
घर-आँगनमे बहल हो ।।

ताहि भूमिक अर्चनासँ श्रेष्ठ दोसर धर्म की ?
अछि अयाचिक दूभि आसन सँ विमल मृगचर्म की ?

खेत मे उपजलि जतय श्री
स्वयं, धी बनि, जानकी।
जाहि ठामक कुल बधू बनि
पूजिता छथि भारती।।
जाहि भूमिक कविक अपरूप
कंठमे कोकिल बसल हो।
जाहि भूमिक शैव कवि सँ
गेल रामायण रचल हो।।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

ताहि भूमिक चित्रसँ बढ़ि आर दोसर यंत्र की ?

साधनामय भूमिसँ बढ़ि साधना केर मंत्र की ?

जाहि भूमिक भैरबी केर कर सुशोभित खड्ग हो।
शिव जकर चाकर स्वयं ओ भूमि सरिपहुँ स्वर्ग हो।।
मोक्षमय स्मृति अतीतक बाल बोधक ठोरपर हो।
ताहि भूमिक चरण भावी कियैन प्रगतिक छोरपर हो ।।

मातृभूमिक माँटि सँ बढ़ि श्रेष्ठ आर दुलार की ?

जन्मभूमि निमित्त शीशक दान सँ लघु आर की ?

शब्दार्थ :

समुज्ज्वल	-	चकमक
पावन	-	पवित्र
दीप्त	-	चमकै/ प्रभायुद्र
अमित	-	असीम
अभिषेक	-	मंत्र पढ़ल जल छीटब
श्रुति	-	वेद
स्मृति	-	विधि-विधानक पोथी, जेना-मनुस्मृति
सिहकी	-	वायुक वेग
ऋचामय	-	ऋग्वेदक मन्त्रसँ युक्त
अर्चना	-	पूजा
विमल	-	स्वच्छ , निर्दोष
मृगचर्म	-	हरिणक-छाल
भैरवी	-	भयानक रूपवाली देवी
खड्ग	-	तरूआरि
धी	-	बेटी

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

प्रश्न ओ अभ्यास

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न -

(i) 'वन्दना' कविताक रचयिता छथि -

(क) विद्यानाथ झा 'विदित' (ख) बुद्धिनाथ मिश्र

(ग) विद्यापति (घ) उदय चन्द्र झा 'विनोद'

(ii) विद्यानाथ झा 'विदित'क रचना छनि

(क) समय साल (ख) वन्दना

(ग) बच्चा (घ) हाथ

2. रिक्त स्थानक पूर्ति करू :-

(i) ताहि भूमिक अर्चनासँ श्रेष्ठ ..... धर्म की ?

(ii) मातृभूमिक वन्दनासँ श्रेष्ठ पावन ..... की ?

(iii) मातृभूमिक माँटि सँ बढ़ि श्रेष्ठ ..... दुलार की ?

3. लघूत्तरीय प्रश्न-

(i) वन्दना किनकर कविता अछि ?

(i) पठित पाठमे वन्दनीय के आ की सभ अछि ?

(iii) पठित पाठमे कविक कहबाक की उद्देश्य अछि ?

(iv) मातृभूमिक वन्दना श्रेष्ठ धर्म थिक किएक ?

(v) पठित पाठमे वर्णित देवताक नाम लिखू।

4. दीर्घोत्तरीय प्रश्न-

(i) 'वन्दना' शीर्षक कविताक वर्णन करू।

(ii) पठित पाठक सारांश लिखू।

(iii) जनक-याज्ञवल्क्यक चर्चा कोन रूपेँ कयल गेल अछि।

(iv) प्रस्तुत कवितामे वर्णित महान व्यक्ति सभक थोड़मे परिचय दिअ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

5. सप्रसंग व्याख्या करू -

(i) जाहि धरती पर जनक केर
दीप्त ज्ञान-विवेक
याज्ञवल्क्यक अमित तेजक
भेल हो अभिषेक ।।

(ii) मातृभूमि माँटि सँ बढ़ि श्रेष्ठ आर दुलार की ?
जन्मभूमि निमित्त शीशक दान सँ लघु आर की ?

गतिविधि-

1. मातृभूमिक वन्दना आनो कवि कयलनि अछि - स्मरण करू आ लिखू ।
2. एहि कविताकेँ सस्वर पाठ करू ।
3. एहि कवितासँ की शिक्षा भेटैत अछि ?
4. पाँच संज्ञा शब्द चुनि वाक्यमे प्रयोग करू।

निर्देश-

1. शिक्षक जनक, याज्ञवल्क्यक, अयाची, जानकी, भारती आदिक सम्बन्धमे छात्रकेँ परिचय कराबथि।
2. मातृभूमिक वन्दना श्रेष्ठ वन्दना थिक, शिक्षक छात्रकेँ बुझाबथि।
3. शिक्षक मातृभूमिक महत्ताक निर्देश करबैत छात्रकेँ बुझयबाक प्रयास करथि जे मातृभूमिक लेल जँ गर्दनि देवय पड़य तँ ओ कम अछि। उदाहरण दऽ समझाबथि।

---

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

उदयचन्द्र झा 'विनोद'

उदयचन्द्र झा 'विनोद' मैथिलीक साहित्यकारमे 'विनोदजी' क नामसँ प्रसिद्ध छथि। जेहने स्वच्छ स्वभाव, तेहने साफ लेखन। हिनक जन्म 5 अप्रैल, 1943 कऽ भेलनि। जन्मस्थान छनि दुलहा गाम (मधुबनी), मुदा वासी छथि रहिका गामक। भारत सरकारक ए. जी. औफिसमे उच्च पदस्थ अधिकारीक रूपमे सेवानिवृत भेलाक बाद मिथिला विश्वविद्यालयमे वित्त पदाधिकारीक रूपमे कार्यरत छथि।

'विनोद' कथा, नाटक, निबन्ध आदि अनेक विधामे लेखन कयने छथि, किन्तु कविक रूपमे हिनक ख्याति सर्वाधिक अछि। मूलत: आ मुख्यत: ई कविए छथि। हिनक दसटा काव्य-संकलन प्रकाशित अछि। आजुक स्थितिसँ जुड़ल हिनक सहज आ सरल कविता लोकक लेल अत्यन्त आकर्षक ओ मनमोहक होइत अछि। इएह कारण अछि जे हिनक कविता जतबे पढ़ल जाइत अछि ततबे सुनलो जाइत अछि। कवि सम्मेलनोमे ई खूब जमैत छथि। माटिपानि, लोकवेद, घर-बाहर आदि पत्रिकाक यशस्वी सम्पादकक रूपमे हिनक प्रसिद्धि छनि। हिनका यात्री चेतना पुरस्कार तथा मिथिला विभूति सम्मान भेटल छनि।

काव्य सन्दर्भ -'कहलनि पत्नी' नामक कविता-संग्रहसँ संकलित प्रस्तुत कवितामे बच्चाक महत्त्व देखाओल गेल अछि। बच्चा ओ आधार अछि जे व्यक्तिगत रूपमे माय-बापेकेँ नहि, सामूहिक रूपमे सम्पूर्ण सृष्टिकेँ विकसित होयबाक, फुलयबाक आ फड़बाक अवसर दैत अछि। बच्चा नहि रहत तऽ मनुक्ख नहि रहत, संसार नहि रहत। बच्चा संघर्षशील बनबैत अछि। जीबाक लेल स्नेह-रागक भावना भरैत अछि। तेँ बच्चाक महत्त्व बुझबाक चाही। ओकर विकास लेल सतत सचेष्ट रहक चाही। बच्चाक स्वास्थ्य आ पढ़ाइ-लिखाइ पर ध्यान देबाक चाही। कवि एहि कवितामे उपदेश नहि, सन्देश दैत छथि जे अत्यन्त हृदयग्राही अछि। जीवन आ जगतक स्थायित्व तथा विकासक मूलमंत्र बच्चा अछि।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

बच्चा

जीवाक लेल, जगत लेल
आवश्यक होइछ बच्चा
वर्त्तमान होइछ- भविष्य होइछ
जीवनक अर्थ होइछ बच्चा
ओ बकलेल छथि जे कहैत छथि
बच्चा कें व्यर्थ।

संघर्षरत जीवनक नारा होइछ
बुढ़ापाक सहारा होइछ
जीवन-धाराक कूल-प्रकृतिक वनफूल
सृष्टिक अनुकूल होइछ बच्चा
ओ ढहलेल छथि जे एकरा
बूझथि जानक जपाल
ओ कंगाल छथि।

बच्चा जीवनक मिठासे नहि
कोतवाल हाथक गड़ाँसो होइछ
सम्बन्ध - सरोकार
तमाम कारोबारक प्रेरणा होइछ बच्चा
जीवनाकाशक ध्रुवतारा
दिशा-दशाक ज्ञान दैछ
जीवन कें मान दैछ बच्चा।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

बच्चा कैं ओहिना नहि कहल
गेल छल भगवान
ओहिना नहि प्रिय भेल बाललीला
बच्चा संधान होइछ
परम्पराक कड़िए टा नहि
सन्तान होइछ बच्चा
बच्चा नहि तऽ किछु नहि
कतहु नहि
ककरो नहि।

शब्दार्थ

बकलेल : बुड़िबक , अज्ञानी
ढहलेल : बकलेल, अज्ञानी
संधान : अन्वेषण खोज

प्रश्न ओ अभ्यास

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न -

(i) 'बच्चा' केर रचयिता छथि
(क) सुकान्त सोम (ख) उदयचन्द्र झा 'विनोद'
(ग) बुद्धिनाथ मिश्र

(i) उदयचन्द्र झा 'विनोद'क रचना छनि
(क) रौदी अछि (ख) बच्चा
(ग) हाथ (घ) वन्दना

2. रिक्त स्थानक पूर्ति करू :
(i) जीवनक अर्थ होइछ ..... ।
(ii) ..... सहारा होइछ ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

(iii) दिशा-दशाक ..... दैछ ।

(iv) बच्चा नहि तऽ ..... नहि ।

3. लघूत्तरीय प्रश्न-

(i) बच्चा ककरा कहल जाइछ ?

(ii) बच्चाक की अर्थ अछि ?

(iii) बच्चा बुढ़ापाक सहारा कोना होइछ ?

(iv) बच्चाकेँ जीवनक ध्रुवतारा कहल जाइछ किनका ?

(v) बाललीला किएक प्रिय भेल।

4. दीर्घोत्तरीय प्रश्न-

(i) बच्चाक महत्ता पर प्रकाश दिअ।

(ii) पठित पाठक सारांश लिखू।

(iii) 'बच्चा' शीर्षक कविताक भाव लिखू।

(iv) पठित कवितामे कवि की कहय चाहैत छथि ?

(v) बच्चा परम्पराक कड़ी थिक - विवेचना करू ।

5. सप्रसंग व्याख्या करू :

(i) जीवाक लेल, जगत लेल
आवश्यक होइछ बच्चा
वर्त्तमान होइछ- भविष्य होइछ
जीवनक अर्थ होइछ बच्चा

(ii) बच्चा केँ ओहिना नहि कहल
गेल छल भगवान
ओहिना नहि प्रिय भेल बाललीला
बच्चा संधान होइछ

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

गतिविधि -

1. 'बच्चा' पर कविता कोनो आओर कवि लिखने छथि ? ताकू।
2. बच्चा देश व समाजक भविष्य होइछ। छात्र लोकनि पक्ष व विपक्षमे अपन-अपन तर्क देथि ।
3. वीर बालकक कथा छात्र वर्गमे सुनाबथि।
4. भगवानक बाललीला पर आधारित लघु एकांकीक मंचन करू।
5. बच्चाक सामान्य दशाक वर्णन करू।

निर्देश -

1. शिक्षक छात्रकेँ वीर बालकक कथा सुनाबथि ।
2. वीर बालक पर आधारित कोनो कविताकेँ शिक्षक सस्वर पाठ कऽ सुनाबथि।
3. बालक देशक भविष्य होइछ-विस्तारपूर्वक शिक्षक छात्रकेँ अवगत कराबथि।
4. कृष्णक बाललीलाक कथाक चर्चा छात्रक बीच करथि।
5. एकलव्य, अभिमन्यु आदिक कथासँ छात्रकेँ परिचित कराबथि।

---

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

बुद्धिनाथ मिश्र

बुद्धिनाथ मिश्र मैथिलीक नवगीतकार छथि। मैथिलीमे गीत रचना बड़ पुरान अछि। मुदा नवगीत हाल-सालक काव्य-विधा थिक। जीवन आ जगतकेँ आधुनिक परिप्रेक्ष्यमे देखब आ राखब एकर मुख्य विशेषता अछि। विषये नहि, शिल्प आ भाषा सेहो नवीन अछि। बुद्धिनाथ मिश्र मैथिलीक नवगीतकारमे अग्रगण्य छथि। हिनक जन्म मई, 1949मे भेलनि। समस्तीपुर जिलाक देवधा गाम हिनक जन्म स्थान छनि। हिनक प्रारंभिक शिक्षा वाराणसीमे संस्कृत शिक्षा- पद्धतिसँ भेलनि, मुदा ई. एम. ए. कयलनि अंग्रेजी आ हिन्दीमे। 'यर्थाथवाद और हिन्दी नवगीत' पर हिनका पीएच.डी.क उपाधि भेटलनि। लगभग गत चालीस वर्षसँ ई मैथिली आ हिन्दीमे निरन्तर लिखि रहलाह अछि। हिन्दीमे अनेक पोथी प्रकाशित छनि, मुदा मैथिलीमे प्रकाशनाधीने छनि। मैथिली हिन्दी साहित्यकारक रूपमे विश्वक अनेक देशक भ्रमण कयने छथि। सम्प्रति ओएनजीसीक मुख्यालयमे मुख्य प्रबंधक (राजभाषा) पद पर कार्यरत छथि।

काव्य सन्दर्भ 'भाषा' - पत्रिकासँ संकलित 'रौदी अछि' मूलत: चेतना-गीत अछि। एकर उद्देश्य छैक जनतामे जागरण आनब, ओकरा सक्रिय करब। मिथिलामे बाढ़ि अबैत अछि, रौदी होइत अछि, नाना प्रकारक विपत्ति पड़ैत अछि, मुदा एहिठामक लोक ओकरा लिखलाहा मानि कऽ बैसल रहैत अछि। एतबे नहि, अपन अतीत के दोहाइ दैत रहब, हमरा सभक आदति भऽ गेल अछि। गीतकार एही स्वभाव पर प्रहार करैत क्रियाशील होयबाक बात कहैत छथि। कोढ़ि नहि बनी, दुराचारक विरोध करी -आइ मिथिलामे कि सौंसे देशमे एकरे आवश्यकता अछि।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

रौदी अछि

रौदी अछि, दाही अछि
हमरा ले' धैन सन।
गामक तबाही अछि
हमरा ले' धैन सन।।
हम महान छी, चटइत
तरबा इतिहास अछि
विपदेसँ गढ़ल हमर
व्यक्तिगत विकास अछि
पुस्त-पुस्तसँ सूर्यक रथ जोतल लोकपर
पड़इत अछाँही अछि
हमरा ले' धैन सन।
हम देशक कर्णधार
हमरहिसँ देस अछि
भासनमे हम, रनमे
राजा सलहेस अछि
सरनागत- पालक हम, तेँ चारू सीमापर
ई आवाजाही अछि
हमरा ले' धैन सन।
अहाँ धरापुत्र, धरापर
अहींक घाम खसय

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

शीत-तापहीन हमर
परिवारक राज रहय
न्याय वैह जे हमरा प्रिय, हमरे हितमे हो
सत्यक गवाही अछि
हमरा ले' धैन सन।

शब्दार्थ

धैन सन	:	निफिक्र, बेपरबाह
विपदा	:	विपत्ति, संकट
सरनागत	:	शरणमे आयल
पालक	:	पालन करयबाला
पुस्त	:	कुल, वंश
अछाही	:	अछाह, छाया

प्रश्न ओ अभ्यास

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न -

(i) बुद्धिनाथ मिश्रक रचना छनि

(क) वन्दना (ख) रौदी अछि

(ग) शिवगीत (घ) हाथ

(ii) 'रौदी अछि' शीर्षक कविताक रचयिता छथि

(क) बुद्धिनाथ मिश्र (ख) सुकान्त सोम

(ग) उदयचन्द्र झा 'विनोद' (घ) विद्यानाथ झा 'विदित'

2. रिक्त स्थानक पूर्ति करू :

(i) हमरा ले' ..... सन

(ii) हम देसक .....

(iii) न्याय वैह जे हमरा ..... , हमरे हित हो।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

3. लघूत्तरीय प्रश्न-

(i) रौदीक रचनाकार के छथि ?

(ii) 'धैन-सन' शब्दक अर्थ लिखू।

(iii) पठित पाठमे केहन न्यायक चर्चा कयल गेल अछि।

(iv) 'रौदी-दाही' सँ कविक की तात्पर्य अछि ।

(v) हम महान छी कोन अर्थमे कहल गेल अछि।

4. दीर्घोत्तरीय प्रश्न-

(i) 'रौदी-अछि' कविताक सारांश लिखू।

(ii) पठित पाठसँ की प्रेरणा भेटैत अछि ?

(iii) 'रौदी-अछि' कवितामे कवि आमलोककेँ कर्त्तव्य-बोध करबैत छथि-कोना ?

(iv) रौदी आ दाहीसँ गाम तबाह अछि एहि पर निबन्ध लिखू।

5. निम्न पाँती सभक सप्रसंग व्याख्या करू :

(i) रौदी अछि, दाही अछि
हमरा ले' धैन सन
गामक तबाही अछि
हमरा ले' धैन सन

(ii) न्याय वैह जे हमरा प्रिय, हमरे हितमे हो
सत्यक गवाही अछि
हमरा ले' धैन सन।

गतिविधि -

1. 'रौदी आ दाही' सँ सम्बन्धित आओर कोनो कविता लिखू।

2. निम्नलिखित पाँती सभक अर्थ स्पष्ट करू:
सरनागत- पालक हम, तेँ चारू सीमापर
ई आवाजाही अछि
हमरा ले' धैन सन

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

3. सूर्यक कोनो दूटा पर्यायवाची शब्द लिखू।
4. एहि कविताकेँ कंठस्थ करैत सस्वर पाठ करू।

निर्देश-

1. शिक्षकसँ अपेक्षा जे ओ छात्रकेँ रौदी आ दाहीक विशेषार्थसँ परिचित करांबथि।
2. लोकक कथनी आ करनीक सम्बन्धमे व्यक्त भेल विचारसँ छात्रकेँ अवगत कराबथि।
3. एहि व्यंग्य कविताक प्रेरक भावकेँ स्पष्ट करैत छात्रक बीच विचार विमर्श कार्यक्रम कयल जाय।

---

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

सुकान्त सोम

मैथिली साहित्यक प्रगतिशील रचनाकारमे सुकान्त सोम अग्रगण्य छथि। हिनक जन्म दरभंगा जिलाक तरौनी गाममे 1950 ई. मे भेलनि। साहित्य लेखन आ पत्रकारिता दिस हिनक झुकाव छात्रावस्थेसँ छनि। पत्रकारक रूपमे ई देशक विभिन्न समाचार-पत्रक सम्पादन-कार्यसँ सम्बद्ध रहलाह अछि। हिन्दी समाचार-पत्र 'हिन्दुस्तान' क मुजफ्फरपुर संस्करणक लगभग दस वर्षसँ सम्पादक छथि।

सुकान्त सोमकेँ जन सामान्य शक्ति-सामर्थ्य पर अटूट विश्वास छनि। ओकर हेम क्षेमक अनवरत चिन्ता छनि। यैह विश्वास आ चिन्ता हिनका रचनाकार रूपमे सक्रिय करैत अछि। कविता हो कि कथा, निबन्ध हो कि समीक्षा - दीन-हीन किसान-मजदूरक आँखिसँ स्थिति आ समस्याकेँ देखब सुकान्त सोमक विशेषता थिक। ई लिखने त बहुत छथि, मुदा पुस्तक रूपमे प्रकाशित एकेटा कविता-संग्रह छनि- 'निज सम्वाददाता द्वारा'। 'भोरक प्रतीक्षा मे' सेहो हिनक किछु कविता संकलित अछि।

काव्य सन्दर्भ-निज सम्वाददाता द्वारासँ संकलित 'हाथ' मेहनतिया मजदूरक कविता थिक। ओकर ताकतिक कविता थिक। एहि कवितामे श्रमिक आ श्रम -शक्तिक अनेक रूप अछि। माटि कोड़ि अन्न उपजा कऽ जीवनाधार दैत किसानसँ सारिलकेँ दू फाँक करैत मजदूर धरिक उदाहरण द्वारा कवि एहि वर्गक लोकक उपयोगिता ओ अनिवार्यताकेँ देखार कयलनि अछि।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

हाथ

यैह हाथ तऽ काज करैत अछि
यैह हाथ माटि कोड़ि फसिलक विकास करैत अछि
यैह हाथ जनैत अछि
कतेक उर्वर होइत छै माटि
घाम आ श्रमक सम्बन्ध
यैह हाथ काज करैत अछि ।

यैह हाथ काज करैत अछि
यैह हाथ जनैत अछि की अन्तर छै ठाम-कुठामक पानिमे
समुद्रक नोनछराइन पानि आ
गंगाक शीतल पवित्र जल
खेतक फसिल मे कते लाभप्रद होइछ
यैह हाथ जनैत अछि।

यैह हाथ काज करैत अछि
यैह हाथ गाछ कटैत सारिल सँ टकराइत अछि
यैह हाथ जनैत अछि
पाँखुरक ताकति आ कुरहड़िक चोट
सारिलकेँ कतेक ठामसँ तोड़ैत छै
यैह हाथ कुरहड़ि आ हाथक सम्बन्ध जनैत अछि
यैह हाथ काज करैत अछि।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

शब्दार्थ

उर्वर	:	उपजाउ
नोनछराइन	:	कनेक-कनेक नोन ओ क्षारक स्वादवाला
सारिल	:	सीसो आदि काठमे अधिक घनत्व बला ललौन अंश जे बीचमे रहैत अछि, सार भाग
पाँखुर	:	कान्ह आ बाँहिक मिलन स्थान
कुरहड़ि	:	लोहसँ बनल औजार जाहिसँ काठ काटल जाइत अछि।

प्रश्न ओ अभ्यास

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न -

(i) 'हाथ' कविताक रचयिता छथि।

(क) सुकान्त सोम (ख) विद्यानाथ झा 'विदित'

(ग) उदयचन्द्र झा 'विनोद' (घ) बुद्धिनाथ मिश्र

(i) सुकान्त सोमक रचना छनि -

(क) रौदी अछि (ख) हाथ

(ग) बच्चा (घ) वन्दना

2. रिक्त स्थानक पूर्ति करू :

(i) यैह ..... काज करैत अछि

(ii) यैह हाथ ..... अछि

(iii) सारिलकेँ ..... ठामसँ तोड़ैत छै

(iv) गंगाक ..... शीतल पवित्र जल

3. लघूत्तरीय प्रश्न -

(i) हाथ की करैत अछि ?

(ii) हाथसँ कयल गेल कोनो दू काजक नाम लिखू।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

(iii) घाम आ श्रमक सम्बन्ध कोना व्यक्त कयल गेल अछि।

(iv) कुरहड़ि ककरा कहल जाइत अछि ?

(v) सारिलकेँ काठसँ कोना फराक कयल जाइत अछि ?

4. दीर्घोत्तरीय प्रश्न-

(i) 'हाथ' कविताक सारांश लिखू।

(ii) पठित कवितामे कवि श्रम आ श्रमिकक महत्त्व पर विचार कयलनि अछि, कोना आ किएक?

(iii) 'हाथ' कविताक वर्णन करू।

(iv) हाथक महत्ता पर प्रकाश दिअ।

(v) निम्न शब्दक अर्थ लिखू : - घाम, ठाम-कुठाम, सारिल, गाछ।

5. निम्न पाँती सभक सप्रसंग व्याख्या करू :

(i) यैह हाथ तऽ काज करैत अछि

यैह हाथ माटि कोड़ि फसिलक विकास करैत अछि

यैह हाथ जनैत अछि

कतेक उर्वर होइत छै माटि

(ii) यैह हाथ काज करैत अछि

यैह हाथ गाछ कटैत सारिल सँ टकराइत अछि

यैह हाथ जनैत अछि

पाँखुरक ताकति आ कुरहड़िक चोट

गतिविधि -

1. 'हाथ' कविताकेँ सुस्पष्ट स्वरमे शिक्षककेँ सुनाउ।

2. मनुक्ख जन्म लैत अछि मात्र खयबाक लेल नहि, काज करबाक लेल सेहो- एहि पर एकटा निबन्ध लिखू।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

3. हाथसँ कोन-कोन काजक एहि कवितामे उल्लेख कयल गेल अछि- छात्र आपसमे चर्चा करथि।
4. पठित पाठसँ पाँचटा संज्ञा शब्द चुनि विशेषण बनाउ।
5. पठित पाठमे आयल पाँच तद्भव शब्दक सूची बनाउ एवं वाक्यमे प्रयोग करू।

निर्देश -

1. शिक्षक छात्रकेँ शारीरिक श्रमक महत्वसँ परिचित कराबथि।
2. शिक्षक हाथक पर्यायवाची शब्दक उल्लेख देथि।
3. श्रमिक पर रचित आन कविक रचनासँ शिक्षक छात्रकेँ परिचित

---

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

तारानन्द वियोगी

बीसम शतीक नवम दशकक साहित्यकारमे तारानन्द वियोगी प्रमुख छथि। मई, 1966 मे हिनक जन्म भेलनि। हिनक जन्मभूमि छनि मिथिलाक जानल-मानल सिद्धपीठ - महिषी। संस्कृत साहित्यमे आचार्य, एम. ए. आ पीएच. डी. कयलाक बाद किछु दिन शिक्षक रहलाह। सम्प्रति बिहार प्रशासनिक सेवाक अधिकारी छथि।

तारानन्द वियोगी धुरन्धर लेखक छथि। लिखबो कम नहि कयलनि अछि आ जे लिखलनि अछि से चर्चा एवं विमर्शक विषय रहल अछि। गजल-कविता, कथा-लघुकथा, जीवनी-संस्मरण आ निबन्ध समीक्षा - सभ क्षेत्रमे हिनक कलम समान गतिसँ चलैत अछि। यात्री पर लिखित 'तुमि चिर सारथि' अखिल भारतीय स्तर पर चर्चित भेलनि अछि। अनुवादक रूपमे सेहो हिनक ख्याति छनि।

काव्य सन्दर्भ - प्रस्तुत कविता हिनक कविता -'संग्रह हस्तक्षेप' सँ लेल गेल अछि। एहिमे मायक प्रति हिनक उद्‌गार व्यक्त भेल अछि। कविता सम्बोधित अछि दीदीकेँ। दीदी पीसी आ जेठ बहिन दुनू केँ कहल जाइत अछि। मायक प्रति दीदीक भाव- सिक्त अभिव्यक्तिक सीमांकन करैत कवि प्रकारान्तरसँ अपन असीम श्रद्धा निवेदित करैत छथि। वस्तुतः ई मायक काव्य-तर्पण थिक।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

माँ

अपन मोनक एक-एक भाव कें
उतारि लिय' कागत पर,
अपन सोचक एक-एक सन्दर्भ केर
क' लिय' व्याख्या,
हृदयक गहन तल पर घटित होब' बला
एक-एक घटनाक
विवरण द' लिय' हमरा
मुदा दीदी!
अहाँ नहि लिखि पायब कहियो
माँ पर कविता।

शब्द चूकि जाइत अछि
संग नहि द' पबैत अछि छन्द
अलंकारक कोनहु टा छटा
छुबि नहि पबैछ माँक चरण
दीदी !
ओ वृत्त थिकीह माँ
जकर प्रदक्षिणा क' नहि पबैछ कोनो तन्त्र
ओ देवता थिकीह माँ
जनिकर निर्वचन लेल रचल नहि गेल कोनो मन्त्र।
अहाँक प्राण थिकीह माँ
अहाँक श्वासक सुरभि
अहाँक अस्तित्वक गरिमा थिकीह माँ ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

तैयार भने क' लिय' अहाँ
सर्वविध सम्बन्धक पोस्टमार्टम रिपोर्ट
एक-एक भाव - भूमि पर
रचैत चलि जाउ एक-एक अट्टालिका
मुदा हमर प्रिय दीदी !
अहाँ नहि लिखि सकब कहियो
माँ पर कविता।

शब्दार्थ

वृत्त : गोलाकार रेखा , इतिहास, आचरण
प्रदक्षिणा : देवताक प्रतिमाक चारुकात घूमव
निर्वचन : व्युत्पत्ति करब, अर्थ करब।
सुरभि : सुगन्धि

प्रश्न ओ अभ्यास

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न -

(i) 'माँ' केर रचयिता छथि ?
(क) तारानन्द वियोगी (ख) बुद्धिनाथ मिश्र
(ग) उदयचन्द्र झा 'विनोद' (घ) काशीकान्त मिश्र 'मधुप'

(ii) तारानन्द वियोगीक रचना अछि
(क) माँ (ख) हाथ
(ग) रौदी अछि (घ) वन्दना

2. रिक्त स्थानक पूर्ति करू :

(i) अहाँक प्राण थिकीह .....
(ii) छुबि नहि पबैछ ..... चरण
(iii) ओ देवता थिकीह .....
(iv) ओ वृत्त थिकीह .....

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

3. लघूत्तरीय प्रश्न -

(i) पठित पाठमे माँक प्रति केहन भाव व्यक्त भेल अछि ?

(ii) माँ पर कविता लिखब कठिन अछि, कोना ?

(iii) कोनहु अलंकारसँ माँ केँ अलंकृत नहि कयल सकैत अछि- एकर की तात्पर्य अछि ?

(iv) माँ केँ कोनो छन्दमे नहि समेटल जा सकैत अछि - एकर की अभिप्राय ?

4. दीर्घोत्तरीय प्रश्न -

(i) 'माँ' कवितामे कवि की कहय चाहैत छथि ?

(ii) 'माँ' कविता बेर-बेर पढ़ू।

(iii) पठित पाठक आधार मातृ-शक्ति पर विमर्श करू।

(iv) 'माँ' पर एकटा निबन्ध लिखू।

(v) 'माँ' पर कविता लिखब कठिन अछि - स्पष्ट करू।

5. निम्न पाँतीक सप्रसंग व्याख्या करू :

(i) शब्द चूकि जाइत अछि
संग नहि द' पबैत अछि छन्द
अलंकारक कोनहु टा छटा
छुबि नहि पबैछ माँक चरण

(ii) अहाँक प्राण थिकीह माँ
अहाँक श्वासक सुरभि
अहाँक अस्तित्वक गरिमा थिकीह माँ ।

गतिविधि -

1. 'माँ' शीर्षक पर कोनो आन कविता लिखू।
2. माँ क महत्ता पर आपसमे विचार करू।
3. ''जननी-जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी'' ..... एहिपर निबन्ध लिखू।

निर्देश -

1. शिक्षक छात्रकेँ माँ पर कोनो कथा सुनाबथि।
2. कोनो परिवारमे माँक भूमिकासँ शिक्षक छात्रकेँ जनतब कराबथि।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

वाग्विलास-खण्ड

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

बच्चा

प्रेमचन्द

अनुवादः आशुतोष झा

लोक गंगूकेँ ब्राह्मण कहैत छैक। ओकरा अपना सेहो सैह बुझाइत छैक। हमर आन सभ टा खबास हमर समक्ष झुकैत अछि। मुदा गंगू हमरा ओना कहियो अभिवादन नहि करैत अछि। संभवतः ओकरा होइत छैक जे हमही ओकरा प्रणाम करियैक। ओ कखनो कोनो ऐंठ थारी-बासन नहि छुबैत अछि। हमरा अहू बातक साहस नहि अछि जे गर्मीक समयमे ओकरा पंखा हौंक' लय कहियैक। कखनो काल क' जखन कियो आन ल'ग मे नहि रहैत छैक आ हम पसेनासँ तर रहैत छी ओ पंखा उठा लैत अछि। मुदा ओकर रंगति तेहन लगैत रहैत छैक जेना ओ हमर बड्ड पैघ उपकार क' रहल हो। ओ पिनकाह सेहो अछि आ कनियो घुड़की नहि सहि सकैत अछि। ओकरा संगी-साथी नहियेँक बरोबरि छैक। सईस अथवा कोनो नोकर संग बैसब ओकरा अपन शानक विरुद्ध बुझाइत छैक। हम ओकरा कहियो ककरो संग मैत्रीपूर्ण व्यवहार करैत नहि देखने छियैक। आ ने ओ कहियो मेला-तमासा देख' लय जाइत अछि।

ओ पूजा कहियो नहि करैत अछि आ ने कहियो नदीमे नहाइ लय जाइत अछि। ओ पूर्णतः निरक्षर अछि। तैयो ओ चाहैत अछि जे कोनो ब्राह्मण के भेट' बला सम्मान ओकरो भेटै। आ से कियेक नहि हो ? जँ आर लोक सभ अपन पुरखाक द्वारा छोड़ल धनक आधार पर इज्जति पाब' चाहैत अछि तँ गंगू सेहो अपन वंशक आधार पर सम्मान अवश्ये प्राप्त कर' - चाहत।

हम अपन खबास सभसँ बिनु आवश्यकताके गप्प नै करैत छी। ओकरा सभकेँ कठोर निर्देश छैक जे ओ सभ हमर एकान्ततामे व्यवधान नहि करय यावत् तक कि ओकरा सभकेँ हमरा लग पठाओल नहि गेल हो। छोट-मोट काज सभ जेना एक गिलास पानि ल' लेब, जुत्ता पहिरब अथवा लेम्प जरा लेब इत्यादिक लेल कोनो खबास केँ बजाब' सँ बेसी हमरा अपने क' लेब पसिन्न अछि। ओ हमरा स्वतंत्रता आ आत्मविश्वासक अनुभूति दिय' बैत अछि। नोकर सभ हमर आदतिसँ परिचित भ' गेल अछि आ ओ सभ बिरले हमरा पेरसान करैत अछि। यदि

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

ओ सभ कखनो बिनु बजओने हमरा लग अबैत अछि तँ ओ दरमाहाक अग्रिम भुगतानक हेतु निवेदन करबा लय अथवा आन नोकर सभक विरुद्ध नालिस करबा लय। मुदा एहि दुनू क्रिया के हम निंदनीय बुझैत छी। जखन ओकरा सभ के हम नियमित रूपसँ भुगतान कइये दैत छियैक आ पर्याप्त सेहो तखन हमरा एकर कोनो कारण नहि बुझाइत अछि जे ओ सभ अपन दरमाहा के पन्द्रहे दिनमे समाप्त क' दियए। आ चुगिलखोरी के हम मनुष्यक बहुत पैघ कमजोरी अथवा चाटुकारिताक एकटा प्रकार बुझैत छी। ई दुनू अधम कार्य थिक।

एक दिन भिनसरमे गंगू बिनु बजओने हमरा लग आयल। हम खौंझा गेलहुँ। क्षुब्ध होइत ओकरा पुछलहुँ जे ओ कियेक आयल अछि। गंगूक चेहरासँ लगैत छल जे ओ किछु कह' चाहैत छल मुदा पूर्ण प्रयासक बादो ओकर ठोर पर शब्द नहि आबि रहल छलैक। कने रुकि क' हम फेरसँ पुछलियैक, "की गप्प छैक ? तो बजैत कियेक ने छह ? तोरा ई बूझल छह जे हमरा भिनसरमे टहलबाक लेल जेबामे देरी भऽ रहल अछि!" कने रुकि-रुकि क' जवाब देलक, "कृपा क' कँ अहाँ जयबामे देरी जुनि करियौ। हम कखनहुँ बादमे आबि जायब।" ई तँ आओर खराब भेल, हम सोचलहुँ। तखन हम हड़बड़ीमे छलहुँ गंगू अपन कथा संक्षेपहिमे समाप्त क' दितय। आ जखन ओ ई बुझि के आओत जे हम बेसी फुरसतिमे छी तँ हमर कैक घंटाक समय ओ नष्ट क' सकैत अछि। ओ तखनहि टा हमरा व्यस्त बुझय जखन हम पढ़ैत अथवा लिखैत रहैत छलहुँ। जखन हमरा ओ किछु सोचबाक मूडमे एसकर पाबय तँ ओकरा होइ जे हम व्यर्थक समय बिता रहल छी। ई अवश्यम्भावी छलैक जे एहने कोनो क्षणमे ओ हमरासँ आवि सटत, एहि गप्पसँ पूर्णत: अनभिज्ञ जे ओ समय हमरा लेल कतेक मूल्यवान छल।

तैं हम चाहैत छलहुँ जे ओकरासँ ओतहि आ तखने छुटकारा भेटि जाय। ओकरासँ हम कहलियैक, "जँ तोँ अग्रिम भुगतानक लेल आयल छह तँ निश्चिन्त रह' ओ तोरा नै भेटतह।"

"हम अग्रिम भुगतान नै चाहैत छी।" गंगू बाजल आ जोड़लक, " अग्रिम भुगतानक लेल हम अहाँकेँ कहियो नै कहने छी।"

"तखन तोरा जरूर ककरो विरुद्ध किछु नालिस करबाक हेतह! तोरा बुझल छह जे चुगलखोरीसँ हमरा कतेक घृणा अछि।"

"नै महाशय, हमरा ककरो विरुद्ध कोनो नालिस नै करबाक अछि।"

"तखन कोन वस्तुक लेल तोँ हमरा तंग कर' आयल छह ?" हम अगुताइत बजलहुँ। गंगू अपन रहस्य खोलबाक एक बेर आर प्रयास केलक। हम ओकर चेहरासँ ई बुझि सकैत

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

छलहुँ जे अपन गप्प कहबाक ओ शक्ति जुटा रहल छल। अंतमे ओ बाजि उठल, "श्रीमान हम काज छोड़' चाहैत छी। आब हम अहाँक सेवा नहि क' सकब।"

ई अपन प्रकारक पहिल आग्रह छलैक । मोनमे आहतक अनुभूति भेल। हम एकटा आदर्श मालिक मानल जाइत छलहुँ आ नोकर खबास सभ हमरा ओतय रहब अपन भाग्य बुझैत छल।

"तोँ किएक जाय चाहैत छह ?" हम पुछलियैक।

"मालिक अहाँ दयाक मूर्ति छी।" ओ कहलक, फेर बाज' लागल, "यावत् धरि कोनो विशेष कारण नहि होइ ताबत अहाँकेँ के छोड़' चाहत ? हम अपनाकेँ एहन परिस्थितिमे पबै छी जत' हमरा लग कोनो विकल्प नहि अछि। हम नै चाहैत छी जे हमरा चलैत लोक अहाँ पर आगुंर उठाबय।"

ई अत्यन्त कुतूहलक गप्प छल। हम भिनसरमे अपन टहलबा द' पूर्णत: बिसरि गेल छलहुँ । कुरसी पर बैसैत ओकरासँ हम कहलियैक, "तो एना बुझौअलिमे कियेक गप्प क' रहल छह ? साफ-साफ कह' ने जे तोहर मोनमे की छह ?" गंगू फेरसँ रुकि-रुकि क' बाज' लागल, "मालिक असलमे बात छैक जे.... ओ मौगी जेकरा हालहिमे विधवा-घरसँ निकालि देल गेल छैक..... ओ गोमती देवी .....।" आ बिनु अपन वाक्य पूरा केने ओ चुप्प भ' गेल।

अधीरतापूर्वक हम पुछलियैक, "तँ ओकरासँ तोहर नोकरीकेँ कोन सम्बन्ध छैक ?"

"मालिक ओकरासँ हम बियाह कर' चाहैत छी।" गंगू बाजल छल।

हम विस्मयसँ ओकरा दिस देखलहुँ। ई पुरानपंथी ब्राह्मण, जेकरा आधुनिक सभ्यता छूनौ नहि छलैक एहन स्त्रीसँ कोना विवाह करबाक निर्णय नेने छल जकरा कोनो स्वाभिमानी व्यक्ति अपन घरक लगो आब' देब पसिन्दनहि करत ? गोमती हमर सबहक शान्त मोहल्लाकेँ आन्दोलित कऽ देने छल। किछु वर्ष पहिने ओ विधवा-घरमे प्रवेश केलक। विधवा घरक पदाधिकारीगण दू बेर ओकर बियाह करओलथिन मुदा दुनू बेर ओ एक-दू सप्ताहक भीतर घुरिकेँ चल आयल। अंततोगत्वा विधवा-घर ओकरा निकालि बाहर करबाक निर्णय लेलक। आ आब मोहल्लहिमे एकटा कमरा भाड़ा पर ल' नेने छल आ प्रेमातुर छौंड़ा सभक लेल अत्यन्त आकर्षणक वस्तु भ' गेल छल।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

हमरा गंगू पर क्रोधो भेल आ ओकरासँ सहानुभूति सेहो। "ई बूड़ि के बियाह करबाक लेल कोनो आन मौंगी कियेक नहि भेटलैक ?" हमरा मोनमे भेल छल। हमरा विश्वास छल जे ओ मौगी एकरा लग किछु दिनसँ बेसी नहि टिकतैक। जँ गंगू आर्थिक रूपेँ सुदृढ़ रहितय तँ छः मासक लग-पास ओकरा संग ओ रहि जइतय मुदा हमरा विश्वास छल जे एखुनका परिस्थितिमे ई विवाह किछु दिनसँ बेसी नहि टिकतैक।

"ओकर पछिलुका जिन्दगी द' तोरा बुझल छह?" हम ओकरासँ पुछलियैक।

"मालिक ओ सभ झूठ बात छैक।" ओ पूर्ण दृढ़ताक संग बाजल छल, " बिनु कोनो कारणकेँ लोक सभ ओकरा बदनाम करैत छैक।"

"की व्यर्थक गप्प करैत छह।" हम कहलियैक, "एहि बातकेँ की तोँ अस्वीकार क' सकैत छह जे ओ तीन टा पतिकेँ छोड़ने अछि ?"

"ओ की करितस," गंगू शांतिपूर्वक जवाब देने छल, "जेँ ओ सभ ओकरा निकालि देलकै ?"

"केहन बूड़ि छह तोँ !" हम कहलियैक, "तोरा ई बुझाइत छह जे कियो व्यक्ति कोनो स्त्री सँ मात्र बियाह टा करबाक लेल आओत, विवाह पर हजारो टाका व्यय करत आ बिनु कारणें ओहि विवाहिता के अपना ओतय सँ निकालि देत ?"

गंगू कविजन्य उत्साह देखबैत कहलक, "जत' प्रेम नै छैक, अहाँ उमेद नै क' सकैत छियैक जे कोनो मउगी अहाँ संगे रहि जायत। कोनो स्त्रीक हृदयकेँ अहाँ मात्र खेनाइ आ रहबाक सुविधा द' कँ नहि जीति सकैत छियैक। जे कियो गोमतीदेवीसँ बियाह केलक से सभ बुझलकै जे ओ सभ ओकरासँ विवाह कऽ केँ एकटा विधवा पर कृपा क' रहल छैक। आ ओ सभ ई मानि नेने छल जे गोमती ओकरा सभटाक हेतु सभ किछु केने जायत। मुदा ककरो हृदय जीतबाक लेल सभसँ पहिने अपनाकेँ बिसार' पड़ैत छैक। आ तकर अतिरिक्त, मालिक, ओकरा कखनो-काल दौर पड़ैत छैक। ओ तखन किछु-किछु अण्ड-बण्ड बाज' लगैत अछि आ बेहोस भ' जाइत अछि। लोक सभ कहैत छैक जे ओ कोनो डाइनक प्रभावमे अछि।

"आ' तो ओहन स्त्रीसँ विवाह कर' चाहैत छह।" हम कहलियैक, "तोरा ई नहि बुझाइत छह जे तोँ विपत्तिकेँ निमन्त्रण द' रहल छहक ?"

शहीदक मुद्रामे गंगू बाजि उठल, "भगवान चाहलनि तँ ओकरा अपनएबाक उपरान्त हम अपनाकेँ कोनो योग्य बना सकब।"

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

"माने तोँ अंतिम फैसला ल' नेने छह ?'' हम पुछलियैक।

"हँ मालिक।'' ओकर जवाब छलैक।

"बेस ,'' हम कहलहुँ, "तखन हम तोहर नोकरी छोड़बाक प्रस्ताव स्वीकार करैत छियह।''

सामान्यत: हम पुरान रीति-रेवाज एवं निरर्थक परम्परा इत्यादिमे विश्वास नहि करैत छी! मुदा कोनो व्यक्ति जे एहन संदेहास्पद चरित्रक स्त्रीसँ विवाह करबा लय उद्यत अछि, तेहनकेँ अपन घर पर रखबामे हमरा खतरा बुझायल। ओ कैक प्रकारक समस्याक कारण भ' सकैत छल। हमरा जनैत ओहि स्त्रीसँ विवाह करबामे गंगू कोनो भुखायल मनुक्ख जकाँ व्यवहार क' रहल छल। ओ रोटीक टुकड़ा सुखायल आ कुस्वाद छल से तथ्य ओकरा लेल अर्थहीन छल। हमरा अलगे रहबामे बुद्धिमत्ता बुझायल।

पाँच मास गुजरि गेल। गंगू गोमतीसँ विवाह क' लेने छल। ओ ओही मोहल्लामे एक टा फूसक झोंपड़ीमे रह' लागल। ओ अपन गुजारा आब पैकारी क' के करैत छल। जखन कखनौ ओ हमरा रस्ता पर भेटाबय तँ हम रुकि क' ओकर कुशल क्षेम पुछैत छलहुँ। ओकर जिन्दगी हमरा लेल अत्यधिक रुचिक वस्तु भ' गेल छल। हम ई जानबाक लेल अगुतायल छलहुँ जे गंगूक दिवास्वप्न, दु:स्वप्नमे कहिया परिवर्तित होयत। मुदा हम ओकरा सदिखन प्रसन्न देखियैक। ओकर चेहरा पर रहि सकैत छैक। ओ प्रतिदिन लगभग एक टाका कमाइत छल। आश्रमक वस्तु सभ किनलाक बाद ओकरा लग लगभग दस आना बचि जाइत छलैक। आ ओहि दस आना पाइमे निश्चित रूपसँ कोनो अलौकिक शक्ति हेतैक जे ओकरा आत्मतुष्टि दैत छलैक।

एक दिन हम सुनलहुँ जे गोमती भागि गेल। नहि जानि कियेक मुदा हमरा अत्यंत आनन्द भेल छल। संभवत: गंगूक आत्मविश्वास आ सुख हमरा ओकरा प्रति ईर्ष्यालु बना देने छल। हम प्रसन्न छलहुँ जे अंतत: हमर कथन सही सिद्ध भेल। आब ओकरा बुझबामे एतैक जे, जे कियो ओकरा गोमतीसँ विवाह करबासँ रोकैत छलैक ओ सभ ओकर शुभ-चिन्तक छलैक। 'ओ केहन बूड़ि छल,' हम मोने-मोन सोचलहुँ, 'जे गोमतीसँ बियाह करब ओ अपन भाग्यक गप्प बुझलक। सैह टा नहि, ई बियाह करब ओकरा स्वर्गमे प्रवेश कर' जकाँ लागल छलैक।' हमरा ओकरासँ भेट करबाक बहुत उत्सुकता भेल छल।

ओहि दूपहरियामे जखन ओ भेटायल तँ ओ पूर्णत: टूटल लागि रहल छल। हमरा देखैत

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

ओ रूदन करऽ लागल आ कहलक, "बाबू, गोमती हमरा छोड़िकेँ चल गेल अछि।

हम उपरी सहानुभूति देखबैत बजलहुँ, "हम तँ तोरा शुरूहे मे कहने छलियह जे ओकरासँ दूरे रहियह मुदा तो नहि सुनलहक। तोहर कोनो समान तँ ओ नहि ल' गेल छह ?"

गंगू हृदय पर रखैत तेना बाजल जेना कि हम कोनो पापक गप्प कहि देने होइयैक, "से नै कहियौ, बाबू' कोनो टा वस्तु नै ल' गेल अछि। ओकर अपनो समान सभ ओहिना पड़ल छैक। हमरा नहि बुझ' मे अबैत अछि जे ओकरा हमरामे कोन कमी लगलैक जे ओ हमरा छोड़िकेँ जेबाक निर्णय केलक। हमरा विश्वास अछि हम ओकरा योग्य नहि छलियैक। ओ पढ़ल-लिखल छल आ हम पूर्णत: निरक्षर छी। आओर किछु दिन जँ हम ओकरा संग रहितियैक तँ ओ हमरा योग्य मनुक्ख बना दितय। ओ आन पुरुष सभक लेल जे हुअए, हमरा लेल तँ जरूरे भगवती छल। हमरासँ अवश्य कोनो गलती भ' गेल होयत जे गोमती हमरा छोड़बाक निर्णय लेलक।"

गंगूक गप्पसँ हमरा बड्ड निराशा भेल छल। हमरा विश्वास छल जे ओ हमरा गोमतीक विश्वासघात द' कहत आ तखन हमरा ओकरासँ सहानुभूति व्यक्त कर' पड़त। मुदा लगैत छल जे ओहि मूर्खक आँखि सभ एखनहु बन्द छलैक अथवा संभवत: ओकर ज्ञानक संवेद समाप्त भ' गेल छलैक।

हम कन परिहास करैत कहलियैक, "अर्थात् ओ कोनो वस्तु डेरा परसँ नै ल' गेल छह ?"

"नै एक्को पाइक वस्तु नहि।"

"आ ओ तोरा खूब मानैत छलह ?"

"बाबू, एहिसँ बेसी हम की कहि सकैत छी ? हम यावत् जीव ओकरा नहि बिसरि सकैत छी।"

"आ तैयो ओ तोरा छोड़बाक फैसला केलकह ?"

"तेकरे तँ हमरा आश्चर्य होइत अछि।"

"तोँ कहियो ई पुरान उक्ति सुनने छहक, 'चंचलता, तोहर नाम स्त्री छह!'?"

"ओह, बाबू से नहि कहियौ! ओकरा द' हम एक्को छन ओहेन बात नहि सोचि सकैत छी।"

"हँ मालिक, हमरा तावत तक चैन नै भेटत यावत हम ओकरा ताकि नहि लेबैक। हमरा

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

मात्र एतबा टा बुझबामे आबि जइतय जे ओकरा कत' ताकी! हमरा विश्वास अछि जे हमरा लग ओ घूमिके आबि जायत। हमरा ओकरा जाक' जरूर ताकबाक चाही। जँ जीवैत रहलहुँ त' घूमि क' आयब तँ अहाँसँ भेट करब

एहि घटनाक बाद हमरा नैनीताल जाय पड़ल। आ लगभग एक मासक बाद हम ओत' सँ घुरलहुँ। हम एखन कपड़ा सभ खोलनहि छलहुँ कि देखलियैक जे गंगू एकटा नवजात शिशुक संग ठाढ़ छल। ओ खुशीसँ गद्‌गद् छल। संभवत: नंद के सेहो भगवान कृष्णक जन्म पर एतेक खुशी नहि भेल होन्हि। ओकर चेहरा पर तेहने चमक छलैक जेहन कोनो भुखायल मनुक्खके भरि पेट खेनाइ भेटला पर होइत छैक। हम फेर हंसी करैत ओकरासँ पुछलियेक, "की तोरा गोमती देवी के कोनो खबरि भेटलह ? तोँ ओकरा ताक' लय जाय बला छलहक।"

प्रसन्नतासँ भरल गंगू बाजल छल, "अंतत: ओकरा हम ताकिये लेलियैक बाबूजी। ओ लखनऊक महिला अस्पतालमे भरती छल। ओ अपन एकटा सखीके कहि देने छलैक जे जँ हम बहुत घबड़ा जइयेक तँ हमरा ओकर पता-ठेकान ओ बता दियए। हम तहिना ई सुनलियैक हम तुरते लखनऊ गेलहुँ आ' ओकरा ल' अनलियेक। आ सौदामे हमरा ई बच्चा सेहो भेटल अछि।" ओ ओहि बच्चा के हमरा ततबे गर्व सँ देखओलक जतबा गर्वसँ कोनो एथलीट अपन तुरत जीतल पदक देखाओत।

ओकर निर्लज्जता पर हमरा आश्चर्य भेल। ओकर गोमतीसँ विवाहक छओ मास नहि भेल छलैक ओ ओतेक गर्व सँ ओहि बच्चा के देखा रहल छल। हम व्यंगपूर्वक कहलियैक, "ओह तोरा एकटा बेटा सेहो भ' गेलह। संभवत: तैं गोमती भागि गेल छलह। तोरा विश्वास छह जे ई तोरे बच्चा छियह ?"

"हमर कियेक बाबू, ई तँ भगवानक बच्चा थिक।"

"एकर जन्म लखनऊमे भेलैक। छैक ने ?"

"हँ बाबू! काल्हिये तँ एकर एक मास पुरल छैक।"

"तोहर बियाहक कैक मास भेल छह ?"

"ई सातम मास भेल।"

"अर्थात् ई बच्चा तोहर बियाहक छह मासक भीतरे भ' गेलह ?"

"जी," गंगू बिना उत्तेजित भेने बाजल छल।

"आ तैयो तोँ एकरा अपन बच्चा कहैत छहक?"

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

"हँ मालिक।"

"तों होसमे तँ छह?" हम पुछलियैक। हम निश्चित नहि छलहुँ जे हम जे गप्प ओकरा कह' चाहैत छलियैक से ओ ठीकेमे नहि बुझने छल आ कि ओ जानि के हमर गप्पक गलत अर्थ लगा रहल छल।

"ओकरा बड्ड कष्ट भेलैक," गंगू ओही सुरमे बजैत रहल, "बाबू , ओकरा लेल ई एक तरहक पुनर्जन्म छैक। पूरा तीन दिन आ तीन राति ओकरा दरद होइते रहलैक। ओह, ओ दरद असहनीय छलैक।"

ई हमरा लेल बीचमे टोकबाक बेर छल। हम कहलियैक, "अपन जीवनमे पहिले बेर बियाहक छओ मासक भीतर बच्चाक जन्म होइत सुनलियैक अछि।"

ई प्रश्न गंगू के आश्चर्यचकित क' देने छलैक। ओ कने नटखट मुस्कुराहटक संग कहलक, "तकर हमरा कहियो चिन्ता नै भेल अछि। संभवत: यैह कारण छल जे गोमती हमर घर छोड़ि देने छल। हम ओकरा कहलियैक जे जँ हमरासँ ओ प्रेम नहि करैत अछि तँ ओ आरामसँ जा सकैत अछि। हम ओकरा कहियो तंग नै करबैक। मुदा जँ ओकरा हमरासँ प्रेम होइ तँ ओहि बच्चाक चलैत हमरा सभ के अलग नै होयबाक चाही। हम एकरा अपन बच्चा जकाँ मानबैक। कियेक तँ आखिर जखन कोनो व्यक्ति बाओग कयल खेत लैत अछि तँ ओ ओकर उपज के मात्र ताहि द्वारय लेबासँ इन्कार नहि क' देतैक कियेक तँ कियो आओर ओकरा बाउग केने छल।"

हम जोरसँ हँसल छलहुँ। गंगूक भावनासँ हम अत्यंत द्रवित भेल छलहुँ । हम अपना के प्रचण्ड मूर्ख अनुभव केने छलहुँ। हम अपन हाथ बढ़ा देलियैक आ ओहि बच्चा के गंगूसँ ल' क' ओकरा चुम्मा लेलियैक। गंगू कहलक, "बाबू, अहाँ भद्रताक प्रतिमूर्त्ति छी। हम अधिक काल गोमतीसँ अहाँ द' गप्प करैत छी आ ओकरा कैक बेर एत' आबि क' अहाँसँ आशीर्वाद लेबा लय कहलियैक अछि। मुदा ओ ततेक ने लजकोटर अछि।"

हम आ भद्रताक प्रतिमूर्ति! हमर मध्यवर्गीय नैतिकता गंगूक साहस एवं सद्भावनाक समक्ष लज्जित भ' गेल छल।

"तोँ साधुताक प्रतिमूर्ति छह।" हम कहलियैक, "आ ई बच्चा तकरामे मनोहरता आनि देने छह। चल' हम तोरा संग चलैत छियह गोमतीसँ भेट करबाक लेल।" आ हम दूनू गोटय गंगूक झोंपड़ी पर गेल छलहुँ।

---

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

तेसर जीव

(उड़िया कथा)- मनोजदास

अनुवादक - उपेन्द्र दोषी

कालिह अपराह्नमे उत्तर दिस छोट सन पहाड़क शिखर पर पसरल रहए मेघक दूटा टुकड़ी : पर्वत - स्थवन -राजिक कबरीमे खोंसल दूटा फूल सन। किएक तँ सूर्यक किरणसँ ओ मेघखण्ड रंगीन भय गेल छल। हम ई लक्ष्य कयने रही कंकड़बला निर्जल पथपर साइकिल चलबैत काल। हम पश्चिमाभिमुख जाइत रही, तेँ बड़ी काल धरि हमर दृष्टि उत्तर दिगन्तक एहि सुकुमार दृश्यपर अँटकल रहल।

अनचोके हवाक एकटा झोंक आयल आ हमर पीठ पर एक थाप लगा चल गेल। हमरा अनुभव भेल जे मेघ भयानक रूप धऽ लेने अछि। मेघ उमड़ि-उमड़ि कऽ पूरा आकाशकेँ छापि लेने रहय। केवल पश्चिमी क्षितिज पर कने-कने लाली बाँचल रहैक। सेहो तुरंते झँपा गेलैक।

क्रमहि हवा सर्द होमय लगलैक । मेघ डराओन रूप धऽ धरतीपर आक्रमण हेतु तैयार छल। बरखा आबि गेल। हवाक एकटा प्रबल झोंक हमरा साइकिल सहित धरती पर पटकि देलक। हमर-पातर -छीतर कपड़ा भीजि कऽ सार्जेण्टक कपड़ा सन भारी भऽ गेल रहय। हम रुकि-रुकि साइकिलक पहियासँ कादो हटाबी आ कोनो तरहें साइकिलकेँ घीची। कोनो तरहें पर्वतक कातमे एकटा खोपड़ी -सन सरायमे पहुँचलहुँ। सोचने रही, एक कप चाह पीबि कऽ फेर आगाँ बढ़ब। मुदा ई स्थान तऽ हमरा लेखे पाँतरक गाछ भऽ गेल। अन्तमे निश्चय कयलहुँ जे राति एतहि गमाबी। एकर कच्चा मकानक छत पर एकटा कोठली रहैक। सरायक मालिक एक हाथमे लालटेन लेने आ दोसरा हाथेँ कीड़ा- मकोड़ाकेँ भगबैत, भीजल सीढ़ी पर देने हमरा ऊपर अनलक। कोठलीमे नान्हि टा जङला रहैक जाहिँस बजार आ मैदान दुनू दृश्य होइक। देबाल आ चार दुनू बीचक खाली जगह झरोखाक काज कऽ रहल छल। देबाल पर बाल गोपालक पोषणवाला पुरान कलेण्डर टाङल रहैक। इएह कलेण्डर कोठलीक शोभा छल। बालगोपालक पोषण कोनो बेबीफुडसँ भेल रहनि, तेँ ने ओ एतेक बलिष्ठ भऽ गल छलाह जे

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

आसानीसँ एकटा गेंडाकेँ नथने रहथि। सरायक मालिक अल्पभाषी रहय। किछुए शब्दमे ओ स्पष्ट कऽ देलक जे ई केबिन विशिष्ट थिक। जाहि गंभीरतासँ ओ ई सभ कहलक ताहिसँ हमरा कनेको अनसोहाँत नहि लगैत जँ ओ इहो कहैत जे निजाम अथवा आगा खाँ पर्यन्त एहिठाम राति बिताबऽ तखनहि आबि सकैत छथि जखन हुनका भाग्य संग देतनि। एहि विशिष्ट केबिनक किराया छल मात्र एक अठन्नी, पूरा एक दिन आ एक रातिक हेतु। लालटेन जँ भरि राति जरायब तँ पन्द्रह पाई अतिरिक्त । हम एक मग चाह पीलहुँ आ सरायक मालिककेँ विदा कयलहुँ। लालटेमो जल्दीए मिझा गेल, जाहिसँ एकटा गिरगिटकेँ बड़ निराशा भेलैक, कारण लालटेमक चारूकात औनाइत फतिंगा सभक लोभे ओ गिरगिट लालटेमक बहुत लग चल आयल रहय। हम कपड़ा बदललहुँ आ खाट पर पसरि गेलहुँ। पड़ले-पड़ल खिड़कीसँ बाहरक दृश्य देखऽ लगलहुँ। सौभाग्यसँ हमर ओढ़ना एहन छल जाहिपर बरखाक कोनो प्रभाव नहि। एखन बरखा तँ नहि भऽ रहल छल मुदा जाहि तरहक घटाटोप छल, बुझाइत छल जे एकबेर फेर बरखा होयत। सरायक बाहर ठाढ़ ओ खजूरक गाछ जेना रातुक अन्हारसँ डेराकऽ हमर खिड़कीक आओर लग अयबा लेल आतुर छल। नीचाँ सरायक मालिकक कोठली खुजल रहैक। ओहिसँ प्रकाशक एकटा रेखा सड़क पर पसरल रहैक। तखने हम देखलहुँ जे एकटा भुच्चड़ सन ग्रामीण युवक अपन कान्हपर मोटा लदने एकटा जनानीक संग ओहिठाम पहुँचल। ओकरा एकटा फूट कोठलीमे जगह देल जा रहल छैक। युवक आ युवती दुनू पानिसँ बोदरि भेल अछि। जहाँ ओ दुनू बरंडापर पएर रखने रहय कि हवाक ध्वनिसँ पूरा घाटी गूंजि उठल। मेघ जोर-जोरसँ बरिसऽ लागल। बिजलीक चमकमे दूरक पर्वत उड़ैत जकाँ बुझायल। हम खिड़की बन्द कऽ लेलहुँ। जौरसँ घोरल खाट मने उड़नखटोला भऽ जाए चाहैत छल। जेना-जेना हमरा निद्रा आबय लागल, हम परी-लोकमे बौआय लगलहुँ। हमरा समक्ष स्मृतिक अन्हार गुफासँ कतेक हेरायल भोतिआयल चेहरा आबय लागल। ओहि चेहरामे बौन आ राक्षसक चेहरा सेहो रहय, जकरा संगे हमरा खूब मोन लगैत रहय। हम ई नहि कहि सकैत छी जे हम कतेक दूर धरि पहुँचल रही। मुदा, जखन हम जगलहुँ तऽ हमरा लागल जेना हम एकटा राजकुमार भऽ गेल छलहुँ, एहन राजकुमार सन जे तिलिस्ममे सूतल राजकुमारीकेँ चोराकऽ जादूक द्वीपसँ घुरि रहल हो।

चारक नीचाँ एक नान्हि टा चिड़ै चहचहा रहल छल। लागल जेना ओ हमरा जगा रहल हो! हम खिड़की फोललहुँ। भोर भऽ गेल रहैक, मुदा अन्हार एखनहु रहबे करैक। बहुत शान्ति रहैक। मूसरधार वर्षा भेल रहैक। हवा सेहो गजब। फलस्वरूप गाछ -बिरिछ उखड़ि गेल रहैक आ ओकर डारि-पात एमहर - ओमहर पानिक नान्हि-नान्हि टा राशिमे छिड़ियायल रहैक। मुदा

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

ओहि जल-राशि सभमे क्षितिजक लालिमा सेहो झलकि रहल छलैक जाहिसँ सूर्योदयक आभास भऽ रहल छल।

चिड़ै तँ उड़ि गेल मुदा नीचामे जे गरमा-गरम बहस भऽ रहल छलैक ताहिसँ हमर ध्यान ओमहरे चल गेल। हम जङलाक आओर लग चल गेलहुँ। देखलहुँ जे सरायक मालिक ओहि युवकसँ लड़ि रहल अछि, जकरा ओ रातिमे टिकौने रहय। सराय बला साठि पाइ किराया मङत रहैक आ युवक चालिस पाइसँ अधिक देवक लेल तैयार नहि। हमरा सरायबलापर क्रोध भेल। हमरा नीकजकाँ मोन अछि जे रातिमे जगह देबाक काल चालिस पाइ किराया कहने रहैक।

हम नीचाँ उतरलहुँ। हमरा देखतहि सराय-मालिक चमकि उठल, आ बाजल " हे देखह, इएह आबि गेलाह एक भलमानुस। हिनका साइकिलो छनि। ई तोरा जकाँ गमार नहि छथि। आब इएह कहताह जे की उचित आ की अनुचित। तों आयल रहह दू आदमी आ जा रहल छह तीन आदमी। हमरा परतारिकऽ तेसर आदमीक किराया पचबय चाहैत छह। "

हमर चिन्ता जल्दीए दूर भऽ गेल। रातिमे जखन चारू दिस बिहाड़ि हड़कम्प मचौने छल, तखन सरायमे एकटा दोसरे घटना घटल। एहि दम्पतिकेँ एकटा पुत्ररत्न जन्म लेने छलैक, आ भोरे सराय मालिक एहि तेसर अप्रत्याशित प्राणिक किराया ठोकि देने रहैक।

हमरा रहितहुँ झगड़ा फरिछा नहि रहल छल। पिताकेँ पुत्र-प्राप्तिक गर्व रहैक। एहि कारणेँ ओ एकटा गाड़ीवानकेँ सेहो रोकि लेने रहय। गाड़ीवान आब चलक लेल अगुता रहल छलैक। हम एहि अवसरकेँ तकितहिँ रही जे कखन एहि झगड़ामे मध्यस्थ भऽ ठाढ़ भेल जाय, कि ता अनायासे ओ दुनू शान्त भऽ गेल। सभक आँखि मुँह निहारए चाहलहुँ। ता देखलहुँ जे भीतरसँ एकटा युवती अपन अमूल्य पोटरीकेँ छातीमे सटौने आबि रहलि अछि। छनभरि ओ तीक्ष्ण दृष्टिएँ दुनू लड़ऽबला दिस तकलक। ओकर मुँह आधा झापल रहैक, मुदा रहैक बड़ सुन्नर।

"चिल्हकोक किराया अहाँ दऽ दिऔक।" ओ अपन मरदकेँ कहलक। सराय बलाकेँ अन्दाज नहि रहैक जे ई झगड़ा एना फड़िछायत। युवतीक बातपर ओ हीं-हीं करैत दाँत निपोड़ि देलक आ विनम्रतासँ बाजल, "हँ-हँ , ठीक कहै छथि। चलह, नहि पूरा तँ आधो दऽ दएह। ओना जँ तों ई बात मानि जाह जे चिल्हकाक किराया लेबाक हमर हक जायज अछि तँ हम ताहूसँ संतोष कय लेब।"

"एकरा चिल्हकाक पूरा किराया दऽ दियौक।" गाड़ी दिस बढ़ैत युवती अपन

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

पतिकेँ फेर कहलक, " जनम लितहिँ हमर बेदरा ककरो कर्जदार किएक रहत ? की एकर कोनो प्रतिष्ठा नहि ?"

" हे लैह !" युवक सरायबलापर किरायाक पाइ फेकि देलक। सरायबला बिना कोनो उत्साहक ओकरा लपकि लेलक आ बिहाड़ि-पानिक गप हाँकऽ लागल।

ओ दम्पति आ ओ तेसर प्राणी सब गाड़ी लग पहुँचि गेल रहय। पर्वतपर मेघ जुटय लागल छल। ओना भिनसुरका मेघ ओहने होइछ जेहन बकरीक ढूसि- गरजत बेसी, बरिसत कम। संस्कृतमे एहने सन कोनो श्लोक हम पढ़ने रही। खैर, चलक लेल आब हमहूँ तैयारे रही। सरायबलाक मुँह कने लजायल - सन भऽ गेल रहैक। ओ दूर चल जाइत गाड़ीकेँ देखि रहल छल।

---

https://www.studiestoday.com